रा. ना. सुधाकर

**रा. ना. सुधाकर ( रामनारायण सुधाकर )**

**जन्म :** 2002 विक्रम सम्वत (ई. 1946)

**जन्म स्थान :** मल्हनी, कलैया, विरगंज (नेपाल)

**स्थायी ठेकाना :** विराटनगर-14, भगवती टोल, मोरङ

**शिक्षा :** आइ. ए. महेन्द्र मोरङ कलेज, विराटनगर-2028

**लेखन :** विक्रम सम्वत 2028 (1965 ई.)

**रचना :** कथा-संग्रह 'दीयरि' नेपाल विद्यापति मैथिली पाण्डुलिपि पुरस्कार 2065सँ सम्मानित। 'विकल्प' (अप्रकाशित)।

**कविता-संग्रह :** 'अच्छत' (अप्रकाशित), 'धरोहर' अप्रकाशित), 'प्रेमपत्र' (अप्रकाशित)

**गीत-संग्रह :** 'सयपत्री' (अप्रकाशित), 'कब-कब' (अप्रकाशित)

**गीत-गजल :** 'कागज के फूल' (गजल-संग्रह) अप्रकाशित, 'हीरा मोती' (हिन्दी) अप्रकाशित।

**सम्मान :** 'नेपाल विद्यापति मैथिली पाण्डुलिपि पुरस्कार' (2065), 'आठम अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन, विराटनगर' (2057), 'मैथिली विकास अभियान, विराटनगर' (2061), 'श्याम-कला मैथिली सेवा पुरस्कार' (2068), 'सामाजिक महिला उत्थान समूह, विराटनगर' (2065), 'सामाजिक विकास मन्त्रालय, विराटनगर' (2076)


शशि प्रकाशन

**शशि प्रकाशन**
गाँव-कालिकापुर, पो. लक्ष्मीनियाँ,
वाया-बलुआ बाजार,
जिला-सुपौल-854339 (बिहार)

मूल्य : 275 ( भा. रु. )
500 ( ने. रु. )

ISBN 978-93-92691-84-3


दीयरि

रा. ना. सुधाकर


शशि प्रकाशन


# दीयरि

( मैथिली कथा-संग्रह )

## रा. ना. सुधाकर

दीयरि

# दीयरि

(मैथिली कथा-संग्रह)

**रा. ना. सुधाकर**

शशि प्रकाशन

**ISBN : 978-93-92691-84-3**
**दीयरि**
© लेखक : रा. ना. सुधाकर

पहिल संस्करण : 2022
दोसर संस्करण (पेपरबैक) : 2025

**मूल्य : 275.00 ( भा. रु. )**
**500.00 ( ने. रु. )**

प्रकाशक
**शशि प्रकाशन**
गाँव-कालिकापुर, पोस्ट-लक्ष्मीनियाँ, भाया-बलुआ बाजार
जिला-सुपौल-854339 (बिहार)
फ़ोन : 9015323779 / 9818443451
ई-मेल : shashi.prakashan@gmail.com

आवरण सज्जा : दीपक दिनकर
टाइपसेटिंग : बुलबुल मिश्रा

मुद्रक : आर.के. आफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

DEEYARI (A Collection of Maithili Stories) by Ra Na Sudhakar
Published by Shashi Prakashan
Village-Kalikapur, Post-Lakshminia, Via-Balua Bazar, District-Supaul-854339 (Bihar)
**Price : ₹ 275.00**

# प्रकाशकीय

रा ना सुधाकर (रामनारायण सुधाकर) आख्यान साहित्यमे सुपरिचित आ सशक्त नाम रहितो सर्वथा उपेक्षित रहला। हुनक कथा मैथिली जगत लेल कोनो परिचयक मोहताज नहि अछि। हँ, हिनका मैथिली कथा-जगत सँ प्राय: दुनू दिस बिसरा देल गेल छल। 'मिथिला मिहिर' सँ ल' क' विभिन्न पत्र-पत्रिका आ ऑनलाइन मीडियामे कथा सब प्रकाशित होइत रहलनि। छोट-मोट चाकरी आ लेखनक बीच तारतम्य बनेबाक प्रयास मे अपन अभावग्रस्त जीवनक बावजूद निरन्तर लिखबाक क्रम चलैत रहलनि आ जीवपर्यंत पाण्डुलिपि सभ सहेज क' रखैत रहलाह। कथा, गीत, गजल आदि विधा मे लिखल हिनकर पाण्डुलिपि सभ अखन धरि प्रकाशनक प्रतीक्षा मे आकाश दिस ताकि रहल छै।

हिनक ई कथा-संग्रह 'दीयरि' नाम सँ नेपालक मिथलेश्वर मीडिया प्रा. लि. विराटनगर सँ 2022 ई.मे छपि चुकल छल, मुदा प्रचार-प्रसारक अभाव मे नजरि मे नहि आबि रहल छल। तेँ एकर प्रकाशनक जिम्मा लैत ई निश्चय कयल गेल जे एहि कथा-संग्रहक चर्चा-परिचर्चा नीक जकाँ होअय आ बेसी सँ बेसी पाठक धरि पहुँच बना सकय।

किएक तँ रा ना सुधाकर जी पछिला लगभग साठि वर्ष सँ लिखि रहल छथि आ एतेक पुरान कथाकार केँ मैथिली जगत कोना बिसरि सकैत अछि। हँ, रामनारायण सुधाकर जी हरदम लाइमलाइट सँ दूर रहलाह आ कोनो दरबारी आकि चाकरी नइँ कयलाह। तकर परिणाम आजीवन भोगय पड़लनि। आशा अछि एहि कथा-संग्रहक व्यापक पाठक जगत मे स्वागत कयल जाएत। आब ई संग्रह अपनेक हाथ मे अछि, बाकी निर्णय अहीं सब पर...।

# नेपालीय मैथिली कथा-साहित्यक अनमोल निधि

कथाकार रा. ना. सुधाकर नेपालीय मैथिली कथा-साहित्यक अनमोल आ अतुल्य निधि छथि। हिनक कथामे सुच्चा ग्राम्य मिथिलाक जे सोन्हगर सुगन्ध भेटैत अछि, गमैया जीवन-शैली आ मनस्तत्वक जेहन एक-एकटा घरैया घी सन सुच्चा मैथिल बिम्ब जे ई ठाढ़ करै छथि, हेराएल बिसरल जाइत जाहि खाँटि मैथिल परिदृश्यकेँ ई संजीवनी दै छथि तथा लोपोन्मुख होइत जाइत जेहन ठेठ गौंआ शब्द, वाक्य-विन्यास, लोकोक्ति आदि हिनक शैलीमे सहजेँ उच्छलित आ प्रवाहित होइत अछि से हिनक कथाकेँ एक गोट विस्मयकारी निजत्व तँ दैते अछि, पाठक मनकेँ एकटा ऐन्द्रिजालिक तिलस्ममे घेरि लैत अछि।

रा. ना. सुधाकर अथसँ इतिधरि सुच्चा, बेछप, नितान्त मौलिक आ कालजयी मैथिल कथाकार छथि, जिनकर विषयवस्तु आ शैलीमे मिथिलाक माटिमे अन्तर्निहित रुप, रस, गन्ध, स्पर्श, ध्वनि, प्रत्येक प्रतीक, बिम्ब आ सूक्ष्मांकनमे प्राण बनि धड़कैत अछि।

**—डा. राजेन्द्र बिमल**



# रा ना सुधाकरक कथा

रा ना सुधाकर आ हुनक कथा सँ हमर परिचय पैंतीस वर्ष पुरान अछि। 1990क दशकक आरंभिक वर्ष मे जखन हम मैथिलीक लेखक-समाज केँ चिन्है-जानैक शुरुआत कयने रही ताहि समय हुनका सँ पहिल भेंट भेल छल। पहिले भेंट मे ई हमरा बाकी लेखक सँ अलग लगलाह। जीवन मे तँ सहजहि, लेखन मे सेहो कने राजकमल चौधरी जेना ओ बेलाग रहलाह अछि। जेहने बेलाग तेहने सहज अनुराग सँ भरल आ आवरणहीन सेहो। लगातार संकट सभ सँ जुझैत। बिराटनगरक औद्योगिक क्षेत्र मे काज करयवला एक स्वाभिमानी श्रमजीवीक जीवन जीबैत ओ एक टा खाँटी लेखक छथि। कोनो लेखक सँ भेट होइते सभ दुख-तकलीफ बिसरि ओ साहित्य-चर्चाक रस मे तेना डूबि जाइत छथि जेना साहित्यक होल टाइमर। जोगबनी-बिराटनगरक ओहि बॉर्डर एरिया केँ ताहि समय सँ हम हुनके सँ जोड़ि क' देखैत रहल छी।

बॉर्डर पार करैत विराट नगरक जे रानी इलाका पड़ैत अछि, जे 1991-92 मे सरिपहुँ एक टा स्लम एरिया लगैत छल आ जत'क परिवेश मे तखन कूड़ा-करकटक अम्बार संग जल-जमावक चलते गंदगीक स्थायी साम्राज्य छल, रा ना सुधाकर ओतहि किरायाक एक टा छोटछिन कोठली मे सपरिवार रहैत छलाह। आइयो ओही एरिया मे छथि।

ओहि एरियाक परिचय हुनके शब्द मे जनबा लेल नब्बेक दशक मे लिखल हुनक कथा 'संधि'क एक टा उद्धरण देखल जाय, ''ई बॉर्डर एरिया छै। जतबे गहमागहमी ओतबे अशांत। प्रत्येक पल जीवन आ मृत्यु के चकाचौंध सँ आलोकित आ प्रताड़ित। बावन ठामक लोक... बावन तरहक बात-विचार। सभ्य आ असभ्य दुनू प्रकारक वातावरण। पटोर आ मारकीनक अद्‌भुत समावेश। एक दिस दारू, माउस, सुकठी... कोकाकोला, फेंटा आ काकटेलक चुस्की मे

डूबल भूखंड... दोसर दिस गोबर, गंगाजल आ तुलसीक सुगंध सँ सुवासित अंगना-घर। अही वातावरण मे सब तरहक लोक अपन-अपन घुरछी पिलौअलि खेल रहल अछि। बाप-दादा के डीह... नाम-प्रतिष्ठा केँ जोगबैत-बचबैत रोजी-रोटी वास्ते फिफिआइत लोकक हुजूम सँ भरल हमर टोल आ गाम। असभ्य बापक अनसोहाँत गारि सँ आतंकित बेटाक निसाँस हवा केँ आर दमघोंटू बनबैत।''

'संधि' कथाक ई उद्धरण ने मात्र ओहि वातावरणक परिचय दैत अछि, पारिवारिक संबंध मे आबि रहल दरारि आ व्यवस्थाक चक्की मे पिसाइत साधारण लोकक व्यथा-कथा सेहो कहैत अछि जकर भाग्य दुनू कातक सरकार लिखैत रहल अछि। दुनू देशक सरकारक बीच समझौता 'रिन्यू' होइ मे प्राय: समय के पता नहि छै, मुदा दूध बेच'वला मोहित सत्ताइस दिन धरि चलल झगड़ा-दनक बाद एक राति अपना सम्बन्धक 'रिन्यू' क' लैत अछि।

'संधि'क संदेश उपर सँ सहज मुदा भीतर सँ जटिल अछि तँ घरमुँहा'क स्वप्न असम्भव-सन आकाश केँ छुबैत अछि। 'घरमुँहा' दाम्पत्यक कथा लागितहुँ जटिल सम्बन्ध आ स्वप्नक कथा थिक।

ताकब तँ रा ना सुधाकरक अलग-अलग कथा मे एक खास तरहक जुड़ाव सेहो भेटि जायत। उदाहरण लेल 'संधि'क पाँति ''असभ्य बापक अनसोहाँत गारि'' वीभत्स रूप मे हुनक महत्त्वपूर्ण कथा 'दियरि' मे सेहो आभासी रूप मे ताकि सकैत छी जत' नव पीढ़ीक युवक-युवती (बेटा-पुतौहु)क सोचक उदात्त-भाव अपने स्वार्थ मे लिप्त बूढ़ बाप केँ अनसोहाँत लगै छै। बूढ़ा पुतौहु मादे अफवाह-अकंड कथा धरि कहैत कनेको लजाइत नहि अछि। विचारशील बेटा-पुतौहु सम्बन्धक दुतरफा मारि खाइत नदीक दियरि जकाँ परेशान अछि।

'दियरि'क बाप जेना पुतौहु सुशीला आ बेटा रमाकांत लेल आतताइ बनल रहैत अछि तहिना 'छागर'क पुतौहु रूपा आ बेटा चंदन लेल ओकर माय कसाइ जकाँ अछि। माय-बाप आकि सासु-ससुरक ई रूप मैथिली कथा मे नव भने नहि हो, मुदा ई तेवर नहि मात्र नव अछि बल्कि एक मे साधु आ गंजेड़ी तँ दोसर मे ननदि गीता आ चेराक मारि सँ जे रूपक बनै अछि ओ पुरान पोखरिक पानि सड़ि गेल हैबाक संकेत दैत अछि। रा ना सुधाकर सम्बन्ध मे अबैत खटास आ दरारि केँ देखबैत अपन समकालीन सँ कने बेसी साहसिक लगैत छथि। 'अगुरबान' आ 'रंगीन पर्दा' सन फिनिशिंग तँ नहि, मुदा तेहने सन साहस आ तेवर एत' भेटि जायत; सतमाय संग दैहिक सम्बन्ध केँ देखबै लेल आकि पिता



केर अमानवीय छवि परसै लेल साहस चाही। से साहस 'झखरल फूलक गाछ' आकि 'दियरि' मे भेटि जायत। कथाकार रा ना सुधाकर भविष्यक गजब पारखी छथि। 'संधि' कथा सँ आलेखक आरंभ मे उद्धरित अंश मे ''गोबर, गंगाजल आ तुलसीक सुगंध'' पर ध्यान दी। भारतीय परिवेश मादे ई जे बात ओ कहैत छथि, से मोन राखी जे नब्बेक दशकक मे लिखल गेल अछि। सुधाकर जीक कथा मे जत'-तत' एहन अद्‌भुत विवरण खूब अबैत अछि आ कतेको रूपक सेहो निर्मित होइ अछि आ से सब हुनक कथा केँ महत्त्वपूर्ण बनबैत अछि। सम्बन्धक ई तानी-भरनी 'अस्तित्व' शीर्षक कथा मे सेहो पीढ़ीगत संघर्ष संग स्त्री-पुरुष बीच मे बढ़िया जकाँ उघार होइत अछि जत' सब अपन-अपन स्वार्थ मे लिप्त अछि। बाप अपना स्वार्थे आन्हर, सभ भाइ अपना-अपना दिस घिचैत अपन-अपन कनियाँ सँ मंत्रणा करै मे लागल। अभाव मे नारकीय होइत जीवनक ई विडंबना भीषण रूप मे एत' परिलक्षित होइत अछि जकरा पाछाँ अजस्र करुणा ताकल जा सकैत अछि।

अर्थतंत्र मे पिसाइत संघर्षशील लोकक प्रतिनिधि जे 'कर्जखोर' कथा मे भेटै अछि ओ 'अस्तित्व', 'दियरि' आकि 'घरमुँहा'क नायकक भीतर सेहो ठाढ़ अछि आ से सुधाकर जीक जीवन सँ दूरक पात्र आ स्थिति नहि अछि। ओ स्वयं गाम सँ बेदखलीक दंश भोग कयने छथि आ प्राय: ओहने स्थिति मे विराट नगर रहै लेल बाध्य भेल रहथि। कम उमेर मे हुनक माय दिवंगत भेलनि। पिता सँ नेहक छाहरि तँ नदारद, गामो छुटि गेलनि—जीवन मे निरंतर संघर्ष आ मात्र संघर्ष रहलनि। परिस्थिति बहुत कुछ बदलि दैत अछि जेना 'थकुचल माउसक बुटी' मे ललन संग भेल अछि। ललन जनमे सँ तेहन नहि छल, कादो-कुम्ही सँ भरल पोखरि मे ठाम-ठाम सँ खायल-खोधल ओकर बापक जे लहास भेटल छल ताहि सँ उपजल दुख आ आक्रोश ओकर जीवन सँ बाँसुरी छीनि लेलक।

'झखरल फूलक गाछ' आ 'संधि' बहुत मार्मिक कथा अछि, बहुत गोटे लेल भने ई वीभत्स हो, मुदा हम एकरा भीतर जीवनक ओहि रंग केँ देखि रहल छी व्यवस्था जकरा बदरंग करबा पर सदति लागल रहैत अछि। शरीर आ मनक बीच पुल बड़ पैघ होइत अछि आ से कथा लेल महत्त्वपूर्ण सेहो।

'खूँटी पर टांगल ब्रा' शीर्षक अहाँ केँ वीभत्स लागि सकै अछि, मुदा बाजारक वीभत्स आचरण तेना नहि! बाजारक आक्रामकता आ नृशंसता केँ अद्‌भुत ढंग सँ एहि कथा मे दर्शाओल गेल अछि। 1984 मे प्रकाशित ई कथा बहुत कम शब्द मे बाजारक नृशंस रूप केँ ताहि समय देखबैत अछि जहिया

मैथिली साहित्य मे बाजार पर चर्चा प्राय: नहिए जकाँ छल। एक टा चोटी लेल दोकान गेल बुचिया केँ दोकानदार गंगबा कोना अपन फाँस मे फँसबैत अछि आ पहिने सँ बरजोरी देल ब्रा के दाम सूद सहित वसूल कर' लेल ओ कोन तिकड़म करैत अछि, तकर कारण देख' चाहब तँ एकरा पाछू विश्व-बैंक सँ ल'क' अमरीका धरि ठाढ़ भेटत।

बदलैत गाम आ संबंधक बीच खत्म होइत ऊष्मा हिनक कथा 'प्रदक्षिणा' मे बढ़िया जकाँ परिलक्षित भेल अछि। बारह वर्ष पर गाम घुरल कथा नायक बचनू अपन विमाता सँ भेंट कयलाक बाद गाम घुम' बहराइत अछि। पूरा गाम मे केओ हुनक संगतुरिया नहि भेटै छनि आ जे भेटै छनि तकरा भीतरक सोता सुखा गेल अछि। सूखल पोखरि, भथल इनार, लापता भालसरि गाछ जकाँ गाम अपरिचित-अनभुआर भ' गेल अछि। ई बदलाव गाम संग शहरो मे आयलि आ दुनू ठाम मानवीय संबंधक ऊष्मा घटल। एहि टूटन आ परिवर्तन केँ रा ना सुधाकर बड़ कम शब्द मे बढ़िया जकाँ उजागर कयलनि अछि। हिनक 'सुनगैत करेज', 'उपहार', 'परिवेश', 'छाहरि तरक काँट', 'रामपरी' आदि कथा एहि बातक उदाहरण थिक जे ई कथाकार जीवनक विविध रंग-रूपक निरूपण मे महारत हासिल कयने छथि। अंतिम कथा 'कोनो एक दिन' जे कोविड महामारीक दौरान लिखल गेल, ई सब सँ नव कथा अछि आ एहि तरहें ई संग्रह हिनक लगभग चालीस-पैंतालीस वर्षक लेखनक दस्तावेज सेहो थिक।

चार पर सँ चेरा घीचि स्त्री केँ ओध-बाध करब, पयर पर सँ छुछुन्नरिक छुछुआति भागब सन रूपक मात्र नहि, हिनक कथाक अनेक दृश्य कम शब्द मे पैघ चित्र बनबैत अछि। उदाहरणक लेल 'घरमुँहा'क दू टा अंश : ''एक कात मे किछु सैंतल, किछु छिरियाएल जारनि...चुल्हि पर राखल भात-दालिक हंडी... चिनमार पर दूधक टोपिया...लोहिया मे झाँपल अल्लु-अरिकोंचक तरकारी आ ओकर गंध...बेंच पर राखल थारी-कटोरी आ गिलासक गेंट...सिलौट पर पीसल-थोपल टमाटर, मिरचाइ आ धन्नीक चटनी आ सब सँ उपर जरैत दीप जेना शमशानक एकान्त मे ककरो चिता सँ लहरि उठि रहल हो।'' आ ''छुछुन्नरि, मूस आ झिंगूर अपन-अपन अहारक खोज मे सौंसे घर बुलि-टहलि रहल छलै, कखनो ऐंठ थारी पर त' कखनो आटाक झोरा दिस... कखनो दालिक पथिया मे।'' ई अप्रतीम चित्र रा ना सुधाकरक कथाक ताकत थिक।

**—गौरीनाथ**



# हम एतबे कहब

कथा-सूत्र एहिठाम सँ शुरू करैत छी। एक टा 10-11 बर्खक बालक स्कूलक टिफिन मे क्लास सँ बाहर होइत अछि। कत' जायत... साँय-साँय हवा आ टह-टह रौदक अलावा किछु नै छलै। अंगना ओ जा नहि सकैत अछि। माय ओकरा भुखले स्कूल पठा देने छलि, ''आइ तोहर खाना बन्न?...''

मन मे भूख आ आत्मा मे आक्रोश... आक्रोश छलै भूख पर... माय पर... समाज आ समय पर। एहन अवस्था मे ओकरा किछु नहि सुझि रहल छलै। सामने पोखरिक भीड़ पर स्थापित शिव-मंदिर आ मंदिरक उपर चमकैत कलश पर ओकर नजरि पड़लै। ओ मंदिर मे ढुकल सामने महादेवक शिवलिंग पर चमकैत चौअनी देखि ओकर भूख आरो छटपटा उठलै आ ओ हपसि क' मुट्ठी मे चौअन्नी दबौलक आ भागल दोकान दिस। मिश्री-नारियल-छोहारा आ बिड़ी बस... ओ चौअन्नी चटि गेल छल।

आक्रोश... हाहाकार... आ अतृप्त क्षुधा ओ एहि नेनमतियाक पूँजी छलै। पश्चात जीवन मे वैह पूँजी ओकर परिश्रम आ पाथेय बनल। समय गतिमान रहितै छैक। ओ बालक सेहो किशोरावस्था मे पहुँचल छल। ई प्रसंग 49-50 बर्ख पूर्वक थिक।

लेखनक प्रारंभ भ' गेल छल। शुरुआती दौर हिन्दी के छलै। बाद मे मैथिली... ओही समय मे हमरा मैथिली हिन्दी साहित्यक एक टा विशाल वट-वृक्षक सान्निध्य-समीपताक छाह भेटल छल—परम आदरणीय गुरुवर श्री प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन जीक।

'अपन मातृभाषा मे लिखू' हुनक आदेश जे आइ धरिक यात्रा अनवरत होइत रहल अछि। आइ समाज कतबो आ केहनो लाल पटोर पहीर लेत ताहि

सँ ओकर अष्टावक्र सन रूप आ सड़ल शरीरक दुर्गंध किन्नहुँ नहि जा सकैए। कुंठा...संत्रास... अविश्वासक भावना सँ ग्रसित समाज मे घून लागल काया हमर प्रेरणाक भागिरथी रहल सदैव।

प्रस्तुत कथा-संग्रह 'दीयरि' के प्राय: प्रत्येक कथा-नेमिकानन मिथिला-मिहिर, आंजुर, अर्चना आदि त्रैमासिक, साप्ताहिक, मासिक सब मे प्रकाशित भ' चुकल अछि। मूल्यांकनक हेतु आमंत्रित छी।

'नेपाल विद्यापति पुरस्कार कोष' आन-आन भाषा समेत मैथिली साहित्य के देल जायबला नेपालक बहुत प्रतिष्ठित आ गरिमामय पुरस्कार अछि। प्रस्तुत कथा संग्रह 'दीयरि' नेपाल विद्यापति मैथिली पाण्डुलिपि पुरस्कार-2061 सँ सम्मानित एवं पुरस्कृत भ' चुकल अछि।

एहि कथा-संग्रहक प्रकाशन धरिक यात्रा मे परोक्ष रूपेँ मित्र लोकनिक सहयोग, शुभेच्छा आ सदाशयता रहल अछि। हुनका लोकनि केँ हम आभार आ धन्यवाद दैत हुनका सभक नाम आदर आ श्रद्धापूर्वक लेबनि जाहि मे सर्व श्री रमेश रंजन, श्री धीरेन्द्र प्रेमर्षि, श्री कर्ण संजय, श्री नवीन कर्ण, श्री रेवती रमण जी आ श्री अजित आजादक नाम उल्लेख्य करब अपन कर्तव्य बुझैत छी।

अग्रज भाइ प्रो. राजेन्द्र विमल जी तथा अनुज गौरीनाथ जी केँ कोटि-कोटि धन्यवाद, जे अपन अमूल्य समय मे सँ किछु समय निकालि एहि कथा-संग्रह 'दीयरि'क भूमिका लिखबाक हेतु तैयार भेलाह, हुनका प्रति हम आभार व्यक्त करैत छियनि।

आ अन्त मे, श्री नवीन कर्ण जी, श्री प्रकाश प्रेमी जी आ श्री कर्ण संजय जीक प्रति हम सदैव ऋणी रहब। बिना हुनका सभक प्रयास आ परिश्रम सँ ई कथा-संग्रह आकार नहि ल' पबैत, कथमपि आकार नहिएँ ल' पबैत। जय नेपाल! जय मैथिली!!

**—रा. ना. सुधाकर**

२०७८/४/२४



# अनुक्रम


| | |
|---|---|
| प्रकाशकीय | V |
| नेपालीय मैथिली कथा-साहित्यक अनमोल निधि/ **डा. राजेन्द्र बिमल** | VI |
| रा ना सुधाकरक कथा / **गौरीनाथ** | VII |
| हम एतबे कहब / **रा ना सुधाकर** | XI |
| प्रदक्षिणा | 15 |
| दीयरि | 24 |
| चोलिया मे चोर बसे गोरी | 35 |
| खुट्टी पर टाँगल ब्रा | 40 |
| चान असोथकित अछि | 44 |
| झखड़ल फूलक गाछ | 48 |
| घरमुहाँ | 52 |
| उपहार | 57 |
| चिल्होड़ि उड़ि रहल अछि | 62 |
| नुक्का चोरी | 67 |
| कर्जखोर | 71 |
| रामपरी | 75 |
| अस्तित्व | 80 |
| सुनगैत करेज | 85 |
| थकुचल मासुक बुट्टी | 90 |
| खण्डित लोक | 95 |
| छागर | 100 |
| परिवेश | 106 |
| छाहरि तर'क काँट | 111 |
| संधि | 116 |
| स्वप्न-भंग | 120 |
| कोनो एक दिन | 122 |

# प्रदक्षिणा

अयबाक नेयार करैत–करैत अन्ततः आइ ओ बारह बर्खक बाद पुबरिया सिमान सँ गाम मे पैसल छल। गामक रक्त सँ कटि जयबाक विवशता, माटिक मोह...संगतुरिया सभक बीच बिताओल जीवन...जीवनक आनन्द...पहिलुका संग साथ... मुठ्ठीक बाउल जकाँ खहरि जाइ छै आ विवशता... मजबुरी... छटपटाहटि, ओकरा ओतबे गछाड़ने जाइत छै...तोड़ैत जाइत छै...आ ओकरा मुँह पर अखन वएह उसिनल सुथनी भाव–भंगिमा चतरल छलैए... सड़कक दुनू कात पसरल राहड़ि...बदाम आ खेसारी सागक हरियरी, सरिसो फूलक पिरौंछ सुगंधि...आरि–धूर पर चरैत पठरु आ घास छिलैत घसबाहिनीक खनखनाइत चूड़ीक स्वर... किछु नै...ओकर ध्यान कतौ आर चकभाउर दैत छलै...अपना भनसा घरक कारी कोरो दुनू हाथ उपर उठल एकटा ममतामयीक पैर आ पैर तर मे किकिआइत पाँच–छौ सालक एकटा नेना...

''तरुआ खेता...कोढ़िए!...किदन जुड़े माँड़ ने आ ताड़ी ले मारि...जखन खायत त' कानि–ए क'। ओ ममतामयी बड़बड़ाइत नेना के हुमचि दै आ फेर बड़ आवेश सँ देखैत...नेना के कानिते छोड़ि बारी सँ तिलकोरक पात आनि क' तड़ि दै छै आ छिपली मे दालि–भात आ कुड़कुड़ तरुआ...ओह ओकरा दृष्टि मे दूर...बहुत दूर धरि असराहा खेतक पसार...काँट कुश...शनि आ भटसिमड़ि गाछक पतिआनी...उजरा गुम्मा फूलक छोट–छोट गाछ...बीच–बीचमे उठल माटिक थम्ह...थम्ह पर ठूठ तुलसीक गाछ...ओंघरायल फुटल कोहा...छिटल कौड़ी आ छिड़िआयल अधजरुआ जारनि...उड़िआइत फाटल उत्तरी...समग्र सारा...अही सारा मे सँ कोनो सारा ओइ ममतामयीक सेहो छल...जकरा ओ अपने हाथे अइ गोनसारि मे बहुत पहिने जरा क' छाउर केने

छल...आ ओही दिन ओकर नेनमतिया सेहो मरि गेल छलै...अहीठाम ओ माय ले घर बना देने छलैक...ओ हाथ जोड़ि माय के प्रणाम केलक। फेर कनेक ठमकल आ एकटा नमहर निसास छोड़ैत ओ आगू बढ़ि गेल...

मलहटोली आबि गेल छल...मुदा अइ टोल सँ गुजरैत काल ओकरा अपन बयसक किओ नै उभरलै...कत' गेल हेतै...अबधा, जीबछा, गेनमा...ओकर संगतुरिया? मने गाम छोड़ि गेल की? हेतै कोनो विवशता। ग्राम-देवता सलहेसक गहबर...ब्रह्मथान पितौझियाक गाछ...रजोखरि पोखरिक माँछ आ मखान... पासिखानाक ताड़ी... ओकरा सबके किछु ने बान्हि सकल...ई वैह मलहटोली अछि जत' पहिने बच्चा मे ककरो आँगन अबैत छल त' ओकरा सनेश भेटै छलै...एक जेबी मखान...थोड़बेक काँकोड़...किछुएक डोका...आब तँ मखानो शहरी भ' गेल ब्यापारक बस्तु! सामने एक-दू हेंज छौंड़ा-छौंड़ी...दू अढ़ाइ बर्षक हेतै...सतघाड़ा खेला रहल छै...फूदकि रहल छै...बगड़ा-बगड़ी जकाँ...उन्मुक्त...स्वच्छंद...बेधड़क...ओ बढ़तै...संज्ञान हेतै आ फूर्र सँ उड़ि जेतै...पंजाब...आसाम नेपाल जा बसतै...गामके त्यागि देतै आ स्वयं के कुही करैत रहत।

आ हठात् ओकरा मोन पड़ि गेलै बुधनी माय। बुधनी त' कहिया मरि गेल रहै लेकिन गामक लोक सब ओकरा बुधनिएँ माय कहैत रहलै...वएह बुधनी माय बरमहल ओकरा ओइठाम आबि जाइत छलैक। ओकरा पहुँचैत माँतर ओ ओकरा भाय-बहिनक सभक नजरि ओकर लटकल खोइँछा पर छहलि जाइ...खन ओकर मुँहे दिस...की बजतै ओ...की निकालतै खोइँछा सँ...से जखन ओ चँगेरी मे लाइ-मुरही आ कच उझिल दै त बच्चा सभक मुँह चान जकाँ बिहुँसि उठय। ओ जहिया अबैत छल त' किछु ने किछु नेनहि... कहियो कुसियारक टोनी कहियो बथुएक साग...कहियो बड़हर... ''बौआ सब खेथिन'' कहैत जेना ओकर आत्माक मोह-ममता जुड़ा जाइत छलै...संतोखक आभा ओकरा प्रफुलित क' दैत छलै...आब त शायद...

ओ बेचना डोमक दुरा सँ आगू बढ़ल...सड़क सँ दक्षिण कात पसरल आम, सिसो, महुआ आ तिलबाक विशाल-सघन गाछक दोसर छोड़ नजरि नहि अबैत छैक...लोक एकरा भजकोठिया आ मियाँगाछी नाम सँ जनैत छल...दिनो मे एतेक भेआओन? अही गाछी मे लोक अपना आँखि सँ भूत घुमैत देखने छल... अन्हरिया राति मे कतेको बेर भुक-भुक कनी काल शान्त फेर भुकभुकी...



''दाई गे! ई कथी भुकभुकाइ छै?''

''चुप्प! अलच्छा, राति क' लोक नाम लैए एकर, ध' लेतौ'' फेर कनी जोर सँ कान मे घुनघुना उठैत छल, ''बौआ ई राकस छै राकस... इ राति क' ककरो ध' लैत छै ओकरा सँ पाथर...ढेप... ईटा... भरि राति उघबै छै आ भोर मे ने ओ ढेप...पाथर भेटतौ ने ओ राकस आ जकरा पकड़ने रहैत छै से खून बोकरि क' मरि जाइ छै... बाप रे!''

ओ बात मोन पड़िते अइ एकान्तमे अखन ओकरा हँसी लागि गेलै...आब ने ओ देवी आ ने ओ कराह। सामने धात्रीक गाछ देखिते मोन हुलसि उठल। मोन भेलै जे आगू बढ़िक' एकटा धात्री (आँबला) उठा मुँहमे ध' ली...मुदा बयस बडा निर्मोही साबित भेलै...पहिलुका बात किछु आर छलै। मोन लुसफुसा क' रहि गेलै। धात्रिक गाछ सँ सटल खरिहानमे अखन दौनी कए रहल छथि गजाधर बाबू...मेहक चारु कात मुँहमे जाबी लगाओल बड़द सब धीर-धीरे घुमैत पाछु-पाछु नांगरि उमेठैत गजाधर बाबू...ई ओकरा गामक एहन ब्यक्ति छलाह जे ककरो कहियो सुख-चैन सँ नहि रह' देलखिन...ओकरा अखनो मोन छै ओ बात सब...ताहि दिन ओइ गाम मे महिना दू महिना पर भाला-बर्छी...लाठी आ शहथ ल' क' सड़क पर फाँड़ बान्हि...ताल ठोकैत लोक सब उतरि जाइत छल। एके फरीकक दस गोटे इम्हर...दस गोटे उम्हर आ 'मार सार के...काटि दे...खाली खचरपनी करैत रहत...' अही तरहक शब्द सँ सड़क आ लोक करेज प्रकम्पित आ दलमलित भ' जाइत छलै। फेकलक भाला...उठौलकै शहथ। आ से कथिले? गोबर...छाउर आ डबराक पानि पर अपन-अपन हक साबित करैले' आ सनकौनहार इएह गजाधर मिसर। आ अंगना मे बौहु-बेटी ढील-लीख बिछैत आ मिसरजी महींसक पीठ पर गबदी लधने बैसल बहु-बेटी के निहारैत रहब अपन शान बुझैत छलाह। वएह गजा बाबू आइ शान्त आ असोथकित बड़दक पाछू घूमि रहलाह अछि। ओइ समय छौंड़ा सब हिनका चैयाँ-खटासुँ... साँप की...कहाँ नाम रखने छल।

आब ओ अपना दलान पर पहुँच गेल। टुटल कोड़ो...लटकल चाड़... अँगनइ मे दूभि मोथा चतरल। दलानक ई दुर्दशा देखि ओकरा ग्लानि भेलै। लगलै ई दलानक नहि वरन ओकर अपन दुर्दशा छै। अँगनाइ मे खेलाइत छौंड़ा सभक हेंज ओकरा दिस तकलक आ पुन: खेल मे रमि गेल छौंड़ा सब ओकरा नहि चिन्हलकै...ओ सेहो ककरो नहि चिन्हलक। ठीके बारह बर्षक बाद स्थिति

मे पूर्ण बदलाव अबैत छैक। युग बदलि जाइत छै। अपन अनचिन्हार आ अनचिन्हार मित्र बनि जाइत छैक।

ओ कोनटा सँ आगु बढ़ल। सामने दुरखा मे माय बैसल छलखिन...पैर छूबि प्रणाम केलकै त' माय अकचका गेलि, ''के?'' शायद क्षणांश मे माय ओकरा नहि चिन्हलखिन। मुदा फेर जेना सम्पूर्ण चेतना केन्द्रित भ' गेलै, ''बचनू छी?''

'हँ' आ बचनु के हँ कहैत माँतर ओकर छातीक कुहेश फाटि गेलै...नोरक तोर बेगवती भ' उठल आ बचनुओक अन्तर जेना कचकि गेलै...आखिर पोसने त' ओकरा वएह छलि...ओकर गूँह...मूत ओकर नेकरम सब त' इएह केने छलि। आ आइ बारह बर्षक बाद ई ओकर मुँह देख रहल अछि... अपन मुँह देखा रहल अछि। मोह, ममता आ दुलार छलकब स्वभाविके छलै...

हाथ पैर धो बचनु भगवतीके प्रणाम क'क' घुरल त माय छिपली मे चारिटा बगिया आ भुजल खेसारी साग नेने ठाढ़ि छलि ओ खाय लागल त' माय आगू मे बैस क' कुशल-क्षेम पुछ' लगलखिन।

''बच्चा सब नीके ना अछि ने? आब त' जेठका समर्थ भ' गेल हेतै? नहि? देखबा ले' मोन बडा उत्फाल करैए...मुदा तोंहुँ हमरा सबके बिसरिए गेल'...बापक श्राद्ध क'क' गेल'त' फेर घुमि क' तकबो करित' त' बुझितहुँ...सन्तोख होइत। ठीके छै...सतमाय छिअ ने...सतमाय त' ओहिना बदनाम होइत अछि''

नै, से बात नै छै। असल मे ततेक ने झंझटि भ' जाइ छै जे...'' बचनु रुमाल सँ हाथ पोछैत बाजल ''चल ने अइ बेर हमरा संगे...धियो-पुता सँ भेंट-घाँट भ' जेतौ आ बराहक्षेत्र सोहि घुमि अबिहे... मुदा तोहर प्राण त' अइठाम...अही डीह पर केंचुल मारि क' बैसल अइ सम्पतिके ओगरबाही मे प्राण छुटतौ'' बचनु किछु कठोर गप्प बाजि गेल...ओना ई बात बिल्कुल खाँटी छै जे कोइ नै चाहैत अछि जे दियादी काँट दियादक सम्पति मे अभरै? आ से जखन बचनु गमि लेलक त' अपन असला-तसला समेटि जा बैसल नेपाल...पैत्रिक सम्पति...अपन डीह अपन गाम सँ मोह तोड़बा ले' ओ विवश भ' गेल छल...ओ उठल त' माय पुछलकै, ''अखन रहब ने?...''

''नहि छुट्टी नै अछि। तैयो एक-दू दिन रहबै...अच्छा हम कनी चौक सँ अबै छी।''



''बेस''...आ माय भानस कर लगली।

बचनु हुलसैत-बिहुँसैत चौक दिस बिदा भेल...आ चौक पर आयल त चकविदोर लागि गेलै...चकुआ गेल। चौकर पर विशाल पाकरिक बुढ़वा सिराह गाछ ओहिना ठाढ़ छलै...मुदा पिहकारीक ओ खनखनाइत स्वर ओकरा नै भेटलै जकरा ताक' ओ आयल अछि। कहाँ छै कैलाशपतिक लटगेनाक दोकान...महावीर साहुअक चाय-बिस्कुटक गुप्त स्टल?...ओकर मोने छै...महावीर साहु दोकान गामक लोक सँ नुकाक', चारिटा छौंड़ा सभक खेखनियाँ पर अपना आँगन मे खोलने छल...साँझ भिनसर खोलैत छल आ बचनू, रामा, ननु आ मोहन अबैत छल...चाय बिस्कुट उड़बैत छल...मौज-मस्ती करैत जाइत छल। ताइ दिन गाम मे एकोटा चाय, पानक दोकान रहबो नै करै। ओ चारु चोरी-चोरी अबै छल अइ द्वारे जे गामक लोक ओकरा सबके बनियाँक पानि चलबै वास्ते कतौ जाति सँ ने बारि दैक। भैरव साहुक घर त' अछिए मुदा कहाँ सुनाइए भैरब साहुके खल मे सन्निपात...सितावडी आ जमाइन कुटबाक ठन-ठन के स्वर? ओकरा मोने छैक...चौक पर संगतुरिया सभक जमल ताशक चारि-चारिटा बैसकी...दस बजे दिन सँ शुरु भेल मुनहारि साँझ धरि जमल रहैत छलैक आ बीच मे जितनहारक पिहकारी पर पिहकारी आ ओइ शोर सब मे भैरव साहु अपना खलक' ठन-ठन स्वर सँ तालमेल मिलबैत से गुंजायमान चौक आइ बचनू ताकि रहल अछि। ताश खेलाइत काल कोइ कहि दै जे ''विधावा एना ताश नहि पटकु त'...''

''हइ! विधे कहै की सोझे बाबा...इ विधावा?'' आ छौंड़ा सब ठिठिया उठैत छल। आ अइ चौक के दियाबाती देखेनिहार रुपन साहु!...रुपन बुढ़वा...लाइ-मुहरी...झिल्ली, कचरी उनसल पलपल अल्हुआ बेचनिहार रुपन। समान सँ भरल चंगेरी-सूप आ कोनियाँ पर भिनभिनाइत माँछी के मैल चिक्कट तौनी सँ हौंकैत... टाँग पसारने... टाँग मोड़ैत दीप ल क' उठय आ, ''आबो जाइ जाएब घर की राति भरि अहीठाम रर-धुम्मस करैत रहब...माय-बाप अहुरिया कटैत छैन जे बेटा कोना सम्हरत-आ सुधरत आ बेटा गबैए मल्हार...'' मुदा फेर दोसर दिन वैह रामा-वैह खटोला। आइ रुपन साहु बिना चौक छुछुआन आ कटाह लगै छै ओकरा।

अही चौक पर बच्चा गुरुजी सेहो कहियो काठक बक्सा पर पान-बीड़ी सलाइ आ मोटर ब्राण्ड सिगरेट बेचैत छलाह... अही चौक पर सँ करेला बस

दरभंगा सँ शायद रहिका धरि धूरा-गरदा उड़ियबैत आ पों-पों करैत अइ पाकड़ि गाछ तर सँ ससरैत छल त' एलौ करैला...एलौ करैला बस चिचिआइत बसक पाछाँ-पाछाँ किछु दूर धरि बच्चा सब दौड़ैत हकमैत...सब बचनूक आँखि सँ बिला गेल...समय बहुत आगू ससरि गेलैए। स्टेट ट्रांसपोर्टक बस ओइ करैला सब के चिबा क' ढहनाइत...चौकके दलकबैत सट सँ भागि जाइत अछि। पसिंजर भेलै तैयो धन नै भेलै तैयो धन सन। सरकारी बस थोड़बे करैला बस जकाँ प्रत्येक गामक प्रत्येक चौक पर रुकबाक अथवा पैसंजर चढ़यबाक-उतरबाक ठेका नेने अछि। ई लदनी घोड़ी थोड़बे अछि?

आब त अइ चौकपर सड़कक काते-कात पतिआनी लागल काठक गुमती... कोनो पर चाय-नाश्ता, कोनो पर पान-सिगरेट...कोनो पर पिसुआ भांगक गोली छिपली मे गेंटल आ बगल मे गिलास आ जल सँ भरल 'मग' -चौअन्नी गोली खाक' नशामे चूर छौड़ाक हेंज बौआइत...सिगरेट धुकैत...लाज-लेहाजके त्यागि ठिठिआइत...छौंड़ी सबके ठिकिअबैत...तखने कोनो गुमटी सँ कैसेटक आवाज ओकरा सभक उदण्डता मे सहभागी भेलै—'मुझसे शादी करोगी' अइ छौंड़ा सबके समदाउन, सोहर बटवनी, पराती के मर्म के आभास कत' सँ बुझयतै? आब गाममे शायद नीक-बेजाय कहनाहर नहि रहल आब... ?

ओ चौक सँ नीचा उतरि गेल, कठही गाड़ीक बनल लिख पछाड़ि टोल होइत कान-पोखरिके भीड़ सँ जाइत-जाइत कोनो दोसर गाम दिस चल गेल छै। अही लिखक कातमे ठाढ़-दरबज्जाक अँगनइ मे बैसल सदानन्द ठाकुर... सदानन्द ठाकुर अँगनइ मे बैस भंगघोटना सँ भाँग घोटैत-घोटैत दुपहर सँ साँझ धरि मे तेहन लसिगर बना दैत छलखिन जे मसुरी भरि काफी...राति भरि त्रिभुवन मस्ती... जोथकी (ज्योतषी) ककाक बमकब-गरजब आ भांग नहि खाउ...सबके उपदेशे दैत फिरथिन...हिनका मोने सब जोथकी बनि जाय...'' फेर भांगक तरंग मे 'कखन हरब दुख मोर' कहैत मंदिर दिस बिदा...आ मंदिर पहुँच क' बाल्टीए... बाल्टी पोखरि सँ पानि आनि बाबा के स्नान करोनाइ...नचारी गौनाइ...ओ एहि सभक गवाह अछि। मुदा ओकरा अखन ने ओ दरबज्जा भेटलै ने ओ इनार...ढनमनायल दरबज्जा...इनारक कोनो चेन्ह कहिया भथ्थन भेलै...कि जाने? अही दलानक आगू मे छौंकी नेने...चटिया सबके दमसबैत...पहाड़ा रट-रटबैत रुप नारायण पंडित...हुनका नजरि मे छौंड़ा सब नढ़ेल भ' गेल छल...

अखन अकबकाइत आगू बढ़ल। नव-नव घर सभक बीच ओकरा



बोतलाक घर चिन्हबामे नहि आबि रहल छै...गूड़क चासनी के साँप जकाँ ऐंठ क' लाठी मे लपेट...कन्हा पर गुदरिया झोरा लटकौने आ हाथक पितरिया घंटी टुन-टनबैत 'लाल छड़ी करकरिया बोले, धिया-पुता के मनुआँ डोले' गबैत जखन गाममे घुमैत छल त' कतेको धिया-पुता मारि खाइत छल त' ककरो हाथ मे लालछड़ी करकरिया आबि जाइत छलै। अखनो ओइ बोतल यादबक घंटीक टुन-टुन मधुर-स्वर ओकरा कान मे कतौ घुरिया रहल छलैक...ओ डेग आगू बढ़ौलक...ई किरबा के घर छै...कोनटा लग सँ हुलकी देलकै...सामने उखड़ि मे बरुआरा-बाली धान कुटि रहल छलि...मस्ती मे गुनगुनाइत...सहटि जाइ...सएह नीक। कहीं देखलकै त' जबर्दस्ती बैसा क' कुशल-क्षेम पुछतै आ फेर नीक जकाँ होलिया देतै...दिओर-भाउजक संबंध रखने अछि। बरुआरा बाली गामक एहन मस्त-लोक अछि जकरा मोन मे सब दिन फागुनक मस्ती छिड़िआयले रहैत छै...ताबत तीरपित मड़र ओकर भैंसुर बाध सँ धानक बोझ आनि क' पटकि देलकै आ बरुआरा बाली अपन घोघ कनी आगू घुसका लेलकि...समाठ चलिते रहल ठक...ठक...ओ निसास छोड़लक...ओकरा मोन पड़ि गेलै बाबाजी। बाबाजी एकरे सभक फरीक छल...अपने त सब दिन आसामे-बंगाल कमौनी केलक आ अधबैसु बहु आ जुआन बेटी एत, हवेली मे...रामसुन्दर दासक हवेली मे बन्न रहलै...लोक त ताइ दिन इहो कह' लागल जे बाबाजीक जुआन बेटी हवेली मे चारु भाइएक सेवा मे सदति मोस्तैद रहै छै...खैर, जे होइ...

दियाबाती भ' गेल रहै। ओ बरुआरा वाली दिस तकैत...मुस्काइत बढ़ल आ निर्भय लालक पोखरिके डबरा बनल हकन्न कनैत देखि ओकरा केनादन लगलै ओ ओकरा मोन पड़ि गेलै अपना गामक जुड़शीतल पाबनि...ओइ दिन गामक छौंड़ा सब अपना-अपना टोलक इनार-पोखरि मे भरल लीढ़-सेवार...केराक थम्ह...कुरा कचरा...ओइ कादो माटिक खेलमे उत्साह-पूर्वक साफ करैत छल...उड़ाहि दैत छल आ एकटा नवजीवन-नव-प्राण...नव श्रोत सँ इनार-पोखरि गम-गमा उठैत छल आ बर्ख धरि खिलखिलाइत रहैत छल...आब त जेना ककरो जुड़शीतल मे कादो-माटि खेलयबाक ने उत्साह छै आ ने ओ उमंग...आब ककरा फुरसति छै जे लोटा ल' क' बाध दिस जायत आ पोखरिमे एक डूब देत? जे अनुशासित आ उन्मुक्त वातावरण के ओ भोगि चुकल छल से ओकरा कतौ ने भेटलै...गाम मे आब बैगपाइपर...एरिस्टोक्रैट...बोतल मे

जिन्न सभक चलन खुलेआम भ' गेल छलै।

ओ गुमसुम डबराक काते-कात होइत चमरटोली मे आबि गेल छल। सामने सुभान मियाँक घर देखि संतोख भेलै। अपने त' सुभान मियाँ रहल नहि...धिया-पुता कमाइत खाइत हेतै...ओकरे घर सँ सटल जीवछ दासक घर छैन्ह। एकदम सफैयत...चिक्कन, चुनमुन घर-आँगन। दुध्धा बैष्णव...कबीर-पंथी... कोनो पंडितक संस्कार सँ कम संस्कारी लोक नहि-दरबज्जा पर बैसल सदति हरमुनियाँ पर भजन गबैत, ''कबिरा खड़ा बजार मे लिये लुकाठी हाथ'' आब त' सब उठि गेल...कहाँ कतौ सुनबा मे अबै छै ओकरा हरमुनियाँ पर कबीर, तुलसी आ सूरक भजनावली?

अखन खिन्न मोन...उदास दृष्टि गुअरटोली नघैत भालसरी (मौलश्री) गाछक नीचा सँ होइत मंदिरबला पोखरि पर आबि क' थकमका गेल ओ, सामने पोखरि लीढ़ सेवाँर सँ भरल शान्त छल...इएह कदम्बक गाछ बला घाट मौगियाही घाट अछि जत' पहिने गामक बेटी-पुतोहु...बुढ़-जुआन सब नहाइ वास्ते अबैत छलि...आमक पात चिबबैत...बतिआइत...फदका करैत...चिकनी माटि सँ माथ मिड़ैत स्नान करैत जाइत छलि आ ओकरा सभक बात मे पोखरिक पानि घंटो हुहँकारी भरैत थर-थराइत रहैत छल। मंजन-पेस्ट ओकरा सब के इएह आमक पात आ गमकौआ साबुन छलै घाटक लसगर-चिक्कन माटि...वचनू मंदिरक आगू सड़क पर थकमकाइत सोचैए... साँच्चे समय कते बदलि गेलैए।

ओकरा ठीक सामने अखन घुमि गेलै आम, सिसो आ पितौझियाक बिशाल बाग मे स्थित ब्रह्मस्थान...उँचका डीह। कहाँदन दादा के पिताजी कहैत रहथिन जे बड़का भुकम्प मे लोक अही डीह पर आबिक' प्राण रक्षा केने छल...इएह डीह अछि जत' गुमस्ता के फार भरिक सोन हाथ लागल छल...आ इएह डीह अछि जत' बचनू अपन दाइ के जरा क' छाउर केने छल। अही डीहक माटि मे अपन बहिन के गाड़ि, कोदारिक बेंट फेकने छल। ओ रोमांचित भ' गेल।

आ दरबज्जा दिस बढ़ल। दरबज्जा पूरा अन्हार मे डूबल छल। सामने अपना दरबज्जा पर गुमस्ता दुनू भाइ घूर त'र बैसल छलाह आ एकटा भुकभुकिया लालटेम भूत जकाँ दलान मे डोलि रहल छल...ओकरा लगलै जेना गुमस्ता सेहो हारि गेल छलाह कि हार मानि गेल छलाह...कहि नहि? अही गुमस्ता के मादे जिनका गाम मे सब लाल-भाइ कहैत छैन। कतेक बेर बचनू के दाइ



माय कहने छल जे बाउ! ई बड़ परमार्थी लोक...साँझ मे एक बेर क' सभक दरबज्जा घुमैत छलाह आ हाल-समाचार पुछैत छलाह...जँ ककरो ओइठाम अभ्यागत के देखै छलखिन तँ अपना ओइठाम सँ बजाप्ते चाउर-दालि, दूध अदौरी पठा दैत छलखिन जे घरबैया कथू ले बेथुत आ बेभरम ने भ' जाइ। क्यो बेथुत आ बेभरम भइये गेल त' हुनका मरजादे की? आ एहन परमार्थी के एकटा सन्तान नहि देलखिन उगलाहा आ आइ वएह लाल भाइ घूरक आगू असोथकित भेल बैसल छथि। धुँआइत घूरक सोझा मे ओकरा गामक लाल भाइ! तावत माय आबिक' लालटेम द' गेल रहथिन।

गामक चारु कात घुमलाक बादो ओकरा अपन मित्रमंडली सँ भेंट नहि भेलै। नै ननु झा...ने रामा...ने मोहन...बचनू के ककरो कोनो पता ठेकान नै भेटलै...हँ, एतबा जे ओ लोकक मुँहे जखन सुनलक जे रामा आब फटफटिआ पर अफिस करैत अछि आ ओहीठाम कोनो बिधवा सँ सेहो लसरघंटी लगौने अछि आ ननु झा अपन पुस्तैनी धंधा पुरहिताए क' रहल अछि...ओना एकरा चारुक एकता अलगे पहिचान छलै ताइ दिन। जाधरि चारु गाम मे रहल चाहे ताशक चौपाड़ि होइ अथवा ककरो खेत सँ कुसियार चोरयबाक नेयार कि कोनो मेला-ठेला मे धक्कम-धुक्का करबाक सेहन्ता...चार मित्र संगे संग सबठाम।

ओ दरबज्जा पर अनमनाहे घुमि रहल छल...ताबत खैनी चुनबैत ननु झा के देखि बचनू हुलसि उठल, ''की हौ ननु झा...आ...आ...''

''कहिया एलैं बाउ!'' चुटकी बढ़ा देलक ननु झा मुदा ओकर चेहरा आ फफरीक मोट आवरण देखि ओकरा लगलै जेना सब किछु हेरा गेलै। बचनू के बुझयलै जे जेना ओकर गाम कतौ छुटि गेलै...ओकर मित्र कतौ भुतिया गेलै...पोखरि परक उस...गाविस आ भालसरीक फूल कतौ छिरिया गेलैए आ... आ स्वयं कोनो बियावान मे शनि गाछक टकुआ तान काँट जकाँ ठमकि गेल अछि।

# दीयरि

''हमरा कोनो एहने दबाइ दिअ' जे...'' कछमछाइत सुशीलाक बोली फुटल, ''आब नहि सहास होइए... बुझाइए क्यो रहि रहि क' भाला भेंसैत हो... भालाक नोंक पर प्राण खिंचने जाइए... बाबा हो ...'' आ सुशीला भरि पाँज क' चौकीक पासि पकड़ि लेलनि।

डाक्टर साहेब मुस्कुरयलाह, अनुभवयुक्त व्यावसायिक मुस्कान आला लगबैत हमरा सँ साकांक्ष भेलाह, ''नहि... किछु नहि हेतैन, हम दबाइ लिख दए छी... नियमित चलबाक चाही दबाइ...'' आ पुनः वएह मुस्की, ''एतेक कमजोरी हालति मे बच्चा! खैर, दूध आ माउस जतेक ई खा सकैथ।'' आ डाक्टर एकटा सूइ घोंपि क' उठि गेलाह।

''रमाकांत... हौ रामकांत...'' दलान पर सँ बुढ़ाक कर्कश स्वर सुनैत छी। हमरे सोर पारलनि अछि ।

''की ?'' हम हाथ मे डाक्टरक देल प्रेस्क्रीप्शन नेनहि बहरयलहुँ, ''की कहैत छी...''

''हौ, लहानवाली के मधुश्रावणी हेतैन... किछु पाइ-कौड़ी दितहक... हमरो कपड़ा सब रिती-रिती भेल अछि।''

रेकर्डक बेर-बेर गाओल गीत आ बुढ़ाक तखुनका स्वर मे हमरा कोनो अन्तर नहि बुझायल, मुदा हमरा लागल जे ओही रेकर्डक सूइ जकाँ हमरो अन्तर मे किछु थरथरा गेल हो। हम कने काल धरि गुम्म... आ मुँह बौने रहि गेलहुँ... हाथ मे प्रेस्क्रीप्शन झुलैत रहि गेल... दुध आ माउस... आ दबाइ, मधुश्रावणी ... सुशीला आ बुढ़ा... एका-एक सब किछु जेना ओझरा गेलै।



''पाइ त' अखन नै अछि...'' हम साहस क' क' प्रेस्क्रीप्शन आगू बढ़ा देलियनि, ''दबाइ सँ बेसी जरुरी त' पाबनि-तिहार...''

बुढ़ा माने एहने शब्दक प्रतीक्षा मे छलाह। छड़ीक ठूंठ सँ प्रेस्क्रीप्शन हमरा दिस साहि देलनि, ''तोरा विचार सँ दुनियाँ नहि चलतैक बौआ। पारिवारिक भरमा-मरजाद, प्राण-प्रतिष्ठा रहैत के छोड़ैत अछि? लोक तोरा मोने पाबनि-तिहार, विधि-व्यवहार सब छोड़ि दिओ...''

''से त' हम नहि कहैत छी...'' क्षुब्ध होइत हम कहलियैन, ''मुदा मधुश्रावणी सँ बेसी सुशीलाक बिमारी छैक कि नहि?''

''जो... जो... जे मोन मे फुराइत छौ, करै जो।'' बुढ़ा बड़बड़ाइत छथि। ''कहुना एकरो सभक निर्वाह-प्रतिपाल त' हम करबे करब।'' ओ एकटा दीर्घ उसाँस लैत छड़ीक मूठ कसिक' पकड़ि लैत छथि।

''हम कोन धरनिएँ की क' रहल छी से कोइ ने बुझिनिहार...''

''सब बुझैत छी'' बुढ़ाक बात भोथ आरा जकाँ हमरा अस्तित्व के चिरबाक प्रयास मे अनवरत चलि रहल अछि, ''हमर कोनो बात तोरा बुते पार नहि लगतौ आ सासुरक कौओ कहतौ त' पैर जँत' लगबें हम की आन्हर छी?''

हम की जबाब दिऔन पुरैन पात पर पानि नहि विलमै छैक हम आँगन अबैत छी। सुशीला दरबज्जे दिस टकटकी लगौने छलीह... तुरछल मुँह... पथरायल आँखि।

''इ लिअ, डाक्टरक पुर्जी आ रुपैया... आरती सँ दबाइ मंगा लेब।''

''कतेक बेर कहलौं जे छोड़ू ई दबाइ आ पथ्य... अनेरे परेशानी। हमरा किछु नहि भ' रहल अछि।'' सुशीला कतेक संतोष सँ बाजि गेलीह। नारी आ धरती... दुनूक जन्मे माने त्याग, संतोष आ उत्सर्गक लेल मात्र भेल अछि।

''शशि! ककरा की भ' रहल छै से हम बुझैत छी। ओ सब अपन हठधर्म नहि छोड़ताह त' अहीं बाजू हमहीं अपन प्राण रहैत अहाँके छटपटाइत कोना देखैत रहू? खैर, दबाइ मंगबा लेब... हम अफिस जा रहल छी।''

''आरती, चारि पाँच टा चाह दरबज्जा पर पठा दिअ'...'' कोनटा लग सँ बुढ़ाक स्वर हम दुनू गोटे सुनैत छी मुदा बिना कोनो ध्यान देने हम बुढ़ाक पाँजर सँ सहिठक' बाहर जाइत छी। बुढ़ा उत्तरक प्रतीक्षा मे ओहिठाम ठाढ़ रहैत छथि।

सुशीला बहरयलीह, ''आरती अखन नहि छैन... लाल चाय पठा दियैन ?... दूधवाली अखन धरि नहि अयलैए...''

सुशीलाके उन्टा आँचर ओढ़ने देखि क' बुढ़ाके खौंत फूकि दैत छै। ओ बमछैत दरबज्जा पर अबैत छथि, ''हिरोइन... आइ काल्हिक लोक अपना के हिरोइन बुझैत अछि। ह! ह!! एको रत्ती विचार नै ? के ससुर, के भैंसुर ? सब उठा क' ताख पर राखि देलक इ...'' दू चारि आदमी जे बैसल छल ओइ मे सँ एक आदमी हाथ मे चिलम थमने अछि, ''की भेल मालिक ? बलू किए बिगड़ल छी।'' आ उत्तरक कोनो प्रतीक्षा बिना कैने ओ गाँजा मे कसिक' एक सोंट मारैत अछि।

''हएत कथी ?... चायले' कह गेलियै त' सत्तरहटा बहन्ना दूध नहि अछि... त' आरती नहि अछि... त' लाल चाय... चुड़ैल। हद भ' गेल हमरो सँ झूठे...''

''आइ काल्हिक लोक।'' दोसर टीप मारलक, ''च्च... च्च... की करबै... दोकाने सँ मंगाउ ने... गाँजा पर सँ मीठ चाह... निशा तेज हेतैक।''

''हँ... हँ... जो लाग'...''

''की रौ जनका, पानि अबैक ?'' पचटकिया निकालि क' बुढ़ा बढ़ोलनि, ''जल्दी अबिहें... मोन आँट क' देलक।''

''मालिक ! एकटा बात कहू ?'' विशना पुछैत अछि, ''ई छोटका मालिक सब दिन साँझ मे कथीक शीशी बोतल लबै छथिन ?''

''कथी अनैत छथिन ?'' बुढ़ा ओकरा समझौलखिन, ''बिमारी छैक... तों नहि बुझबहि... बिमारियो लाथे सुख त' करैत अछि... दूध माउस त' उड़ै छैक...''

''हँ, आ अहाँके चायले' दूध नहि रहैत छैक...'' विशना मूड़ी हिलबैत अछि।

अइ बीच मे तीन-चारिटा बाबाजी सेहो चिलम देखि क' ओइठाम बैस गेल। चाय-पान भेलाक बाद किशना, विशना, जनका गेल त' बुढ़ा दरबज्जे पर सँ हाक देलखिन, ''आरती, चारि आदमी के फाजिल खाना बनतैक।''

हुकुम ! आदेश !! सुनिक' सुशीला अकबका गेली। घर मे भुजल भाँग नहि आ बुढ़ाक फरामइस। कोन उपाय करत आब। ई जनी-जाति तकर कोनो



विचार भेलनि बुढ़ा केँ!

साँझ भ' गेल छलैक। सुशीला लालटेन आनि कए कोठरी मे राखि देलखिन आरती पान आनय गेल छथि।

''अहाँ दुनू भाइ के समाज कोना बकसि देने अछि से हमरा बड़ छगुन्ता लगैए...'' प्रोफेसर साहेब कहलखिन त' एके बेर हम, हमर पिसिऔत जेठ भैया आ सुशीला तीनू गोटे बिहुँसि दैत छी। सुशीला हाथक चाय प्रसन्नता मे छलकि जाइत अछि। समाजक संविधान अनुसार हमर पत्नी आ भाइ साहेबक सम्बन्ध भावो आ भैंसुरक अछि। मुदा जखन प्रोफेसर साहेब भैया केँ पैर छूबि क' सुशीलाके प्रणाम करैत... दुनू गोटे के नि:संकोच गप्प-सप्प करैत देखै छथि त' हुनका जिज्ञासा आ जिज्ञासा सँ बढ़ि क' आश्चर्य होइत छैन जे भावो-भैंसूर मे ई सब कोना सम्भव छैक ? आ समाजे कोना अइ सम्बन्ध के स्वीकार केने अछि ? आइयो हुनकर वएह जिज्ञासा लक्ष्य क' क' हम कहलियैन, ''समाज बकसने अछि ? हे यौ समाजक बस चलैक त' ओ साँस-साँस पर पहरा बैसा देत आ सबसँ मुख्य बात त' ई जे व्यक्तिगत स्वतंत्रता होयबाक चाही।''

''बिल्कुल होयबाक चाही।'' प्रोफेसर साहेब उत्साह देखोलनि, ''आब त' ओ जमाना कहाँ छैक जे चन्द्रमुखी पर चौबीस घंटा घोघक पहरा... पर-पुरुष सँ संभाषणक मनाही... आ छहर देवारी मे बन्न क' क' रखबाक प्रवृति... हम सब सहैत रहब से सर्वथा असम्भव। भावो-भैंसूर लोक कहैत छैक जे छुआ जाइत अछि... परस्पर दूरे रहबाक चाही... अहाँ सब त' नहि छुयलहुँ ?'' भैया चुपचाप मुस्कुराइत रहलाह।

''हे यौ... मुदा झूठे भावो-भैंसूर...'' सुशीलाक चेहरा ताम्रवर्ण भ' गेल, ''आ हम पुछैत छी भावो-भैंसूरक की अर्थ ? ओइ सँ बढ़ियाँ भाय-बहिन नहि ?''

''आब त'... एहिठामक बात लिअ'... एत' कोनो पर्दा-तर्दा नहि अछि'' भैया मुँह खोललनि, ''सुशीला बहिन हमरा सँ बजै छथि... हम हुनका सँ बजै छी... कतेकसुविधाजनकस्थिति अछि...''

चाय समाप्त भ' गेल छलैक। सुशीला पनदान मे पान-सुपारी आनि क' आगु मे रखलनि, ''भैया, पान लिअ... लाल बहिन आ पप्पू के काल्हि पठा देबै।''

''अच्छा...'' आ तीनू आदमी आँगन सँ बहार भ' गेलहुँ।

राति मे खाय बैसलहुँ... तखने निर्मल आ बाबूजीक आवाज कान पड़ैत अछि। जेना हमरे सुनबैले' ओ सब बाजि रहल छलाह—

''राम! राम!! भ्रष्ट भ' गेल ई सब...'' बुढ़ा कहैत छथिन, ''इ किरदानी... ई करतूत?... भैंसूर-भावो बजतै?... छिया... छिया... नाक कटबैत गेल।''

''भौजी, सुमन भैया सँ बजै छथि?'' निर्मल आश्चर्य सँ बफारि कटलक, ''बाप रे! हमरा नै विश्वास होइए।''

''हौ परसि क' खुयबो केलखिन आ तों बजैले' मरैत छ।''

''बाबू यौ, हमरा त' भौजीक बिमारियो बहन्ने बुझाइत अछि... केहन सुन्नर हँसैत-बजैत छथिन।''

''इ बहन्ना नहि बनाओत... घेओना नहि पसारत त' नीक-नुकूत खेनाइ... घुमनाइ... सिनेमा... कोना हेतै?''

''स्थिर सँ बाजु बाबू। भैया सेहो किछु कहथिन से नहि?''

''हौ, एकटा मौगीले' एतेक खर्च... एतेक आहि-अलमा... झुठे बेमारीक बहाना... आ बेमारियो सँ त' मरै... कहुना पिण्ड छुटैत। दोसर बियाह क दितियै... दामो-दहेज भेटैत... मगर ओइ गदहा के मगज मे हमर बात घुसतै?... गर्दनि मे ढोल बन्हने नाचि रहल अछि।

सुशीला हमरा देख रहल छथि... हम सुशीला के देख रहल छी। हुनका आँखि मे नोर छलछला उठल। हम ओइ नोर मे नारीक विवशता देखैत रहलहुँ... बड़ी कालक चुप्पीके तोड़ैत हम एतबे बाजि सकलहुँ, ''अहाँ निश्चिन्त रहू।''

''अहाँ निश्चिन्त रहू...'' सुशीला हमर बात दोहरयलनि, ''हम पुछैत छी अइ घर सँ कोन मोह बाँकी रहि गेल अछि? हे माय, सतमाय छथि... भाय सब बेमात्र अछि... मुदा बापकेँ त' अपन बेटा छियनि... कनेको मात्सर्य होइत छैन बुढ़ा के ई सब बजैत? आइ फेर गीत शुरु अछि। सब दिन गारि फज्जति सुनैत बैसल रहू। अहाँ के की? सुन' पड़ैत अछि हमरा...''

''अच्छा काल्हि दबाइ त' नहि अनौलियैक?'' हम अखुनका प्रसंग टारि देब' चाहैत छी।

''नहि।''

''लाउ रुपैया हम नेने अबैत छी।''



''रुपैया त' खर्च भ' गेलै ...''

''खर्च भ' गेलै? कथी मे? हमर आँखि लाल टेस भ' जाइत अछि, ''अहाँ के कहियो बुद्धि हएत? कथी मे खर्च भेल?''

''काल्हि तीन-चारिटा बाबाजी आयल छलैक आ बुढ़ा कहलखिन जे सब अहीठाम भोजन करतै... हम की करितहुँ? घर मे चाउरेटा छल। आर समान ओही रुपया के आयल।''

''ओ...'' हमर मुँह खुजल रहि जाइत अछि। बुझाइत अछि जेना कोइ हमरा कण्ठ धरि कादो मे गारि देने अछि। हम फेर पुछलियैन, ''त' आइ कथिले' सड़कक कात मे घोल फच्चका भ' रहल छैक?''

''हेतैक कथी? काल्हि जे भैया आ प्रोफेसर साहेब एहिठाम जलपान केलखिन ओहीले' बताह भेल छथि। दोकान पर सँ की कहाँ बाजि क' एलखिन-ए आ अहूठाम करीब घंटा भरीसँ एकेटा बात घोसने छथि जे ओ दुनू कि ओकर सतौत छलैक?''

''बड़ बजैत छी चुपू।'' हम सुशीलाकेँ डंटैत छी। ओ दुनू माने हमर पिसिऔत-बच्चन आ फूलबाबू। हम चुप-चाप एकटा निर्णय लैत छी। जे जँ आब कोनो बात उठत त' निश्चय घर छोड़ि देब।

''आरती कहाँ छथि?'' आरती माने हमर छोट सारि।

''किएक?''

''आरती' बेकारे अनलियैक बेचारी के एहि घर मे ओकर कोन कसूर छैक? जखन-तखन सब ओकरा लुलुआ लैत छथिन।''

''आरती सूतल अछि।''

''कतेक बेर सोचैत छी, सब दिनक कच-कच सँ कात भ' जाइ...''

''अहाँ सोचैत रहू... सब दिन चिन्ता करैत रहू... गलैत रहू... कि हेतै? अपन देहो कहियो देखैत छी कि?...''

''अहाँ नहि बुझबै। आइ हम घर छोड़ि दिअ' त' लोकक पहिल आँगूर अहीं पर पड़तै... तखन हमरा पर...'' हम सुशीला के परतारैत छी, ''चिकरब... गरजब सभक अर्थ हम बुझैत छियैक - पाइ कमाक' सब दिऔन त' कोइ किछु नहि बाजत...''

''कतबो कमा' क' देबैन तैयो यश नहि भेट' बला अछि।''

जमघट सड़क परसँ आबिक दरबज्जा पर लागल छलैक आ बुढ़ा किसना के कहैत छलखिन, ''रौ, ई अपना संगी-साथी के नोंति-तोंति क' मांउस-माछ खुआलौक, ठीक छैक... कमाइत अछि त' उड़ालौक। लेकिन ओ दुनू की ओकर सतौत रहैक??''

किशना चुप्प...

''हौ की कहब', तरकारी मे नून रहत त' मसाला नहि... मसाला रहत त' सिझल नहि। कतेक सहब। तोहीं बाजै, ई गदहा... गदहा जे अछि (गदहा सम्बोधन हमराले') ओकरा कोनो लाज-विचार नहि। भावो-भैंसूर। ओकरा कोना देखल भेलै? हम नीक-अधलाह नहि बाजू? नहि कहियौ?''

किशना चुप्प... हम आँगन सँ निकलि क' दरबज्जाक आगू नीम गाछ तर आबि क' ठाढ़ भ' जाइत छी... चुपचाप।

ओ हमरा देखि क' आरो बमैछ उठैत छथि, ''हौ हम परदेश छी। अपने सँ खाना नै बनायब... से पार लागत? ई (हम) सदिखन अदर-बदर लिखैत रहल। परिवार साथे रखता ... हूँ... एना एकबाही।''

हमरा भीतर किछु लेस देलक। हम आगू बढ़लहुँ, ''भावो-भैंसूर। भावो जँ गंगाजी मे डुबैत रहतै त' कि भैंसूर देखैत रहतै बक जकाँ, कि ओकरा बचयबाक प्रयास मे ओहो गंगाजी मे कूदि जेतै? से सुशीला बजबे करै छैक त' कोन अनर्थ भ' गेलै कि बम फाटि गेलै?''

''चुप्प... तों की बजबे'...'' बुढ़ा फेर बमकै छथि, ''निर्लज्जा... हमरा सँ नहि बाज... लाज होइते ने छैन... भावो-भैंसूर बजतै?''

''अहाँ हमर बात त' सुनू...''

''आइ-काल्हि के छौड़ा। की सुनू बात... हमर केश पाकि गेल... दाँत झरि गेल...''

''केश पाकि गेल... दाँत टुटि गेल... तैयो अझुका नव-दृष्टिकोण सँ अनभिज्ञ छी। जमाना कत' आबि गेल।''

''देख बेसी भचर-भचर नहि करै। जाबे हम जीबैत छी ताधरि...'' बुढ़ा हँफैत छथि, ''ताधरि हमरे कानून एहि घर मे चलत।''

''भले कानून कटाह होइ..., नहि?''

''मालिक चुप रहू आब।'' किशना टपकल, ''आकाश फाटि जाइत छैक त' दर्जीक बापो बूते सियल पार लगतै?' आब चुप रहू...''

''हम कतेक बेर बाजल होयब जे अहाँके कोनो तरहक तकलीफ हो त' अहाँ हमरा कहू... हम सकभरि पूर्ति करबाक कोशिश करब। से नहि त' ओकरा कहलहुँ... ओकरा सुनोलहुँ...''

''हँ रौ, हम एक हजार आदमी के कहबै'' बुढ़ा गरजै छथि, ''कहबै नहि?... तोहर सभक जे व्यवहार छौ से जरुर कहबै।''

''डिगडिगिया पिटबा दिऔ। मुदा ओहिमे हमरा सनबाक कोशिश नै करै जाउ...'' कहिक' हम चोट्टहि हारल-टुटल घुमि जाइत छी। घर मे सुशीला एकटा लिफाफ हाथ मे रखने शायद हमरे प्रतीक्षा मे बैसल छथि। आगु मे लालटेनक ज्योति थर-थरा रहल छैक। हम हुनका हाथ सँ लिफाफ ल' लैत छी। गाम सँ चिठ्ठी आयल अछि।

''भैया,

कुशल अछि। कुशल चाहै छी। हमर परीक्षा 15 अगस्त सँ शुरु होयत। किछु रुपया हो त' पठा देब। घर मे नुआँ-बस्त्र नहि छैक... आदि... आदि...'' मोन ओहिना लोहछल छल। चिठ्ठी पढ़ि क चित्त आरो फाटि गेल। जोड़बाक उपक्रम मे कोइ नहि, मुदा ताड़ै लेल सब तत्पर।

हमरा मोन पड़ैत अछि ओ साँझ। केहन करिछौंह साँझ रहैक ओ। ओही साँझ जलखै करय काल हमरा आ बाउ मे भेल गप्पक धार मे हम आइयो भसिया जाइत छी...।

''भैया, हमरा एकटा पैंटक कपड़ा खरीद दिअ'...''

''बाउ! अखन हमरा पार नहि लागत। बिमारी सँ हम तंग भेल छी... फेर अहुठामक खर्च अछि... सब तरहक खर्च... कहाँ सँ पाइ बाँचत...'' हम स्थिति स्पष्ट केलहुँ।

''भौजी त' गामे रहितथि त' नीक। सब मिलजुलि क' दुखो कटैत अछि त' सन्तोख रहैत छैक।''

''हँ सएह कहब त' हमरो अछि। सब कोय अहीठाम रहै जो। ई कोन बात भेल जे हम एहिठाम छी... नांगरि ओहिठाम अछि... की माने? आ ओइ नांगरि के जोड़ै बास्ते हम लस्सा बनू... नहीं?''

''भैया, अहाँ नहि देखैत छियैक... ककरो देह पर मांउस नहि छैक...

गुदड़ी लटकौने माय-बहिन... बच्चा सब हेहरु... एहना हालति मे अहाँक कोनो धर्म नहि?''

''धर्म... कर्त्तव्य... सब जिम्मेदारी हमरे... सब कसूर हमरे... अहुठाम खर्च होइत छैक से कोइ ने बुझिनिहार... तइ पर सँ बाबूजीक चिकरब-गरजब। तों कहै छे, एक दिन माछ खेलौं... ओइले' शोर होइ? एहिठाम सँ बुढ़ा गाम चिठ्ठी लिखने रहथिन जे सब दिन माछे-मांउस ई सब उड़बैत अछि... हमरा तामस नहि हएत?... तोहीं कहै पथ्य-परहेज नै होइ?''

बाउ हमर समग्र परिस्थितिकेँ नकारैत बाजल, ''अहाँ परोक्ष मे छी... अहाँ नहि देखैत छियैक। हमहुँ आँगन सँ पड़ा जाइत छी... मुदा कतेक काल धरि? फेर आब' पड़ैत अछि। फेर वएह सब देखय पड़ैत अछि—ओकर सभक सुक्खल मुँह... मिलमिलाइत आँखि... बच्चा सभक कोन कसूर छैक भैया? कोन पापक फल भोगैत अछि ओ... समय पर भोजन नहि आँग पर बस्त्र नहि... जरुरति पर कागज नहि... पेंसिल नहि। किएक? ओइ बच्चा सबले' कनियो मोह नहि? भैया कनियो सहाराक हाथ बढ़ोनइ अहाँक धर्म नहि?''

''मोह अछि। जे पार लगैत अछि 25-50 से पठाइयो रहल छी। तखन की हमरे कयला सँ सब हेतै?''

''हँ, आब हमरे-अहाँके कयला सँ सब हेतै। बाबूजी त' आब बूढ भेलथि।''

''हूँ बुढ़ा भेलथि। बूढ़ भेलथि त' बूढ़ जकाँ रहता कि... ई कोन आदति? किछु भेल त' सौंसे बिया बाँटि अयलहुँ... एहि दोकान बला के कहलहुँ... ओइ रिक्साबला के कहलहुँ... हमर बेटा-पुतोहु त' सब दिन सिनेमा देखैत छथि... पाइ छैन... किएक ने देखताह? हम सब दिन सिनेमे देखैत छी? एकोरत्ती सहयोगक भावना ककरो छैक घर मे...?''

''दस आदमीक आगु मे एकटा भौजी के एतेक महत्त्व अहाँके नहि देबाक चाही।'' बाउ बाजि त' गेल मुदा आब ओकरा अपन बातक अर्थ बुझयलै। ओ कने थकमका गेल।

''मतलब हम सुशीलाकेँ छोड़ि दिऔन?''

''हँ जरुरति पड़ला पर राम सेहो सीताकेँ त्यागि देने छलाह। जकरा दस लोक सँ नहि पटलैक से...''



हम आवेशित भ' जाइत छी, ''एकर माने सुशीला मे एडजेस्टिंग केपासिटी नहि छैक कि? हम त' स्पष्ट देखैत छियैक जे घर मे ककरो हमरा सँ लगाव नहि रहि गेलैकए।''

''एकर माने अहाँ परिवार छोड़ि रहल छी?''

''हम छोड़ि रहल छी कि हमरे परिवार छोड़ि देने अछि? हम विमार छलहुँ, सुशीला विमार छथि कहाँ क्यो एको बेर पुछलनि जे कि होइत छ? पैसा-कौड़ी छ कि नहि? किछु नहि... कनियो सहानुभूति नहि। तखन जँ हम अखन निचेन सँ कमा-खा रहल छी ताहू मे किच-किच कथिले'?''

''एहि द्वारे जे अहाँक आशीष मे मात्र भौजीएके हिस्सा नहि हमरो सभक अधिकार अछि।''

''हँ ठीक, अपना-अपना सीमा धरि। हमहुँ जनैत छी से। आखिर हम आँखि मूनि क' सुशीलाक पक्ष मे त' नहि छी। सुशीला द्वारे किएक परिवार खण्डित हेतैक। ओ सभक लेल काँट अछि त' बाहर रहत ताहि मे नीक ... मुदा हम त' ओकरा नहि फेक देबै।''

आ बाउ के मुँह करिया गेल छलैक। ओइ दिनक बाद इएह ओकर पत्र आयल अछि।

हम लिफाफा के सिरमा मे राखि दैत छी आ टेबुल पर सँ गिलास उठा क' एके साँस मे सब पानि गटाक-गटाक पी जाइत छी। तथापि भीतर के दाह धधकैत रहैत अछि। पसेना सँ लथ-पथ भेल देह मे बुझाइत अछि कोनो चीज सुगबुगा रहल हो। दरबज्जा बला कोठली मे बुढ़ाक बड़बड़ेनाइ स्पष्ट सुनि रहल छी। होयत अछि जहिना हम धीरे-धीरे अखन टुटि रहलहुँ अछि... ओहिना बुढ़ा के सेहो किछु कचकि रहल हेतैन। ओ अपना बैचेनी केँ नुकयबाक प्रयास मे चीज-वस्तु उठा-पटक क' रहल छथिन। हम अपना के एक गिलास पानि मे डूबा देबय चाहैत छी। बुढ़ा के निन्न नै भ' रहल छैन। हमरो बैचेनी छन-छन बढ़ल जा रहल अछि... ओह! छैक कोनो उपाय छुटकारा के?

लालटेन भकभका रहल अछि, एक कात सुशीलाक आकांक्षाक महल, एम्हर बुढ़ाक वात्सल्यक टिम-टिमाइत दीप। ओइ महल मे ओ दीप जरत? ने ओ महल बूढ़ाकेँ सोहाइत छैन आ ने ओइ दीप के सुशीला पोसय चाहैत छथि ... जोगाक' आँचर तर राख' चाहैत छथि। बुढ़ाक वात्सल्यक दीप निर्बाध

जरैत रहौन, मुदा कोना? आ कि हम सुशीला के छोड़ि दिअ'? सुशीलाके त्यागब सेहो पार नहि लागत आ बुढ़ाक प्रति ममताक डोरी काटि देबाक सेहो सामर्थ्य नहि। हम आस्ते सँ करोट फेरैत छी। सुशीला सूतल छथि। हुनका सातम मास छैन। हमरो निन्न नै भ' रहल अछि हमरा आँखिक आगु अखन एकटा अथाह सागर गरजि रहल अछि। सागरक बीच मे एकटा दीयरि बनैत छैक... आ ओइ दीयरि के दुनू कातक उमड़ैत हिलकोर घोंटि जयबाक ताक मे गरजि रहल अछि। एक धक्का एम्हर सँ... एक धक्का ओम्हर सँ... आ ओइ दीयरि अपन अस्तित्व बचयबाक चेष्टा मे सिमटि रहल हो... सिकुड़ि रहल हो... कखन कोन कातक हिलकोर ओकरा घटोसि जायत... कि जाने? तखन... तखन... हम की करु? ओइ दीयरि जकाँ दुनू कातक हिलकोर... दुनू कातक धक्का खाइत रहू? हे भगवान!

**( 4.8.76 )**

**( 24-30 मइ, 81 'मिथिला-मिहिर' मे प्रकाशित आ त्रि. वि. मे स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम मे समावेश )**



# चोलिया मे चोर बसे गोरी

समतोलिया आइ दू जुटिया गुहिने छलि। ओकर केशो छलैक सिसगर आ कारी-भुजंग... जेना चाननक गाछ मे अजोध गहुँमन लेपटायल हो। एक जुट्टी आगू एक जुट्टी पाछू करैत ओ सितुआ मे ललका रंग घोरि क' ठोर रंगलक। टिनही पेटी सँ डोकाक खप्पा निकालि क' ओ आँखि मे काजर लगोलकि आ सरिसवक डँटिकी सँ आँखिक कोन पर जा क' काजर कने कनछिया देलकै... फेर मटिया सिन्नूर सँ ठोप केलकि। मन नहि मानलकै तँ एक बेर फेर ठोर रंगलकि। एक तँ सिनुरिया ठोर... ओइ पर सँ तीन-तीन बेर रंगल गेलैक... ठोर खूब गहबोर भ' गेलै। आश्वस्त भेल... 'हूँ'... फोटो मे सीता जी के ठोर सेहो एहने छैन... गहबोर आ लाल। ओकरा अपने लाज भ' एलै... जोनिपिट्टा... काल्हि खन की की सब बजैत छलै? ... समतोलिया तोँ एहन छें'... तों ओहन छें... पचीस बाजी त' ल'ग मे बजौलकै... ओ ला ... यैह दे... आ ओ गीत... गीत गबैत काल त' साँचो लोकक मोन घमा दैत छैक कोढ़िया... लत्ते-पत्ते नहि पड़ा जाइत काल्हि त'...त' मधोस भ' जाइत ओहीठाम...

आ तकरे जवाब मे आइ ओ रचि-रचि क' सिंगार-पेटार कयलक अछि... अपन रूप सजौलक अछि। आइ... आइ ओ देखत हमरा... नजरि नहि ठहरतै... निन्न नहि हेतैक। सितुआ मे बाँचल रंग सँ ओ पैर सेहो रंगि लेलकि। अन्त मे आसन-बासन उसारैत काल एक बेर फेर अइना देखलक... अपने रूप अपरूप लगलै। ओ अइना दिस तकैत बामा आँखिक कोर जतलक... जवाब मे ओम्हरो सँ छाँह कनखी मारलकै। मुस्कुरा उठलि।

उगलाहा एक पहर टगि गेल छलैक। समतोलिया टामन-गुरिया मे लगले अछि से अन्दाज बुढ़िया कें लागि गेलै। बुढ़िया... ओकर अन्हरी माय। ओ बड़बड़ा उठलै, ''गै समतोलिया कोन सीट-साट मे लागल छें... कखन कोना की करबें? बड़ हमरा पेरैए ई छौंड़ी... तोहर ताल-माल हमरा नहि जीअ देत।''

''दिन भरि चन-चन करैत रहती... बुढ़िया नहि तन।'' आ ओ काँख तर छिट्टा-खुरपी धरैत बाध दिस मुँह केलक।

समतोलिया कें देखिते सब छौंड़ी सभक मोन हुलसि उठलै। कुसमा खुरपी सँ पाँजर कुरियबैत बाजलि, ''जुलूम करै छें गे समतोलिया... ककरा मारि क' खेलैबें आइ?''

''चल ने आइ... आइ हँसुआ-गँड़ास ने चलि जाइ बाध मे त' कहिहें'...'' विपती ठूनका देलकै।

''त' तोरा कथिले जरनि-मरनि होइछौ?'' अमोलिया टोन मारलकै, ''जकरे घर नेहमान सैह ने खेतै तरुआ... मुँह लुलुआइते रहत'...''

''से किए कहैत छही गै...'' बसमतिया ओकर पछ लेलक, ''से की कुसुमा कोनो मसोमात? ओकरो छै सिपहिया।''

''के गै? के?... नाम कही त' कनी... बुझबै त' रानी पर कोन अँखिमुन्ना रिझलै?''

खुरपी चलैत कालक चुड़ीक खन-खन, हँसी-चौल सँ उत्पन्न खुनकी वातावरण के कम, बेसी समतोलिया के वेकसि केने जाइत छलैक... मोहने जाइत छलैक। थमि-थमि क' ओ बात सब ओकरा गुदगुदी लगबैत छलैक से ओ मने-मन चोरा क' हँसियो लैत छलि। सखी-बहिनपाक उकठही ओकरा दगधा दैत छलैक मुदा निमनो लगैत छलैक। ओकरा होइ जे एहने-एहने रसगर बात सब कोइ कहैत रहैक... 'कोइ' ओकरा देह मे सटि क' सुनबैत रहैक। मुदा ओ उपर सँ नाराज होइत बाजलि, ''देख, एहन बात हमरा निमन नहि लगैए... बड़ बेजाय होइ जेतौ जँ फेनो कुछ कहबें''... आ ओही बहन्ने समतोलिया मूड़ी उठाक' चारू भर नजरि खिरौलकि...

सभक छिट्टा-पथिया घास सँ लगिचा गेलैक मुदा समतोलिया त' अखन धरि एको पाँज घास नै कटने छलि। साँचो ओकरा घास काटै मे आइ मोन



नहि लगैत छलैक। जँ-जँ बेर टगैत गेलै ओकर कछमछी थर्मामीटरक पारा जकाँ एक-एक डिग्री उपर चढ़ैत गेलै। रोख, खीझ आ मोनक फिरसानी सँ ओकरा माथ पर पसेनाक बुन्न छलछला अयलै। फेर ओ अपने मोन सँ पुछलक, ''किए... अखन धरि ओ... किएक नहि अखन धरि अयलैक? की भेलैक फेनो? काल्हि त' केहन गीत-कवित्त टेरिते विदा भेल छल... भरिए राति मे मोन ने बदलि गेल होइ... कोन ठेकान...'' खुरपियो चलबैत छलि आ शंका-आशंका सँ मोन सेहो लोहछौने छल अपन... कि आगू मे एक टा लजबिज्जीक झाड़ पड़लैक... ओ चूड़ी झमकबैत बड़ी जोर सँ काँटक झाड़ पर छौ बजारि देलक। झाड़क जड़ि मे कोनो ईंटा-रोड़ाक टुकड़ी पर खुरपी बजरलै—ठक्... धार त मुरछि-ए गेलैक...खुरपीक बेंट सँ चोट सेहो बड़ी जोर के लगलैक। ओकर ई ताल-माल बसमतिया कें नहि देखल गेलै, ''गै, अइ खुरपी के कोन कसूर छैक... एतेक तामस कथि ले? ... अबिते हेतौ।''

''है तों अपन राज-काज देख आ बड़ मस्ती छौ त' झड़ा ले ग ने तोंहूँ।''

''तोरी चोलिया मे...''

''वैह आबि गेलौ... आबि गेलौ गे।''

''सुन... सुन... कतेक नीक गबै छै... कोढ़िया।''

''है गारि किएक पढ़ै छही त'...''

गीतक बोल आस्ते-आस्ते लगीच अबैत गेलै, ''ओय होय... तोरी चोलिया मे... हाँ...हाँ... चोलिया मे चोर... हाँ जी... चोर बसेऽऽऽ ... गोरी...''

छौंड़ी सब ताबे ठाढ़ि भ' गेल। सभक कान छलैक गीत पर आ नजरि छलैक गबैया पर। विलटा कन्हा पर तीन-चारि लग्गा कुसियार लदने आ एक टा छोट टोनी कचरैत अबैत छल। काँख तर छिट्टा छलैक। मुट्ठी मे किछु दबौने, विहुँसैत-मुस्काइत छौंड़ी सभक आगू मे ओ कुसियार पटकि देलक, ''ले, तोहूँ सब एक-एक टोनी खाइ जो... मोन थम्हगर रहतौ... बड़ मीठ है गे।''

कुसियारक टोनी हाथे-हाथ उड़ि गेलै। कमला, भुवना, गोपला ई सब भोज खायले गेल अछि से जखन विलटा कहलकै त' बसमतिया, अमोलिया आ कुसमाक मोन विपरीत भ' गेलै। मोन त' भेलै जे कुसियारक सभ टा सिट्ठी

उठाक' विलटाक मुँह पर द' मारी, ''अपने करत ने 'रसकेल' अखन सँ...''

''चल गे... चलै चल आब।''

''हँ त' कि... ठुसौ ग' भोज... काल्हि सँ अइ बाध एबे ने करब... खुशामद कथी के?'' छौंड़ी सब अपने मिल क' सभके छिट्टा सब धरा देलकै। समतोलिया सेहो विदा भेलि त' विलटा ओकर बाँहि पकड़ि लेलकै, ''की भेलौ गे?''

''की भेलौ? पुछै छै जे कि भेलौ?... कोना-कोना हमर मोन खुटकै छल से हम जनै छी... आब कथी ले अयले?''

''ओह पहिने कुसियार त' खो।''

''नहि हम जाइ छी... बेर कत' गेलै?''

''हम जाइ छी?... आ हम अइठाम पूजा करब नै?'' विलटा हाथ पकड़ि क' अपना दिस घिचलक।

''इस्स...''

''इस्स कथी? अनेरे छिलमिलाइत रहै छै तों।'' आ विलटा पुरिया मँहक दुनू पान देलकै, ''ले ई पान त' खा ले'।...''

''कोइ देखतै तब?''

''के देखै छै बाध-बोन मे।'' विलटा ओकर सिनुरिया गाल छुबैत हँसल—चिड़ै-चुनमुनी देख क' की करतै?''

समतोलिया अपना हाथक पान विलटा के खुअबैत अछि। पान खाइत काल विलटा ओकर आँगूर सेहो चाटि लेलकै।

''ई सब कत' सिखलही विलटा?'' समतोलियाक आँखि मे अनुरागक रंग छलछला उठलै। फेर विलटा ओकरा पान खुऔलक। समतोलिया गाल तर पान जँतलकि आ जखन ओ सुपाड़ी मुँह मे देलकै त' समतोलिया निमन जकती ओकरा आँगूर पर दाँत बैसा देलकै। विलटाक देह गैंच गेलै—''इह।''

''अयँ रे! तों तखन की कहने रही बसमतिया के? एहन बदमाशी फेनो करबें त' हम तोरा सँ बजबो ने करबौ।''

''पिआरी हमर'' विलटा हुमकल, ''कहाँ कुच्छो? ... तोहर अइ रूप पर साँचो समतोलिया तोहर अही रूप पर हमरा होइए जे देहक कपड़ा-लत्ता सब चिर्री-चिर्री क' नोंचि ली... आ तखनो जँ मोन कसि मे ने रहै त' करेज मे चक्कू भोंकि ली... कथी ले हमरा कलपबै छें?''

''उनटे-उनटे बान चलबै छें विलटा...'' समतोलिया ओकर पैर छानि लेलकि, ''कोनो धरानिए कम सँ कम एक बेर क' अपन मुँह देखा देल करै... नहि रहल होइए तोरा बिनु...''

विलटाक जाँघ पर घेंट रखने समतोलिया करोट भेल सूतल छलि। प्रेम मे विभोर छल दुनू। एक कात दूर धरि सरिसवक पीअर फूल सँ बाध गमकै छलै। दोसर दिस पाँच-पाँच हाथक पोरगर कुसियार रस सँ मातल-मदहोस भेल झुकि-झुकि क' बौरा रहल छलैक... इम्हर पीपर-गाछक तन्नूक डारि झिहिर-झिहिर बहैत देहक रोइयाँ तन-तना रहल छलैक। मने ओ सब मिल क' एकरा दुनूक नाकाबंदी क' देने छलैक... आ ओहो दुनू धीरे-धीरे आइ रस-गंधक सरोबर मे डूबल जा रहल छल... डूबल चलि जा रहल छल...एक-दोसराक फूल-माला बनल जाइत छल दुनू। समतोलियाक आँखि मुना गेल छलैक आ ओ आँखि मुननहिं विलटाक जाँघ मे औंठा छुऔलकि, ''ओ जे गीत गबै छें से कथी... कथी चोलिया मे चोर बसै हइ?''

''बता दिऔ?''

''हँ...''

''बताइये दिऔ।'' विलटा मुड़ी निचा करैत अछि।

समतोलिया जाँघ पर चित्त भ' गेल छल, ''कहलियौ त' हँ।''

आ विलटा छिट्टा मे सँ एक टा कमची तोड़ैत एक बेर फेर पुछलकै। समतोलिया जखन फेर 'हँ' कहलकै त' ओकर ब्लाउज जइठाम सँ उँच उठल रहै... ओइठाम विलटा कमची गरौलक—''इहे...''

''इस्स...'' आ ओ कसि क' ओकरा पँजिया लेलक।

**(मार्च, 1984, 'माटि-पानि' मे प्रकाशित)**

# खुट्टी पर टाँगल ब्रा

बुचिया के चोटी नै देलकै। ओ आँगन आबि गेल छल मुँहक सुरखी पीअर आ उदास छलैक, ओकरा बुझा रहल छलैक जेना सर्वांग घिना गेल होइ आ मोन आदक खदकी जकाँ बरकि रहल होइ... देहक रोइयाँ सब भुलकि उठलै। ताबत आँगन मे ओकर भाय चिचिया उठल। ओकरा हाथसँ कौआ ठकुआ लूझि क' उड़ि गेल छलै। ओ अनमनहि जा क' भाय के कोरा ल' क' चुप करावय लागल मुदा छौंड़ा रिरिआइते रहलै। बुचिया के मोन ओहिना दिक छलै... मोन भेलै जे छौंड़ा के उठाक' पटकि दी...''की लेब बौआ?... भगवान लेब? बौआ हमर भगवान लेतै... बुचिया ओकरा नेने घर अयलि... देबाल पर भगवानक फोटो टाँगल छलैक...ओ ओकरा फोटो देखाबय लागल... जाइ खुट्टी पर भगवान छलखिन ओही खुट्टीपर एकटा ब्रेसियर सेहो लटकल छलै... बुचियाक देह एकबेर फेरो सिहरि गेलै मने खुट्टी पर लटकलहा ब्रेसियर ओकर मुँह दूसि रहल होइ... ने ओ ओइ दिन...।

ओइ परोपट्टा भरि मे गंगबाक दोकान नामी छल। चारु गामक लोक ओकरा ओइठाम अबैत छलैक। लहना उधारी सेहो खूब लगोने छल। एम्हर किछु दिन सँ ओ अलत्ता... सिन्नूर... चोली... चोटी सेहो सब कलकत्ता सँ आनि दोकान मे डिक लगा देने छल... समान अबैत माँतर छौंड़ी सब चुट्टी जकाँ सोहरि गेलै... एक त' मालक बिक्री... दोसर छौंड़ी सभक दरश परश ... आर की चाही ... गंगबा सएह चाहैत छल समान सब देखयबाक लाथे ओ ककरो आँगुर छुबैत छल तँ ककरो हाथ मे चुट्टी काटि लैत छलै। ककरो अनर्गल कथा कहि दै त' ककरो मीठी-मीठी नजरि सँ कुहि दैत छलैक जे गहिंकी ओकरा ओहिठाम एक बेर फँसल से फँसले रहि जाइत अछि। अहिना



बुचियो आयल रहैक ओइ दिन...

''एकरंगा छौ?''

''हँ...'' आ गंगबा दनादन तीन-चारिटा थान ओकरा आगू पसारि देलक। ओही मे सँ एकटा थान पसिन क' क' बुचिया पुछलकै ''की भाव?''

''तोरासँ भाव करब हम?... कत्ते? एक गज लेबही?''

''पहिने भाव तोड़बे की?''

''बताहि! गहिकी गहिकी देख क' मोल भाव होइ छै... अइ मे सँ फारि दै छियौ?'' फेर गंगबा एक गज एकरंगा फारि क' चौपेति देलकै आ पोका बढ़बैत काल बुचियाक आँगूर दाबि देलकै... ''एकटा आरो चीज देख ने ले''

''बेसी लबर लबर करबें त' मुँह झरका देबौ'' बुचिया डेग बढ़ोलक।

''आहिरो बा! छिलमिलाइ छे कथिले'? तोरे सभक नजरि मे हमहुँ रहै छी''... गंगबा मुलुर-मुलुर बुचिया दिस तकैत रहल, ''पहिने चीज देखले पसीन होउ त' ल' जो पैसा के नै कोनो चिन्ता करिहें... हमर तोहर जिनगी रहतै...'' आ गंगबा बक्सा खोलि क' ओकरा देखोलक, ''तोरा भजार के जे होउ से ल जो।''

''हमरा ने चाही किच्छो... अपने माय-बहीन के पहिरा ई सब...''

''तों त' एना चिचियाइ छे जेना बक्सा मे साँप होइ... गै, कलकत्ता के माल छियै... कोन दियौ?''

''कोनो नहि आ ओ ब्लाउज तर सँ एकटा पचटकिया निकालि क' गंगबा ल' फेक देलक, ''काटि ले अपन पाइ...''

गंगबा पुरान खेलाड़ी छल। पेटी महक समान देखि क' बुचियाक मोन लसफसा गेलै से ओ बुझि गेल आ एकटा ब्रेसियर उठा क' बुचिया दिस बढ़ौलक ''ल' जो ई... करिया रंग खुलबो करतौ आ नाप सेहो हमरा अन्दाजे ठीक हेतौ''... गंगबा अपन नजरि सँ बुचियाक कद-काठी छिलैत बिहुँसल...

''बनरमुँहाँ'' बुचिया मोने मोन बाजल आ ब्रेसियर हाथ मे उठौलक, ''बाद मे दाम दए देबौ ...''

गंगबा ओइ समानक लाथे सही मे छौड़ी सभक बीच कोंढ़ पसारि देने छल... एकटा छुतहा रोग... ओ चीज सब आब सभक ओइठाम कोइ देख सकैए... ककरो घर के खुट्टी मे... ककरो गेरुआ खोल मे... ककरो कोठी दोगा तर...जेकरा जेना सुविधा भेटलै तेना साँठि-उसारि लैत गेल। गंगबा एकटा एहन

जाल बिछा देने छल जाहि मे फँसलाक बाद ओइ सोन-चिड़ै सभक पाँखियो ने फरफरयलै। जे छौड़ी सब फँसल से फँसले रहल। नीक जकाँ फँसि गेल।

ककरा ओइठाम कत्ते लहना-तगेदा बाँकी अछि... आइयो वएह हिसाब गंगबा क' रहल अछि। दुपहरियाक समय छलै... उमिया... बेचनी... अमोलिया... पार्वती... आ बाँकी रहल बुचिया... बुचिया ओत' डूबलाहा कोना उपर हैत? ओना बुचियाक जेठका भाय ओकर संगी छैलक। मुदा तइ सँ की व्यापार मे ई सब देखत त' गंगा साहु डूबिए जाएत... उधारी बहुत त' दस-बीस दिन के। कि बुचिया जकाँ तीन-तीन महिना? दोकान पर अबितो रहैत त' सन्तोख होइतै ओकरा... खैर गंगबा मोन मसोसि लेलक। कहियो त' फाँटि पर चढ़ती दाइ... तखने... तखने देखलक जे बुचिया एम्हरे आबि रहल छै... गंगबाक करेज सूप सन भ' गेलै... ''आ... आ बुचिया बहुत उमेर छौ... अखने तोरे चर्चा हम करैत छलौं।''

''की चर्चा?... चोटी छौ... एगो दे ने...''

''पाइ देबही अखन?''

''कतेक पाइ भेलौ... सब जोड़ि ले भैया पाइ नै पठौने छथिन... पाइ अबिते...''

''नै बुचिया।'' गंगबा बात कटलक ''कोन आस पर लगानी लगबैत रहू... कथिक फायदा?''

''तों बरु सूदि ल' लिहें'... अखन एकटा चोटी दे हमरा...''

'जोर लगौने हैसा... वाह रे जुआन हैसा...' लकड़ीठाहीमे मजदुर सब ट्रक पर लकड़ी लादि रहल छैक ओहिठाम सँ आबाज आबि रहलै-ए... 'उड़ि ने जाय हैसा... पाँखि उड़ा दे हैसा...' बुचिया चुप छलि... गंगबा चुप छल। फेर ओ गुनगुनाइत कोठरी मे गेल... बुचिया के सोर पारलकै... बुचिया घबरायल... जाउ कि नै... ताबत गंगबा फेर सोर पारलकै, ''अही घर मे समान सब छै ल' जो...''

''दे...'' बुचिया चौखटि पर ठमकि गेल।

''देख बुचिया...'' गंगबा ओकर कान मे फुफुसायल ...

''नहि हम हल्ला क' देबौ।''

''हल्ला?... कोन सुपत मे हल्ला करबें? अलता, बिंदिया, ब्रेसियर की तोहर घरबला धए गेल रहौ?''



बुचियाक मुँह पीअर भ' गेल रहै, ''चुप्प''... बुचिया ओकर मुँह जतलक। तखने गंगबा ओकर बाँहि पकड़ि क' ब्लाउज अपना दिस तनलकै... ''उमिया... अमोलिया... फल्लाँ-फल्लाँ तँ केहन सुन्नर... आ ई बड़ा...''

सड़क कात छाउरक ढेरी पर एकटा कुत्ता मूइल मैना के गिधनि रहल छलैक। लकड़ीठाहीके आबाज ओहिना सुनाइ छलैक... ''चोली भीतर हैसा... जोर लगोने हैसा...'' ओकर जी ओकिया रहल छलैक बुचिया एक लोइआ थूक फेकि क' नजरि उठोलक आ दोकान सँ उतरि गेल।

गंगबाक पाइ बाँकिए छलै... आ बुचियाक करेज धधकि रहल छै। ओ मोने-मोन गंगबा के खूब गारि पढ़ैत अछि... जतेक गंगबाके सरापैत अछि... ओतबे ओकर मोनक धाह आर लहलहा उठैत अछि। कोनो चीज छलैक जे गंगबा बकोट नेने छल। बुचियाक भाय फेर रीरिया उठल आ खुट्टी पर टाँगल ब्रेसियर दिस हाथ बढ़ौलक। बुचियाक मोन त' ओहिना पितायल छलै। बुचिया ओकरा एक ठुनका देलकै, ''वएह लेत?... कथी लेबे ओ...'' आ नहि चाहितो ओकर नजरि ओइ टाँगल ब्रेसियर पर ठमकि जाइत छै। ओकरा लगैत छै जे भीतरक बकुटलहा... ब्रेसियरक दुनु धोकरी मे भरि क' ओ अपने हाथे लटका देने अछि...।

**( अक्टूबर, 1984 )**

# चान असोथकित अछि

बहिनदाइ आयल रहथिन त' माया सिलौट पर किछु रगड़ि रहल छलीह।

''कथीक चटनी अछि ज्ञानसुन्नरि?'' बहिनदाइ पुछलखिन त' माया मुड़ी उपर उठोलनि, ''कनैलक चटनी...''

बहिनदाई धड़ाक द' मायाक गट्टा पकड़ि लेलखिन। एक-दू टा चुड़ियो फुटि गेलै, ''एहनो गियान कोइ करै-ए...कहु त'...'' बहिनदाइ डोलक पानि सिलौट पर भुभुआ देलखिन। अन्तरक तमतमाहटि सँ मायाक चेहरा लाल-पीयर भेल छलनि।

''बहिनदाइ इएह कहथु ने...कोन सुख भेटल अइ पुरुख सँ...साँझक-साँझ उपास रहलौं...पेट जरल मोन जरल...स'ल नहि छलैक त' नहि करैत बियाह ...कि हमर बियाहे ने होइत... ? दुनियाँ मे एकटा इएह पुरुख अछि कि आर ककरो घरबाला छै... ? बियाह बेर मे त' जुआरि उठल रहै धुआ मे...दुनू लेद-गेद के थतमारि क' रखनिहार एकटा हमहीं भेटलियैन... ? मुदा बहिनदाइ सब झूठ...एतेटा समाज छलैक कहुना त' पोसाइये जैतै। हमरा त' बेकारे फाँस मे देलक कि ने... ? स्वार्थी लोक...अपना स'ख लेल ई... हमर सब किछु... बहिनदाइ! हमर लोक... हमर जिनगी... सब भूजि देलक...''

अड़-बड़ मुँह मे जे अबैत गेलैन...माया उगलैत गेली। बहिनदाइ के कनी तकलिफो भेलनि, हुनका जँ बुझल रहितनि जे माया के कत' सँ कोन पेंच ढील भ' गेल अछि त' ओ जरुरे कथू ल'क' कसि दितथिन... कसि दितथिन ओइ पेंच के जे पुन: माया अपना पुरुख के एहन बात नहि कहि पबितथि।

''चुप रहू'' बहिनदाइ माया के मुँह जतलनि, ''एहनो बात केओ बाजय...बताहि छी? धिया-पुता आब समर्थ भ' रहल अछि...'' कि करबै ले, बरनी ... अहिना होइछै कि ...

दुनू भाइ-बहिनक लेद-गेद सुशील बाबू नहि सम्हारि पबैथ तेँ ओ माया सँ दोसर केने छलाह। आ माया ?... माया सब किछु सहियो क' दुनू छोट बच्चा आ घर आ सुशील बाबू ककरो हेहरु नहि होम' देलखिन... मुदा दुनू प्राणी मे पटरी कहियो ने बैसलनि। माया कहथिन 'इ'...सुशील बाबू बुझैत 'ओ'...सुशील बाबू अइकात... माया ओइ पार...एकटा के पैर धरती पर एकटा के मनोरथ आकाश ठेकल। एकटा बिसपिपरी छल जे बेरा-बेरी दुनू के कटैत छल। बिसपिपरीक बिक्ख दुनू गोटाक शोणित मे समान रुपे बहि रहल छलनि।

सुशील बाबूक नोंचब-भोमरब...स्पर्श...उपस्थिति...माया के मोन मे भुम्हुर लहकि जाइत छल। दैहिक खेल क्षणिक होइतहुँ जीवनक मुख्य खेल होइत छैक से सुशील बाबू बिसरि गेलखिन कि सोचबे नै केलखिन। एम्हर जँ जँ उमेर ढरि रहल छलनि सुशील बाबू के हाफी शुरु भ' जाइत छलैन। माया लेखे ओ ओइ साँढ़ जकाँ छलाह जकर डाँड़ टूटि गेला पर देह-काठी मजगूत रहितो बेकार होइत अछि...निरर्थक...नेराओल...निश्चेष्ट...

माया जखन कखनो केबाड़ ओंगठा...बाँहि उपर उठबैत अंगैठीमोर लैत...चौअन्नी भरि मुस्काइत मुस्काइत सुशील बाबू के पँजिअबैत छलीह त' सुशील बाबू के ओ अंगैठीमोर...ओ मुस्कान...ब्लाउजक सीयन टूटब...ओ मृगनयनीक ब्याकुलता अपना पौरुख पर हमला करैत बुझाइत छल। सुशील बाबू ओकरा ओइ नगिनियाँ जकाँ बुझथिन जे बेर-बेर पोसनाहरे के काट' दौड़ैत अछि। ओ तिलमिला क' रहि जाइत छलाह...बौक...बहीर...छुच्छ आ तखन माया लुत्ती जकाँ उड़ैत फराक भ' जाइत छलीह, ''हाथी जानक डाला आ दुर्बाच्छत बड़ जरुरी बुझलखिन बाबू...मुदा उमेर नहि...छिया...''

एम्हर दू साल सँ सुशील बाबू गाम सँ जाय लागथि त' माया एके चीजक फरमाइस करथिन। एकटा सुतनाहरक। सुतनाहर आइ द्वारे जे गाम मे चोरहोक हल्ला बरमहल रहबे करैत छै आ एतेटा अंगना मे असगर मौगि...रहब ठीक नै। सुशील बाबू गदगद माया के इएह मनोरथ छनि त' ओ जरुर पुरा करथिन। आ ओ गामेक एकटा अधबैश सुतनाहर राखि देलिखिन। मुदा जतेक बेर सुशील बाबू गाम अबैत रहला, सुतनाहर बदलैत रहल...माया के मोन मेहक भुम्हुर लहकैत रहलै...ओ ब्याकुल होइत रहलीह...अकच्छ भ'क' माया आब अपने मोन माफिक एकटा चाक-चौबंद सुतनाहार राखि लेने छथि।

जहिया मनटूनमा के रखलनि ओही दिन सँ मायाक मुँह पर रहि-रहि क' सिनुरिया रंग छिटकैत रहलनि। मनटूनमाके घर मे कोइ नै छलै। ओ अपन घर मे सुतल कि मन्दिर मे...कि ककरो करेज पर...मनटूनमा लेखे एके। दुनू सांझ खेनाइ...सुशील बाबू बला फाटल-पुरान...खा क' एकटा बीड़ी... एक टूक सुपारी...अइ सँ बेसी आब की करथिन माया?

मुदा जइ दिन मनटूनमा के राति क' अबै मे देरी होइत छलैक...माया के बिरौनी लागि जाइत छलैन। ओ खन बेटा के पठबै छलखिन खन बेटी के...आ मोन नहि मानलक त' अपनो जा क' देखि अबैत छलखिन...आ जखन ओकरा घर मे लागल बाँसक फाटक हुनकर मुँह दूसि दैत छलनि त' लोहछि क माया आँगन घुमि अबैत छलीह आ मोनक कछमछी नुका लैत छलीह। तैयो कछमछी हेराइत नहि छलैन जाधरि ओ मनटूनमा ठोरक गैंचल-गैंचल मुस्की नहि देखि लैत छलीह। मुस्कानक ओ उपलब्धि माया के शायद दोसर ठाम नै भेंट सकैत छलैन। सुशील बाबू त' कथमापि नहि द' सकलखिन ओ...आ ओहन मुस्कान।

मनटूनमा के देखिते माँतर सुशील बाबू के रोइआँ सभ ठाढ़ भ' गेल छलनि। ओ कहबो केलखिन जे मनटूनमा नीक लोक नहि अछि...एकरा कोना सुतनाहर रखने छी?

''अहाँ के राखल त' टिकबे ने करैए...ई छओ मास सँ त' अछिए'' मायाक जबाब सुनि क' सुशील बाबू चुप्पी लादि लेलनि...आब त ओ चुप्पी शाश्वत रुप मे दुनूक बीच पसरल रहैत अछि। ने माया टोकै छथिन ने सुशील बाबू बजबाक प्रयास करै छथि। ओइ राति अपना पाँजर मे एकटा आर पीढ़ी लागल देखलखिन...हुनका आश्चर्य भेलैन...के बैसत?

''नीचा मे छौंड़ा मुतने छै...मनटून अहीठाम खा लेतै'' सुशील बाबू ठंढा पड़ि गेलाह। मनटूनमा सँ मनटून...थारी मे सेहो दू रंगक साँठ...हिनका थारी मे चोकटल परोरक तरुआ...एक बाकुट आलू-कोबीक तरकारी...एककोन कतरल अँचारक फारा। ओकरा थारी मे गुदगर परोरक तरुआ...अहगर सँ तरकारी...चप-चप करैत अँचार...मनटूनमा भात कोरियौलक त' भात तर मे फेर एकटा तरुआ...बाप रे! सुशील बाबू के छाती फाटि गेलनि...दुधो मे छाली आ चीनी मिलाइए देने हेतै...तइ पर सँ...मुस्की...परसन के आग्रह...सुशील बाबू हाथ धो क' घर जाइत-जाइत कहि देलिन, ''काल्हि सँ दोसर सुतनाहर



अतै... काल्हि अपन हिसाब ल जैहें...''

ई बात माया के लेसि देलकनि। ओ राति भरि सूति नहि सकलीह...सुशील बाबू सेहो किछु पूछब उचित नहि बुझलनि...आ की पुछथिन आब? सब किछु स्पष्ट अछि। उमेर एतेक दगाबाज भ' सकैए से सुशील बाबू आब बुझलनि...आ अन्तरक बिसपीपरी जखन माया के लोहछा देलक त' ओ भोरे-भोर कनैलक चटनी रगड़ि रहल छलीह आ बहिनदाइ आबि क' गट्टा ध' नेने छलखिन, ''केहन बेबुझ जकाँ अहाँ करैत छी...अँय पुरुख सुनत त' की कहत? कहु त?...''

''नहि बहिनदाइ छोड़थु ई'' एकरा हमरा ले' किए चिन्ता हेतै? हमराले किया कोइ चिन्ता? अपन जनमलहा के अपना टाँग मे बान्होअ...हमरा जे फुरायत से हमहुँ करब...''

''अच्छा अहाँ चुप होउ...आबय दिऔन...हम बुझा समझा देबैन...हमर बात कहियो नै कटलैन बेचारे...कत' गेलाह... ?...''

''घरे मे छैन्ह...नीक जकाँ बुझा देथुन...आइ ने ई रोकि देलनि...कहियो हम जरुरे किछु क' लेब...''

घर मे दुनू हाथ गाल पर रखने सुशील बाबू चुक्की-माली बैसल छलाह। आँखि डबडबा गेल छलनि...माया एकटा कुशल गृहिणी जकाँ हुनकर बच्चा आ घर डेब देने छलखिन जरुर...मुदा पासा एना उनटि जायत...से कल्पना सुशील बाबू के नै छलैन।

दोसर दिन सब देखलकै जे मनटून के पैर मे सुशील बाबू बला चप्पल झलकि रहल अछि।

# झखड़ल फूलक गाछ

फुलिया आब एतबे सोचि रहलि अछि जे अइ उछिलल जुआरिक तोर के बन्न कोना करबाक चाही? ओ जे आइ देखलक गोहाली घर मे... से कोनो एक दिनक हेल-मेल सँ सम्भव नहि छैक। खनजनियाँक बकार बन्न छलैक आ फुलियाक झोंटा... आँचर सब उधिया रहल छलैक, ''ई सपरतीब... हमरे साँय हिनका भेटलैन?... एतबे आगि धधकैत रहौ त' हमरा सँ कहितें'... हम अपन भाय सँ...आ बाप सँ सम्बन्ध करा दितियौ... छिनरि नहि तन... सतभतरी...'' आइयो फुलिया ओइ दुनू के सेंध पर नहि पकड़ैत त' लोक के थोड़बे जनतब होइतै जे... फुलियाक पारा आर उपर चहरि गेलै, ''भरछुही अनकर पारस... अनकर भोग चटैत काल मोन कनियो नै धुकधुकएलौ? ने भगवानक लेहाज ने लोकक डर...''

तावत जीवछ... ओकर मरद मुँह मे पान गिलोठने... हिचकैत आयल घरवालीक चण्डी रुप देखि क' ओकर माथा ठनकलै, ''आइ ई कोन नव बात हइ?'' आश्चर्य भेलै आन-आन दिन त' फुलिया ओसारा पर बैसलि खनजनियाँक माथाके ढील-लिख बिछैत रहैत छलि कि ओकर पैर दबबैत रहैत छलि... ने त' जाँत मे मरुआ पिसैत... मस्ती मे कोनो गीत गुनगुनाबति रहैत छलि। मुदा आइ त' जेना ओकर गाल फुलल होइक। घरवलाके देखिते फुलिया आगू डेग बढ़ोलकि...

''मर कहाँ जाइ हइ?... एक गिलास पानि लबौ त'...''

''हम जाइ हती पंच हियाँ...'' जीवछाक गट्टा धरैत ओ अपना दिस तनलकि, ''चलौ इहो... उहेँ फरिछेबै...''

मायक सोंझा मे जीवछाक गट्टा ओकर घरवाली ध' लेलकै से ओकरा कोनादन लगलै ओ गट्टा छोड़बैत कने रंजो भेलै, ''छोड़... छोड़... छोड़ गट्टा छोड़ बाजौ ने की भेलैक एकरा... पंच हियाँ की हैक?''

''मरदबा पुछै हइ की भेलौ बलू...'' फुलिया गट्टा धेनहि जीवछा सँ पुछलकै, ''अयँ हे! ई तोहर के?''... ओ खजनियाँ दिस आँगुर देखोलकै।

''मर बहिं... आइ तोरा की भेलौक गे? माय हइ से तो नहि चिन्हैत छही?''

''माइ हइ!... माइ हइ त' माइ लग मर्द सुतै हइ कि...मर्द अपना बहु लग सुतै हई?''

तड़ाक... तड़ाक... जीवछाक समधानल चमेटा सँ फुलियाक देह आ दिमाग घिरनी जकाँ नाँचि उठलै, ओ गाल हँसोथति लुत्ति जकाँ घर दिस पड़यलि। जीवछा सेहो चार परसँ एकटा चेरा झिकैत ओम्हरे लपकल, ''आइ तोहर सब भुत हम झारि देबौ...''

फुलिया घर मे आबि क' अपन पढ़िया नुँआमे गिल्लट बला पाजेब आ टिनही छिपा लपेट क' काँख तर दबलकि, ''किछु करौ, मुदा आँखि सँ देखली से झूठ?... बाजौ, गोहाली घरमे तू दुनू गोटे तरे-उपर... की झूठ हइ?... हम घास लेले अबैत रही... कनियो लाज लेहाज नै होइ गेल'...''

''चुप्प... बदजात!''

साँझ एक पहर बीत गेलै फुलिया आइ कोनो घर मे दिया नै जरोलकि। जीवछा उठल आ अन्हारे घर मे टो-टा करैत अछि कतहु माचिस भेट जाइ त' दीप जरा देतै... अनायास ओकर हाथ कोठी पर राखल चिक्कसक पथिया मे पड़ैत छैक... ओ हाथ आगू बढ़बैत अछि त' केहुनी पथिया मे लगलैक आ भरलो पथिया चिक्कस भूँइआँ मे उझिला गेलै, ''खस सार! सबके दिमागे उलटल है...'' बड़बड़ाइते छल कि चूँ-चूँ... चूँ-चूँ करैत छुछुनर ओकरा पैर पर सँ होइत बाहर दिस भागि जाइत छैक।

फेर फुलिये दीप जरबैत अछि। दिन मे त' अट्ठेबज्जर खसल रहै से ओ चिक्कसक पथिया नेने चुल्हि तर आसन बासन लगोलकि। चिक्कस सानितो छल आ सिसकितो छलि। ओकरा आउर मे अइ बात सबके कोनो खास महत्व कोइ नै दैत छलेक... मुदा फुलियाकेँ ई सब घिनाओन लगैत छै। आ जकरा ओ आइ धरि सासु बुझैत आयल छल से सरिपहुँ ओकर सौतिन ठहरि गेलैक से ई बात ओकर खैंक जकाँ गरैत छैक...। ताहु सँ बेसी ओकर आइ धरिक विश्वास जे एना जकाँ बुकनी-बुकनी भ' गेल छलै से ओ नहि समेटि पबैत अछि... जखन दुनूके मोन मिलले छलैक त' अइ घर मे फुलियाक कोन

बेगरता? आ ओकरे की भेलैए? कोन जुआनी तू गेल छैक? कैकटा संबंध ओ अखन क' सकैत अछि... मुदा नहि? फुलिया बिचारैत अछि... एकरा सब जकाँ अइ वासन-ओइ वासन मे हम मुँह नहि कारी करब... आ एकरो सबके एना खुलि क' खाय-खेलाय नहि देबै... मौगिए के अइठामसँ कात करी... आ ओ त'ब मेँहक रोटी के जोर सँ उनटा दैत अछि... एक बून्न के बेटी हम होइ... ओ घर नहि छोड़त।

राति मे जीवछ अपना बात मे फुलियाके बान्हैक कतेक कोशिश केलक। मुदा फुलिया छिटकि जाइत रहलै। जीवछा ओकरा पटिया रहल अछि जे कहुना ई कल्ला जाँति क' रहोअ... आ फुलिया बिचारैत अछि, कोना ई नकलोल कसि मे आओत?

''है, एना जे ई अट्ठाबज्जर खसौने हइ से कि हम ओकरा फाँसी-सूली चढ़ा दियौक?''

''इह... बियहुआले' दरेगे नहि... ओकराले' दर्द!''

''देखौ जे भेलै से बिसरि जाउ...''

''की छैक?... जाउ ने अपना... लग...'' आ ओ बिछान पर उठि क' बैस रहल ''हम के?''

''इ त' हमर फूलो हइ... आब चुप्प होतै से निमन कि... कोनो अप्पन माइ है?''

''छिया! छिया!!... अपन माय रहौक कि सतमाय... सरधा कोना क' होइ गेल'...''

''इहे बजौ ने... कोइ छिपा परोसि क' आगू देतै त' लोक गरहन नै करतै?''

''आ हमहुँ जँ छिपा परोसि क' ककरो देबै त' तोरा मंजुर होत'?''

''की बोललेँ... बोल त' फेनो... एके दबिया मे हम...''

''वाह रे पानिबला मरद! आ फुलिया जीवछाक पैर छानि लेलकि ''हमरा मारि दैह... हम मरि जाएब...तों भुखले-नँगटे राख'... हम रहि लेब... तोरा पर हम अपन बयस गारि देब... हमरा सब कबूल है... मुदा ई सौतिन नहि... एकरा हटा दहक अइठाँसँ...'' आ ओकरा आँखि सँ दहो-बहो नोर बहैत रहलै।

फुलियाके आब अन्हरगरे उठ' पड़ैत छैक। ओहि दिना खनजनियाँ नहि जानि अपन नूआ-वस्त्र ल' क' कत बहरा गेलै। बुढ़िया रहैत छलैक त' सब काज वएह करैत छलै...भोरे उठि क' गाय-बकरी के बाहर करब... गोबर काठी



करब... पानि उघब... बरतन-बासन ... फेर साँझ मे माल-जाल घर करब... दुरा-दरबज्जा खड़रब... सब तरहक हुच्ची-फुच्ची... फुलिया त' महरानी बनल राज करैत छली मुदा तइ सँ की? आब ओ अपने सब काज क' लेत... फुलिया सोचैत अछि... आ गोबरो पथैत अछि... खनजनियाँके गेना तीन-चारि दिन भ' गेलै मुदा जीवछा आ ओकर सासु दुनू मिल क' जे खैंक फुलियाक करेज मे गरौने छलैक... इस्स... ओ खैंक त' रहि-रहि क' ताजिनगी ओकरा गरैत रहतैक आब, ''के हे? घुर...घुर'' फुलिया के लगलै जेना कोनो कुकुर-बिलाइ आँगन मे पैसलए? ओ गोहाली घर सँ मूड़ी नमरोलकि, ''है के गेल हय अँगना'' जबाव नहि भेटलै त' ओ गोबरहे हाथे ड्योढ़ी पर आयलि, ''के है?''... सुन्न आँगन मे के पैसल हय?...'' आँगन आबि क' जे देखलक त' ओकरा ठकमूड़री लागि गेलैक। फुलियाक भीतर फेर जेना ओ खैंक गरलैक ओ तुरुछि उठलि, ''फेनो की लेब' अयलै ई अइठाँ...अँय?''

ओ खजनियाँ छली। जीवछाक माय। ओकरा गड़ाबकोर लागि गेलै, ''मोन नहि मानलक हमर... बौआ बिना सब सुन बुझाइत छलि, अहीठाम तोरा सभक कोनो काज क' देबौ त' हमरा संतोख भेटत... ममता नहि छुटल फुलिया... ओकरे सप्पत जँ फेनो एहन कर्म करी त' सातो जनम अहिना रही... हमरा जीवछा सँ दूर नहि करै... कोनो कोन मे हम पड़ल रहब। हम कल जोड़ै छियौ फुलिया...''

''बड़ दरेग होइ हइ त' पड़ल रहोअ कोनो कात मे...'' आ फुलिया मुँह घुमा क' चल गेलि। राति मे खा-पी क' बुढ़िया उठलि आ जीवछा बला केथड़ी... सिरहाना... आ गोनरि ल' क' ओकर विछान करय विदा भेलि बहारि सोहारि क' गोनरि बिछोलकि आ केथड़ी ओछबिते छली कि फुलिया हनहनाइते अयलैक आ हाथ सँ केथड़ी-सिरहना लूझि क' अंगना मे फेक देलकै, ''तोरा हम कहने छलियौक कि नहि जे ओकर कोनो काज नै करैले'... फेर ई सब की है?... बेलज्जी... अखन त' हम छित्ते छी...'' ओ गुम्हरलि।

खनजनियाँ बुढ़िया के लगलै जेना जीअक' जे-जे सहारा ओइ केथड़ी आ गोनरि मे लेपटायल छल से ओ झखड़ल फुलक गाछ जकाँ फुलिया बड़ा बेदर्दी सँ उखाड़ि क' आँगन मे फेक देलकैए... जड़ि सँ उखड़ल... एकान्त... अनेरुआ... ओकरा गड़ाबकोर लागि गेलै।

**( 14.11.76 )**

# घरमुहाँ

''फगुआ मे त' एकटा केहनो साड़ी किन दितौं... डोरा नै बन्हबै?... बच्चा सभक कपड़ाक सेहो कोनो इन्तजाम कहाँ केलियै? कहिया करबै से? आब समैये कहाँ छै फगुआ के...'' आ ओ चुल्हि मे खोरनाठी घोसिया क' टहकैत कोयला निकाललनि आ एक लोटा पानि ढारि देलखिन... कोयला छनछना उठल।

पत्नीक स्वर ओइ टहकैत कोयला सँ कम टहकल नहि लागल हमरा। कोइ अहिना जँ हमरो जरैत-टहकैत मोन पर पानि ढारि क' छनछना दितै... बड़ सुआस पड़ैत... मुदा हमरा मोन के त' हुनकर बात आओर धधका रहल छल। ओ कहि त' रहल छलीह हमरे लेकिन अपना टंट घंट मे बाझल। मोन कतौ... हाथक काज केम्हरो। हमर अस्तित्व सँ जेना कोनो मतलब नहि होइन हुनका।

''परुका साल त' एक महिना पहिने सब इन्तजाम भ' गेल रहै... आ अइ बेर त' अहाँ अनमुनाइते नहि छी... कोना कि हेतै?''

''हेतै... सब हेतै...'' हम हुनका संयत करबाक प्रयास करैत... हाथक गिलास कनी जोर सँ पटकि देलियै।

''कपार हेतै... अहाँके अइ दारु सँ फुरसति भेटत तखन ने? जेहो आदत सब नहि छल सेहो आब सिखने जाइत छी... ई सब दिन पिनाइ जरुरी छै?''

''हूँ...'' गिलास भरैत हम हुनका दिस घुरलहुँ कि जरुरी आ कि नहि से हमहुँ बुझैत छियैक।''

''धूर! किच्छो करु... हमरा बातक मोजर अहाँ कहियो देलौं? आ अन्तमे होइए हमरे कहल... आइ जँ हमर बात केने रहितहुँ त' एना खधिया मे नहि



खसितहुँ...'' ओ गाल फुला लेलनि आ अपन आसन बासन समेट' लगलीह।

जाड़क सर्द राति दस स' बेसी भ' गेल छलै... हवा कखनो पछवा कखनो पुरबाक गीत गबैत छल सन्न-सन्न। मौसम के नेंत जेना आइ ठीक दुरुस्त नै होइ। आइ... बुँदाबुँदी साँझे सँ भ' रहल छल। मेघ कखनो बरसि सकैत छलै।

हाथ मे गिलास लेने बड़ी काल धरि हम अपना अन्तरक भूत संगे बड़बड़ाइत रहलौं आ गिलास मे भरल रक्ताभ तरल द्रव्य मे झिलमिलाति-छकछकाति... दौड़ैत रेलगाड़ी के डिब्बा मे सुटकल एकटा अबोध नेना के तकैत रहलौ... अपन लंगोटिया सबके छोड़ने... अपना गामक गाछी, फुलवारी, पोखरि, पोठी, पन्ना आ लिची पातके बिसरने... ओ बरसात मे पीच सड़क पर ओंघराति... खेते खेत दौड़ैत... पिरार... वैर... लताम आ भालसरी (मौलश्री) तोड़ैत... हाट पर लाइ मुरही खाइत... पोखरि मे चुभकनाइ छोड़ि कत' जा रहल अछि... मुंशी जी के साथे ...।

''कतेक राति बितलै... खाना नहि खायब?''

''थमु कने...'' गिलासक द्रव्य काँपि उठल। हम एक घोंट लेलौं... सचमुच कते राति बितलै... अहिना हमहुँ बीत जायब आ बितिए रहल छी। अइ जरैत दीप आ बितैत राति जकाँ एक युग... दू युग... तेसर युग बीत रहल अछि। जहिना ई अन्तर्मुखी राति कहियो हमर नै भेल... हमहुँ ककरो नै भ' सकलौं... ने गाम समाज के... ने बाप के... ने स्त्री आ सन्तान के... ककरो प्रति अपन दायित्व नै निमाहि सकलौं हम। शायद अन्तर्मुखी व्यक्तित्व अपने मे सुटकल-सकुचल रहै-ए... ओ मात्र अपन होइ-ए... आर ककरो नै... कथमपि ने... कहियो ने। पत्नी चल गेल छलीह... भोजनक इच्छा शेष नै रहल।

हम एक बेर कोठरी मे नजरि खिरोलहुँ... एक कात मे किछु सैंतल... किछु छिरियाएल जारैन... चुल्हि पर राखल भात-दालिक हंडी... चिनमार पर दूधक टोपिया ... लोहिया मे झाँपल आलु अरिकोंचक तरकारी आ ओकर गंध ... बेंच पर राखल थारी-कटोरी आ गिलासक गेंट... सिलौट पर पीसल-थोपल टमाटर, मिरचाइ आ धनीक चटनी आ सबसँ उपर जरैत दीप जेना शमशानक एकान्त मे ककरो चिता सँ लहरि उठि रहल हो... रसे रसे धीरे धीरे मुदा अनवरत आ ओइ श्मशानी एकान्त मे हम बैसल छी अकेला। छुछुन्नर, मूस आ झिंगूर अपन-अपन अहारक खोजी मे सौंसे घर बुलि टहलि रहल छलै, कखनो ऐंठ थारी पर त' कखनो आँटाक झोरा दिस... कखनो दालिक पथिया मे।

आ हमरा आगू-पाछू नाचि रहल छल... जीबैत आ मृत्यक आत्मा सब... हमरा खोखरैत नोचैत... बाप मरि गेलाह... हुनक एकटा इएह आस पुरलनि जे बेटा अछि त' वंश नै बूरत... बस आर किछु नहि। हुनका मुँहक वएह पहिलुका आबाज सुनैछी। ''दिन भरि की कहाँ लिखैत रहैया... ओइ सँ पेट भरतै? कोनो काजक मनुक्ख नै...'' कमाय लगलौ त' कात भ' गेल रही... माय नेनमतिए मे मरि गेल छलीह... बेटाक सब स'ख मनोरथ नेनहि स्वाहा... पत्नीक इच्छा हुनकर मनोरथ कहियो पूरा नै क' सकलौ... जे गहना गुरिया छलनि ओइ मे सँ किछु हम विरहा देलियै... बाँकी घरेक लोक झोरि लेलकनि। ''अपने संग मे राखब'' पत्निक ई बात नहि मानबाक कारणे सब गहना बुरलै आ हम खधिया मे खसलौं... तंगी रहबे कएल... सब दिन फाटले सीबैत रहलहुँ आ अखन जे सन्तानक प्रति जे दायित्व निमाहि रहल छी... निमाहि की रहल छी निमाहबाक स्वांग अछि। आइ ककरो पैंट फाटल अछि, काल्हि किनको काँपी निघटि गेल, परसू ककरो जुत्ता-मौजा चाही। ककरो इम्तिहानक फीस जमा केनाइ छै, आइ फलहारक सामग्री चाही, काल्हि अनूना परसू उपासे रहती। कहियो कोनो पाबनि... कहियो कोनो तिहार... आ ताहि पर पत्निक खौंझाहटि... जेना हम, हम नहि एकटा बिजूखा होइ... जेकरा जतए मोन होइत छै उखारि क' कोनो ठाम ठोकि सकैए। अपन आर अपमान वास्ते किछु नै... मात्र एक घोंट दारु! एक घोंट दबाइ!! जेना मूईल जा रहल व्यक्ति के ठोंठ मे मकर-ध्वज जा रहल होइ, संजीवनी।

आ पत्नीक खौंझाहटि हम नहि बुझैत छी से बात नहि... ओ स्वंय ई बात नहि बुझ'चाहैत छथिन। एकादशी जरुरी... सोमवारी आवश्यक... मंगलवारी नै छुटक चाही... आ बाँकी दिन मे दू बजे सँ पहिने कहियो अन्न-जल ग्रहण करती से पार नै लगैत छैन।... चाय-पान आ जर्दाक मात्रा दिनानुदिन बढ़िते जा रहल छैन किछु कहबै त तकलीफ होइत छैन। की स्वास्थ्य रहैन आ आब की भ' गेलनि? नीक जकाँ हुनका दिस तकैत डर होइए। हमरा साहस नै होइत अछि हुनका दिस भरि नजरि तकबाक सुक्खल मुँह... पीअर ठोढ़... धसल आँखि... ऐंठल देह-लतिका जेना कोनो बड़क पुरान आ सिरायल गाछ होथि। आइ मथटनकी, काल्हि बोखार, परसू सर्दी आ देह-हाथ मे कम्पन। कखनो हाथ पैर सुन्न भ' जाइत छनि। कखनो कोनो ब्याधि, कखनो कोनो रोग सँ ग्रस्त जीवन। बिमारीक ताजमहल छथि हमर पत्नी आ हम चाहितो कोनो डाक्टर



सँ इलाज-उपचार नहि करा सकलहुँ... कारण अछि आर्थिक विवशता...। इलाज सँ पहिने भोजन, वस्त्र आ आवासक व्यवस्था मे फिफियाइत लोक... पावनि-तिहार, एकादशी-सोमवारी मे ओझरायल लोक... पढ़ाइ-लिखाइ आ अस्तित्व जोगयबा मे अपस्याँत लोक... कोन-कोन विमारी आ ककर-ककर इलाज करा सकैए। तखन देख रहल छी जँ एकटा कंचन काया कोनो क्रमशः माटिक ढेप जकाँ क्षरण भेल जा रहल अछि। जखन धरि छथि हमर सौभाग्य।

तथापि आइ धरि मुँह सँ ई नै बहरायल हेतनि जे हमरा कोनो डाक्टर सँ देखा दिअ'... कि कोनो दबाइए आनि दिअ... कोनो नीक वस्त्र... कोनो शृंगार-प्रसाधन... खोआ मलीदा। कथुक फरमाइस नहि, मात्र अपन परिवार... अपन सन्तानलए तिल-तिल क' अपन स्वास्थ्य के गला देब... वाह रे...। नारीत्वक गरिमा... माने इएह ओकर मरजाद छैक... हमरा हाथक अशान्त तरल द्रव्य मे वैह नारीक प्रतिमूर्ति कँपैए आ हम ओ अन्तिम घोंट पी जाइत छी।

''चलू ने ...'' शाल ओढ़ने पत्नी हमर बाँहि पकड़ि क' उठेलनि... हम लड़खड़ाइत उठै छी आ बिछान पर आबि क' पड़ि रहैत छी। मोन मे मारते रास बात सब चिल्होरि जकाँ झपट्टा मारि रहल छल... अपन पाँखि फरफरा रहल छल। पत्नी सेहो घोकड़िया क' बगल मे सूति रहल छलीह... निश्चित निभेर।

आइ हमरा मोन पड़ि गेल ओ दिन... जहिया हम गाम छोड़ि मुंशी जी के साथे शहर अयबाक यात्रा केने रही... पितियाइन भगवतीक आगू मे लोटाक कलश राखि प्रणाम करबा देने रहथि। बाहर घुमबाक, नव-नव वस्तु देखबाक हमरो मोन मे उत्सुकता छल। एकटा अबोध आ निश्चल वयस के आतुर उत्कंठा छल। छुटैत शैशव आ अबैत यौवनक ओ संधि छल आ आबि गेल रही विराटनगर... बाप लग राजा विराटक प्राचीन नगरी। आइ पचीस तीस वर्ष ससरि गेलाक बाद लगैए जेना बिल्कुल निरर्थक जीवन गुमौने होइ... खाली पेटक खधिया जेना तेना भरने होइ...जहाँ-तहाँ देह हाथ झपने होइ। कतौ के कहाँ रहलौं? ने शहरी जीवनक उद्वेलन मे शामिल होयबाक समय के पकड़ि सकलौं... ने अपन ग्रामीण माटिक सुगंध हम बिसरि सकलहुँ... ने ओइ माटिक लसफसी सँ उबरि सकलहुँ। मात्र अपना भीतर आ बाहर सदति अहुरिया कटैत रहलौं... औनाइत रहलौं।

हे अर्न्तमन के केशव! आइ धरि तोँ निरपराधे मारैत रहलह... बिना कसूरे

दण्डित करैत बिना आरोप के हमरा निर्वासित केने रहलह... ई एकान्त निर्वासनक दण्ड कहिया धरि रहतैक... कहिया समाप्त हेतैक? अपनत्वक दंश... क्षण-क्षण के टूटब, प्रतिपल के चनकब... पीड़ा... कहाँ अछि हमर चैन... आ अनचोके मोन मे स्फुरित भ' उठल गामक भव्य शिव मन्दिर आ रौद मे चमकैत ओकर कलश... मौलश्री... पीयर आ गुलाब। जामुन आ लिचीक गाछ... फुलवारी... रामक अयोध्या! अपन गाम!! अपन जन्मभूमि!!! जाहि ठामक माटि मे हमर शैशव लेढ़ायल छल। ठेहुनियाँ देने छल। जे माटि हमरा माथक चानन अछि।... ओह, कतेक शान्तिदायक आ शीतल... जेना समग्र दुख चिन्ता आ कष्ट निवरणक शक्ति ओइ माटि पानि मे छलैक।

आ जखन हम अपना मोनक बात हुनका कहलियैन त' ओ प्रफुल्लित भ' उठलीह ''सत्ते... सत्ते गाम जेबै?''

''हँ... हँ काल्हिये जेबै।''

''एह! कोना अहाँक मोन पलटल? साँचो सपता-विपता सभक दिन घुरबै छथिन... हमरो दिन आब घुरत... छब्बीस-सत्ताइस बर्खक बाद''... ओ खुशी सँ भाव-विह्वल भ' गेली।

( 01.03.90 )



# उपहार

''भैयाक कोनो खबरि?''

''न: कहाँ किछु...कोनो चिड़ैयो-चुनमुनी कत्तौ सँ हुलकी दितै त''...आ ओ गट्टा ध'क' ओकरा अपने लग पलंग पर बैसा लेलकि।

''से कोना अहाँ अन्दाज लगेलियै...''

''ओहिना मोन मे ई बात आबि गेल...बाहर मे त' इएह हल्ला छै जे जरुर घरे मे क्यो किछु कहै गेलखिन...या कोनो बातक तकलीफ हुनका भेल हेतैन...''

''लोक किछु कहै छै...अहाँ त' हमर सखी छी...अहाँके विश्वास अछि जे हम किछु कहने होयबैन?...हमरा त' अपने किछु नै फुरा रहल अछि...''

दुनू सखी पलंग पर सुतलि...एक दोसर के पजिऔने...बड़ी काल धरि अपन दुख सुख बतिआइत रहली, ओना पहिनो कतेको बेर ओ घर सँ भागल छल आ टहलान मारि दू-चारि दिनक बाद घर आपस आबि जाइत छल मुदा एहि बेरक चुप्पी सभहक कोढ़ उनटा देने छलैक, एतेक दिन गौतम कहियो ने फरार रहैत छल, नौकर-चाकर, अपन-आन, हित-मुदै ओकरा ताकि क' सब थाकि गेल छल...।

कतौ लोक कहलकै जे हँ, देखलियै-ए त' अइ रुप-रंगक एकटा जवान मुदा संग मे दू-चारि आदमी सेहो छलैक...कोइ कहै जे अखने किछु काल पहिने झोंटा-तोंटा बढ़ौने एकटा युवक संन्यासी पूब भर गेलैए...कोइ कहै जे जमाना आब खराब भ' गेल...रुप-रंग बबाजी बला आ संग मे धौरबी-मौगी सेहो...एहने-एहन समाचार सब ओ बृद्ध सुनैथ त पित्ते बताह...'हमरा समाचार नहि, गौतम चाही...सिर्फ एकटा गौतम...'

यशोधराक कान मे सेहो सब समाचार जाइत रहल आ यशोधरा आबो नहि बुझि सकल जे ओकरा कोन व्यवहारक त्रुटि सँ क्षुब्ध...मर्माहत भ' क' ओकर घरवाला ओकरा त्यागि गेलैक? नै कहियो लड़ाइ-झगड़ा...ने कहियो रुसाफुली...ने कथुक मत-मतान्तर...आ ने कोनो अभाव...तखन...तखन...एहन कोन दर्द उठलै जे बिनु किछु कहने-सुनने आत्मज आ अर्द्धांगिनी के निसबद्ध राति मे सूतल छोड़िक' भागि गेल छल गौतम।

साधन...सुख...वैभव...राजमहल मे ओकरा सब किछु ओकरा भेटै छैक, हाथी...घोड़ा...हीरा...पन्ना...जवाहिरात...दास-दासिन...झाड़-फानुस सब किछु ओहिना छलै...कम छलैक त' एकटा राजकुमार...राजकुमार गौतम...ओकर सर्वस्व, ओ बौक त' ओही दिन भ' गेल जहिया ओ भागल रहैक...किन्तु आशा अखनो छै ओकरा...जखन-तखन राजभवन के आगू सड़क पर रथ घिचैत घोड़ाक टाप सुनि क' ओ चौंक उठैत अछि...ओकरा होइत छै जे अही कोनो घोड़ा पर सवार भेल ओकर गौतम आबि रहलैए...आबि रहलैए...मुदा घोड़ा टाप ठोकैत आगू बढ़ि जाइत छैक मात्र टापक स्वर...ई टापक स्वर ओकरा करची-बत्तीक पूल जकाँ थर-थरबैत रहैत छैक आ अन्तर ओकर सुबकि उठैत अछि, राजसी सुख वैभव ओकरा अगल काँट बुझाइत छैक, आ क्रमश: यशोधराक खेनाइ-पिनाइ...अप्सरा सन रुप ठठरी बनि गेलै। के कहि सकत आब जे इएह ठठरी कहियो राजमहलक स्वप्न सुंदरी छलि? समय बितैत रहलै...यशोधरा कूही होइत रहलि...नोर बहैत रहलै...यशोधराक सासु...यशोधराके सरापैत रहल...राजधानी उदास होइत गेल।

आ जखन सासु के पता लागल जे पुतोहु खेनाइ-पिनाइ त्यागि क' प्राण साधि रहल छथिन त' ओ बड़ जोर सँ यशोधराक सासु पर बमकि उठलाह ''नहि खाइ छथि...नहि खाइ छथि त' भोम्हरै जाउ हमर करेज...''

''अयँ ए, त' हमरा पर कथिले' पित्त झारै छी...''

''कथिले' झारै छी?...चोप्प...हम पहिने सँ नहि अहाँके कहैत रही जे छौंड़ाक बगे-बानि नीक नहि बुझा रहल अछि...अखन नै करियौ एकर बियाह...तखन त' अहींक प्राण छुटैत रहैए जे बियाह क' देबै त' सुधरि जायत...आ आब भागि गेल त' हमरा कहै छी जे पुतोहु हरदम कनैत रहैत छथि...ने खाइ छथि...ने पीबै छथि...जकरा सर्वस्व मे आगि लागल रहतै से कनतै ने त' हँसतै...आब बेटा सुधरल कि ने?''



''सब दोख हमरे?...भगवान हमरा मौगतियो ने दै छथि...आ मौगी भरि-भरि दिन बैसक' नेप चुअबैत रहैत अछि किएक त' ओकर सर्वस्व उजडि गेलै...आ हम कतौ पानि सँ छानि क बेटा अनने रही...नै?

''अच्छा...अच्छा...आब जाउ एत' सँ...''

बुढ़ा बडी काल धरि गुम्म-सुम बैसल रहला,हुनका किछु नहि फुरा रहल छैन जे कोन शब्द मे ओ यशोधरा के बोल-भरोस देथुन...तथापि कनीकालक बाद ओ भीतर अयलाह आ यशोधराक भवन लग जा क' पुतोहु के सम्बोधित केलनि बेकारे कनैत रहै छथि कि ने? कतबो कनैत-कनैत अपन आँखि फोरि लेती ताहि सँ गेनहार आपस अतै? हिनकर दुख हम बुझि रहल छी...आ जँ हमरा-सभक दुखके हिनका कनियो विचार होनि त' जा क' अन्न-जल ग्रहण करौथ...गौतम हिनकर सर्वस्व छलनि त' हमरो ओ बेटा छल...हिनका सँ कम नहि हमर मोह कचोटैत अछि...लेकिन साध्य की...की करब? दर्दक एकेटा दबाइ छैक जे सबूर क'क' छाती पाथर क' ली...निर्मोहिया के किछु नै रोकि सकलै...किछु नहि...''

कहैत-कहैत पिता के अपने गराबकोर लागि गेलैन...ओ आँखि पोछैत आँगन सँ बहरा गेलाह।

तइ के बादो ससुर बेर-बेर आबि क' बोल-भरोस दैत रहलखिन,कतेक तरह सँ चिरौरी-विनती केलखिन जे इहो जँ अहिना प्राण त्यागि लेती त हम ककर मुँह देख क' जीअब? यशोधरा नहि खेती त' हमहुँ नै खायब...बेटा ने गेल...बेटी त' अछिए...कतेक तरहक बात-सप्पत देलखिन तखन जा क' यशोधरा मुँह मे पानि देने छली।

मुदा आब ने सबूरक कोनो थाह भेटै छै ने नोर पोछबाक कोनो साधन, गुदस्त होइत समय के साथ ओ निश्चय क' चुकलि छल जे एहिठाम कोहुना जीवन बिता देत...ससुरक बोल-भरोस सेहो भेटे रहल छलैक...जीबाक लेल जीवन मे चुनौती आवश्यक छैक किन्तु लांक्षणा लागि गेलाक बाद चित्त खिन्न भ' जाइत छैक आ जीवन बुझाइत छैक सिर्फ एक मुठी बाउल...ओइ दिनका सासुक बात ओकर करेज एक बेर फेर कचि देने रहैक...नहि जानि बुढ़िया कथिले ओकरा सँ तुरुछल रहै? सासु ओइ दिन पुछने रहथिन, ''कनियाँ अहाँ ने त' बौआ के किछु कहने सुनने छलियैक?''

ओह, बुढ़िया अही द्वारे गुम्हरैत रहैत छैक...यशोधराके ओइ दिन सखी

बला बात मोन पड़ि गेलै...जखन घरेक लोक ओकरा लांक्षणा लगा रहलै—ए त' बाहर त' ओ सहजहि बदनाम हएत, यशोधरा बात सुनि क' हतप्रभ भ' गेलि, पति-पत्नीक अंतरंग बातचीतमे सासुक हुलकी मारब ओकरा अपरतीब बुझयलै...शायद सासु के विश्वास छैन जे यशोधरे द्वारा बेटा कतौ चल गेल...

''नै, कहाँ किछु... हमरा सँ त' कोनो गप्पो ने भेल छलैन ओइ दिन...'' भ्रम निवारण के प्रयास यशोधरा करैत अछि, किन्तु सासुक भंगिमा ओहिना गुम्हरैत बुझयलै...एकटा आरो उड़ीबिड़ी यशोधराक मोन मे प्रवेश क' गेलै...सासु भीतर चल गेल छलखिन...आ यशोधरा केवाड़क पट्टा धयने ओहिना सुबकैत रहलि...एकटा पति नहि रहला पर जीवन कतेक बोझ...नीरस आ निरर्थक भ' जाइत छैक ? सिर्फ ससुरक बोली-वचन सँ ओ जी सकतीह ? साँस ल' सकत से ओकरा अबूह बझा रहल छैक...आँखि मे नोर डब-डबा अएलै...ओइ नोरक अढ मे चारि-पाँचटा छाँह आगन मे देखलक...टोल-पड़ोसक बुलनाहरि सब छल...आ जेना परम्परा छै जे बेटिए-पुतोहु बैस' ले' आसनी देतै...प्रणाम करतै आ छाबा-घुटी जाँतए लगै छै, सेहो रीति के निर्वाह यशोधरा बुते पार नहि लागल...ओ अपने समस्या मे ओझरायल केबाड़क पट्टा धेनहि रहल...सासु आबि क' सभक स्वागत सत्कार केलखिन आ कुशल-क्षेमक उपरान्त बातक रुख गौतम पर आबि क' ठमकि गेल, ''सएह, बौआ के कोन चीजक अभाव भेलैन ? सुख साधनक सोन पर अपसरा सन रुपके सोहागा...कोन मुहछी मारि देलकैन से नहि कहि।

—जेँ कोनो बात भेल हेतै...तेँ ने भैया भागि गेलखिन...बात सुनि क' यशोधराक कान ठाढ़ भ' गेलै एतेक दिनक बादो ओइ बात सबके खोद-बेध सँ की प्रमाणित करबाक चेष्टा भ' रहल छैक से ओ नहि गमि सकलि, गौतम के भागि जयबाक बातक खोर-चालसँ ओकरा कष्ट पहुँचैत छैक से ओ सब की जाने गेल ?

आँगन मे ओकर सासु कहि रहल छलखिन, ''हमरा सँ त' कोनो बातो ने केलक सुगना हमर...हम की कहू ? ओना घरवाली सँ कोनो टोना-मोनी भेल होइत दोसर बात...तैयो हमरा कहैत...हम त' माय छलियै...बुढ़ाड़ी मे एहन जे डांग मारलक से...त' हमहीं जनै छी...''

''जरुर घरबाली सँ झगड़ा-दन भेल हेतैन...पुतोहु त' तर बिखनी होइते अछि।''



''हँ ए,...'' यशोधराक सासु कहलखिन, ''हमरो आब विश्वास भ' गेल जे पुतोहुएक हाथ छनि एहि मे...नहि त भागहेक छलैक त' बियाह सँ पहिने भागि गेल रहैत...धिया-पुता भेलाक बाद भागै के मतलब की निकलै छै...एहन कोन मौगी जे घरवाला के कसि मे नहि राखि सकल...''

इलायची, लौंग, कतरल सुपारी आ पानक खिल्ली सँ सजाओल चानीक पान-दान नौरिन आबि क' राखि गेल छल, यशोधराक सासु पनदान आगू बढ़ोलनि, ''हमर त' धन-धर्म दुनू गेल...तइ पर सँ दिन-राति नोर...एहन अलच्छक पैर घर मे अबिते एहन ओरहा-डारी शुरु भेल जे कामधेनु सन गाय मरि गेल...मकुनी हाथी से बताह भ' गेल आ ओहि साल सोन-सन बेटा से से फुर्र भ' गेल...''

यशोधरा केबाड़क पट्टा पकड़ने सब बात सुनलक...सुनलक त' ओकरा ई सब बात अपरतीब लगलै...मोन भिन-भिनाय लगलै...एहि घरक प्रति जे ओकरा मोन मे मोह छलै...वएह मोहक मुँह आइ कतौ थकुचा गेल छलैक...होइत ने रहै अहिना कुही...औनाइत रहोअ आब अपने मे...कतेक लांक्षण सासु लगौने छलैक आइ...ओइ बात सँ स्पष्ट छल जे ओकरा बेटा के यशोधरा बैला देलकै...सुआइत ओइ दिन पुछैत रहै बुढ़िया जे अहाँ ने त' कोनो बात बौआ के कहलियै ?...की कहने छलै ओ गौतम के ?...अन्तिम राति मे ओ अपन बाँहि गौतमक छाती पर राखि क' सुतल छलि, कखन ओ बाँहि हटलै...कखन ओ भागल ?...आ नहि किछु कहने छलैक तकर कोन प्रमाण छल ओकरा लग ?...एकटा अजीब कसमकस ओकरा भीतर आफन तोड़ैत छैक...प्रश्नक एकटा अन्हरजाल ओकरा मोन मे पसरि गेलै...ओइ जाल सँ ओ बहरा नै पबैत अछि...त्यागि दिऔ घर ?...ओकर कोन कसूर छै ? कि अहिना रेत पर छटपटाइत माँछ जकाँ दम तोड़ैत रहोअ ?...ओ कोन अपराध सँ ?...बेदी पर धर्मक साक्षी ल'क' एक-निष्ठाता निमाहबाक प्रण ओ असगरे कतेक दिन धरि निमाहि सकत ? किएक निमाहत ? यशोधरा आँचर सँ आँखि मे दबकल नोर पोछलक...तखने लगलै जे पैर मे घुरघुरा सरसरा रहल हो कि ओ पैर झटकि देब' चाहलकि...अनायासे नजरि नीचा गेलै...एकटा गौर-वर्ण बच्चा ओकरा नुआँक पाढ़ि मट्ठी मे पकड़ने खीच रहल छलैक...ओ बाँहि नमरा बच्चा के कोरा उठा लेलकि...बौआ...आ यशोधरा फफकि उठलि...ओ राहुल छलैक...गौतमक प्रथम आ अन्तिम उपहार।

# चिल्होड़ि उड़ि रहल अछि

विनोद केँ आइ चकबिदोर लागल छैक। एकदम आश्चर्य। सर्वथा चित्त-पट स्थिति। नजरि जिम्हरे घुमबैत अछि ओमहरे पत्नीक उत्साह। मायक उमरैत आवेश। भाय-बहिनिक छलकैत उमकी...ओकर सब किछु...सम्पूर्ण चित्राधार अजब लागि रहलै-ए। पढाइ छोडलाक पछाति ओ तीन साल धरि बेकार गमौने छल। आ अइ अवधि मे नीक जकाँ सभक अन्तर परखि नेने छलैक...खूब नीक जकाँ। के पत्नी ? के भाय ? के सहोदर ? लोक कहै छै समांग...मुदा विनोद आब नीक जकाँ बुझि गेल जे पाँइ बिनु समांगो छुच्छ। घर सँ कुर्सी आनि क' चंदा रौद मे रखलनि। कुर्सी के आँचर सँ झारि देलथिन। जेना ओइ पर बैसनाहर सँ बेसी हुनका कुर्सी सँ माया-दरेग होइन। चंदा आँखि सँ इशारा देलखिन जे रौद मे आबि क' बैसू ने ?

विनोद के आश्चर्य आरो बढ़ि गेल जे पत्नी हुनक बेकारी मे कहियो भरि मुँह ओकरा सँ हँसलथिन नहि...वएह कतेक मधुरता सँ कतेक मधुआयल कनखी दैत छलथिन, ''ए, कनियाँ, बौआ एक भोर मुँह धोलकै...की करै छी...दियौ ने जलखै...''

चन्दा झटकि क' घर सँ घी अनलनि। सोहारी पर घी औंसैत छलीह आ मोने-मोन नव-नव साड़ी सभक डिजाइन सेहो पसीन करैत छलीह-सैंया भेल कोतवलवा आब हम...विनोद नौकरी पर सँ गाम आयल छल-छुट्टी मे।

विनोद के लगलै जे मोन मे कतौ अनेको कचबचिया सब झौहरि द' रहल हो। हबर-हबर जलखै क' क' ओ बाहर भ' गेल। बेचैन मोनक तार केँ ओ कचबचिया सब झन-झना रहल छलैक। जेना ओ तार आइ टूटि जायत-टुटि क' ओझरा जायत। बाहर होइत फेर ओ सुनलक। मने ओकरा सुना क' माय कहने हेथिन, ''जो त' रे गोपाल, देखही गदियानी बाली के...होइ त' एक लोटा दुध ने ने आ...बिना दुधे बौआ कोना खेतै ?''

''भोजी! उनटा दिऔन त' भैया ले...तिलकोरक तरुआ नीक लगैत छनि...'' ओम्हर सँ विनोदक बहिन दीपू हाथ मे गोर दसेक तिलकोरक पात नेने अयलि। बापके लकवा मारने छैक। ओ बिछाने पर सँ कहलथिन, ''ए विनोदक' माय! सुनै छी, राहड़िएक दालि बनाउ आइ ''

विनोद खायलें बैसल। आगू मे छाल्ही सँ भरल दूधक कटोरी...तरुआ सँ गमकै छिपली...पुदीनाक चटनी...कागजी नेबोक एकटा फाँक आ सामने हँसैत...पँखा डोलाबैले औनाइत एक अदत गोर-नारि। राजा महाराजा आगू मे जेना छत्तीसो प्रकारक ब्यंजन सचार लगा क' रानी जी पंखा डोलाबैले' प्रस्तुत होयथिन। विनोद केँ सब किछु घिनाओन लगलै। नून रोटी खाय बला श्रमजीवीक आगू एतेक सरस बस्तु परसि देब विनोद के गारि बुझयलैक...एकटा अभद्र गारि। ताहु मे बेकारी समयक सभक ब्यवहार सँ ओ परिचिते छल। खाइत काल कोनो चीजक स्वाद ओ नहि बुझलकै विशेष क' चंदाक व्यवहार ओरा खौंझा रहल छैक। चंदाक तखुनका रुप...चंदाक आजुक पंखा डोलाबयवला रुप...कोन जमीन-आसमान के अन्तर आबि गेलैए चंदाक व्यवहार मे ? दुनू रुप प्राणलेबा रुप छलैक...दुनू अस्वाभाविक रुप। चंदाक परिचय बुझलक ओ।

पहिलुका नोकरी छुटल रहै त' ओ गामे छल। हाथपरक पाइ सब खतम भ' गेल छलैक। माय-बापक उपेक्षा...भाय-बहिनीक अनठायब...ओकरा वरदाश्त छलैक...किन्तु पत्नीक उपेक्षा ओकरा खीरा जकाँ अन्तरकेँ फाँरि देने रहैक। एक बेर किओ नै पुछै जे जलखै कयलहुँ कि नहि...कखन खायब...छुच्छ कोना खायब ? इएह बहिन तखन आगू मे रोटी थोपि क' पटकि जाइत छलि जेना बरदक आगू एक पाँज पुआर नेरा देने हो...आइ वएह बहिन तिलकोर पात आनने छलि। विनोद ओइ खेप कतेक साँझ सहिते रहि गेल छल। तथापि चंदा...जे ओकर अर्धांगिनी छथिन...एक बेर आग्रहो कर' नै अबथिन जे चलू कनियें खा लिअ'...कि नोकरी ले लोक चिन्ता करत ? किछु नहि ? कोनो सहानुभूति नहि...मात्र फरमाइस। हमरा ई नहि अछि ओ आनि दिअ' फँली के घरवला केहन सुन्नर साड़ी अनलकैए...एकटा हमरो...होइत...हजार रंगक फरमाइस घरबाला बेकारे छथि से बुझियो क' आ विनोद अपनाके सम्हारैत रहल...चंदा के परतारैत रहल...बुझबैत रहल...मुदा चंदाले' पर्स लिपिस्टिक...

सैण्डल...चंदाले शृंगार-प्रसाधन...विलासिताक वस्तु जुटयबामे ओ कहियो सक्षम नहि भेल। विनोद अपना जनैत बात सँ...बिचार सँ...उदाहरण सँ आ मौका-बेमौका लातो-जुत्ता सँ बुझा देने छलै...आ इहो बुझा देने छलैक जे इएह तृष्णा बढ़ैत एक दिन आदमी के पतीत बना दैत छैक...कि भौतिकताक चमक-दमक सँ अधिक आत्माक पवित्रता छैक...चमकैत रहैत छैक। मुदा चंदा के ई बात सभ नीक नहि लगनि। हुनक फरमाइस पूरा नै होइन त' ओ विनोदक लेक्चर सँ भड़कि जाइत छलि—स'ल नै छल त' बियाह नै करितहुँ।

घरक प्रत्यके ब्यक्ति सँ अधिक चंदाक उपेक्षनीय ब्यवहार सँ मर्माहत विनोदकेँ अन्ततः संगी आगू मुँह खोलिक' कह' पड़लैक। ओ त' संगीक कृपालुता जे ब्यापारी बर्गक होइतहुँ अपन मित्र विनोद के बजार भाव सँ बेसी दरमाहा द' अपने कपड़ाक फैक्ट्री मे सुपरभाइजर बना देलथिन। साल भरि सँ विनोद ओहीठाम कार्य करैत अछि। अखन छुट्टी मे घर आयल अछि।

'' की विनोद काज भेल?''

आक्...गल-गल...गल-गल...गुर-गुर...पीइच्य...कुर्रा फेकैत विनोद एतबे बाजल, ''हँ।'

''तेँ आइ साँझे सँ माय घर मे तरुआ-तीमन छनमनबैत छलथुन।'', वकील साहब हँसलनि, ''खैर काज भ' गेल' सएह एक लाख...भोजन भ' गेलै?''

''हँ, भैया एतबे दिनक बेकारी मे सब तरहक अनुभव हम भोगि लेलहुँ'' विनोद पएर धो क' जुत्ता पहिरि लेलक, ''अहाँक बात गिरह बन्हलौं,जे पाइये पर बहुओ छजै छैक।''

''अखन रहब की?''

''नहि परसू जायब।'' आ विनोद आबि क' बिछान पर पड़ि रहल। कतेक दिनक बाद एकान्त मे आइ चंदा सँ भेट हेतैक। दस बाजि गेल छल। विनोदके अपन वियाहक राति मोन पड़ैत रहलैक...एकाएक विनोदक तन्द्रा टूटल। आगू मे चंदा दुधक गिलास नेने ठाढि छलीह बड़ी काल गप्प-सप्प कयलाक बाद चंदा कहथिन, ''हमरा ले' की सब अनलहुँ?''

विनोद अवाक् भ' गेल मुदा ओ हँसिक' बात टारि देलक, ''सौंसे हम जे छी।''

''उहुँ...कोनो नीक चीज लबितहुँ? अहाँ त' छीहे।''



विनोदक उत्साह सिताहल नढ़िया जकाँ सुटकि गेल। धीरे-धीरे विनोद बहस बला आदति छोरने जा रहल अछि। तैयो एक बेर पुछलकै, ''अँ ए! अहाँक नजरि मे चीज बस्तु बड़ पैघ छैक?''

''स्वाभाविके। अहुँकेँ हमर मोन...मनोरथ सँ बेसी हमर देह नै गमकैए?''

''छिया।'' आ विनोद करोट घुमि गेल।

विनोद आइ जा रहल अछि। जेबा सँ एकदिन पहिने चंदा घेओना पसारलनि-हमहुँ संग चलब। बहुत हील-हुज्जति के बाद अन्त मे माय कहलथिन-नेने जइऔन...अहुँके भानस-भात मे दिकदारी होइते हैत...आ से चंदा सेहो विनोदक संग जा रहलीह अछि।

किछु दिन धरि सब ठीक रहल किन्तु जखन चन्दाक जानपहिचान मोहल्लाक अप-टूडेट एडभान्स स्त्री ग्रूप सँ भेलैक त' फेर वएह फरमाइस। फरमाइस नै पुरएबाक उलहन...नव-नव चीजक आग्रह...अनुचित दवाब...फजुलक बक-बक। लेकिन एम्हर किछु दिन सँ चंदाक दुराग्रह कम होइत देखि क' विनोद के बड़ आश्चर्य होइत छलैक। घरक...बिछानक अस्त-ब्यस्तता...संगे चन्दा मे एकटा कछमछी देख क' विनोद बुझि रहल छल जे ई सभ चंदाक सुधरबा सँ पूर्वक लक्षण सब थिक। ओ चंदाक प्रतिए आश्वस्त होइत गेल। आखिर आदमी के अपने चेतना कार्य करैत छैक मुदा एकदिन औ चौकठि ल'ग सिकरेटक टुकरी देखि क' भीतरे-भीतर बमकि उठल। ओ आक्रोश दबौनहि चंदा सँ पुछलकै, ''कोइ आयल छल?''

''हँ अहींक दोस्त छलथि'' आ जखन बज्रपात भेलैक त' विनोदक आगू सब किछु घुमि गेल। पृथ्वी जेना एकाएक नाचि गेल हो...कोई बिजलीक धुरी पर पृथ्वी के नचा देने होइक...ओ हाथ बढ़ा क' अन्हार मे स्वीच तकलक। घर अन्हार देखिते ओकर मोन शंका-आशंका सँ तरंगित छलैक आ जखन प्रकाश मे ओ पत्र पढ़लक तँ'...ओ बेर-बेर पत्र पढ़ैत रहल...ओकरा ओ पत्र कंठस्थ भ' गेलै।

विनोद बाबू!

जे पुरुष-स्त्री आकांक्षा...मनोरथ पुरयबाक सामार्थ नहि रखैत हो ओकरा ले' बियाह केनाइ महापाप होइत छैक। अहीं कहू, आइ धरि हमरा मोनक कोन बात पुरलहुँ? मोन अछि अहाँके? आबो किछु नहि भेलैए। दू टा जिनगी किएक निर्रथक माँटि मे मिलत सोचि क' हम अपन बाट धयलहुँ। लाज हमरो नहि

भेल...लाज अहुँके नै होयबाक चाही। विनोद बाबू बीसम शताब्दी छैक ई। जाधरि निमहि सकल ताधरि साँय-बहु...अन्यथा परस्पर मित्र त' रहिए सकैत छी। अहाँके सादगी पसिन अछि...हमरा चटक-मटक...ई अश्लीलता नहि? अपन-अपन स्वाभाव भेल...पत्र जतेक बेर पढ़ैत गेल ओकरा देहक आगि ओतेक बढ़ैत गेलै। मोन भेलै सम्पूर्ण मोहल्लाके फूकि दी। ओकर आँखि करजनी जकाँ लाल टरेस भ' गेलै आ चंदाक सम्पूर्ण ब्यक्तित्व ओकरा आँखिक विम्ब मे धीरे-धीरे एकटा चिल्होरि मे बदलि गेलैक जे ओकर करेजाक गुदगर माउस लूझि क' उड़ि गेल छलैक। ओ बताह गीदड़ जकाँ अहुछिया कटैत रहल। वकील भैयाक कहब जे पाइये पर बहुओ छजै छैक से सत्य कतेक नाँगट रुप मे उपस्थित भ' आइ ओकरा बौरा देने छलैक।

छओ महिना बीत गेल। घवाह मर्म पपड़िया गेल छलैक। विनोद धीर-धीरे ठीक भ' रहल छल। एकाएक एक दिन ओकर संगी फैक्ट्रीक छमाही रिपोर्टक मादे अपना ओहिठाम बजौलकनि। नौकरी छुटि जयबाक आशंका भेलै ओकरा। किन्तु संगीक श्रेष्ठता सब आशंका के नकारि देलक। विनोद बंगला पर जुमल। ध्वनी-संकेत देलकै। एक मिनट मे केवाड़क एकट पट्टा खुजलै...केबाड़क पट्टा खुजिते विनोद कुदकि उठल। बग्घा ध' देलकै...चंदा... एत'...अइ रुप मे... मित्र... ? एकाएक विनोदक मस्तिष्क मे सैकड़ो घंटी-चंदाक संग बिताओल क्षण टुनटुना उठल। घाव फेर पनगि गेल...खूब नीक जकाँ हरियर-कचोर भ' उठल मर्म। विनोद के लगलैक चंदाक चिल्होरि फेर करेजा मेँहक माउस एक बाकुट काछि लेलकए...ओ श्लथ भेल जा रहल छल। कनियो काबू नहि छलैक...तखने जेना कोइ कान मे कहलकै...की तकै छह?...इएह मौका छौक...ल' ले बदला...हँ...हँ...ल' ले बदला। चंदा चाय आनि क' देलखिन। ओ निर्भिक ठाढि भेल मुस्कुरा रहल छलीह। विनोद उठल। चंदाक हँसी ओकर सन्तुलन आर बिगारि देलकै। ओकरा किछु नै फुरा रहल छलैक। की करु? चंदाक घेंट दाबि दिअ'...कि अपने आँखि फोरि लिअए। मोन त' इहो भेलै जे एक लोइआ थूक ओकरा मुँह पर थूकि दी। मोन मे कतेको तरहक बिहाड़ि हरकम्प मचौने छलैक...मुदा ओ किछु नै क' सकल।



# नुक्का चोरी

''फिक्क द' हँसा किए जाइ छौ तोरा?''

''आ खट् सनी किए रुसि रहै छैं तों?'' विभा बाजलि त' ओकरा फेर हँसा गेलै। विभा के इएह बिहुँसैत ठोर देखै ले' त' चन्दन अपस्याँत रहैए...आ विभो जाधरि दिन मे एक बेर चन्दन के रुसा नै दै छै ओकरो बिढ़नी लागल रहै छै। ओना दुनू गोटेक संबंध किछु आर छलै मुदा, जहिया सँ ओ दुनू एक दोसर के 'अइ' नजरि सँ चिन्हलक तहिए सँ दुनूक संबोधन बदलि गेलै...संबध बदलि गेलै...आ समग्र दुनियाँ बदलि गेलै... ओ दुनू इहो नहि सोचलकै जे परिवार ओकरा सभके 'एक' होम' देतै कि नहि...समाजक आक्षेप ओकरा जिअ' देतै कि नै? तथापि ई चोरी-चोरी प्रेम दुनूक हृदय मे एकटा फूल बनि क' मुस्किया उठलै।

''ठीके प्रेम आन्हर होइछै चन्दन?'' विभा ओकरा पाँजर ल'ग सहटि आयलि। ''एना हमरा किएक होइए जे हरदम हम तोरे दखैत रही...तोरे सँ बतिआइत रही...तोरे मे सटल रही...हमरा की भ' गेल चन्दन? कोनो काज मे हमरा मोने नहि लगैए...कोइ कहै छै किच्छो...हम बुझै छियै किच्छो...तोरा देखैले उड़ी-बिड़ी किए लागल रहैए हमरा... पागल-बताह जकाँ किएक करैत छी हम?''

चन्दन ओकर गाल थप-थपा देलकै, ''बकलेल! तों जँ पागल भ' जेबें त' हम जीअब? नहि जीअब हम...तोरा बिना हम नहि जी सकै छी। विभा...तोरा सँ फराक हमर कोन मोल?...हमरा सब कबूल अछि...लोकक घृणित नजरि...सासुरक अपमान...समाजक उपेक्षा...मुदा एको घड़ी...एको पल के बिछोह तोरा सँ स्वीकार नै...तोहर प्यार सँ...तोहर अंग-अंग के मुस्की सँ...साँचो हम दीवाना भ' गेल छी विभा...ई हाथ आब अइ हाथ सँ नै छुटत विभा...कहियो नै...आबै विभा, आइ हम तों एकटा वचन ली...'' कहैत चन्दन उठल...विभा

सेहो ठाढ़ि भेलि...दुनू आगू बढ़ल...घर मे लटकाओल राधा-कृष्णक फोटो के सामने, ''जइ उछाह सँ प्रेमक शुरुआत केलौं दुनू गोटे ओतबे दीवानगी सँ अइ प्रेमके अन्त धरि निमाहियो लेब...''

ओइ गौरवर्णीय शरीर के यौवन गहि नेने छैक...जेना चानन गाछ मे अजोह गहुँमन साँप लेपटायल फुफकार मारि रहल हो। ओ अपनो सँ बेसुध कंचन आ काँच जकाँ झकझकाइत काया के मलि-मलि क' मस्ती मे नहा रहल छलि। बेबुझ हिलकोर पर दहाइत बेकाबू यौवन जेना ट्यूब-लाइट मे थर-थराइत मर्करी हो।

सच मे आइ ओकर अपनो मोन काबू मे कहाँ छै? ओ डूबकी लैत अछि जरुर, मुदा तनमन गनगनाइए रहलै-ए। मने आइ यौवन पानि मे आगि लगा देने होइ। ओकर अंग-अंग आ पोर-पोर खद-वद...खद-वद क' रहल छै...ओइ पर सँ चन्दनक आगमन। चन्दन ध्यान मे अबिते ओ धड़फरायले अँगना आयल आ पायल रुनझुना उठलै।

चन्दन एतबे काल मे कछमछा उठल छल जेना एक दोसर के देखना युग बीत गेल छलै चन्दन सँ नजरि मिलिते ओ बिहुँसि उठलि।

''विभा! चाय देलहुन पाहुन के?'' चन्दन के ससुर बाहर सँ सोर पारलखिन तँ दुनू चौंकल आ विभा झट चौकी पर सँ उठि क' कुर्सी पर आबि गेलि, ''चाय अखन बनिते छैक बाबू...''

''चाय की बनतै? आ तोँ घर मे बैसल की करै छैं?''' आँय?' पिताक गोंहछल स्वर के चढ़ाव-कसाव बुझि विभा कोबरा घर सँ निकललि, मुदा चन्दनक फुसफुसेनाइ ओकर पछोड़ नहि छोड़लकै, ''जल्दी अबिहँ...''

आइ चन्दन के सासुर मे छठम दिन छै। अइ बेर त' ओकरा अइठाम सँ हिलै के एको-रत्ती मोन नै करै छै। ओकरा होइत छैक जे जँ ओ विभा के छोड़ि क' गेल तँ ओ बताह भ' जायत। ओ रुकल त' विभा द्वारे मुदा बहन्ना किछु आर छै। ओइ दिन ओ करीब एक बजे सासुर पहुँचल छल...सब खा-पी क' निसबद्ध रहैक। ओकरा भोजन काल पता लगलै जे घरवाली छथिन सोइरी मे...आ ई बच्चा? ने ई बखेड़िया बच्चा होइतै ने ई बखेड़ा ठाढ़ होइतै... आ ओकरा मोन पड़ि गेलै ओइ रतुका गप्प...सुतै काल ओ विभा सँ मजाक केने छल जे बहिन त' सोइरी मे छथि आ बाँचल एकटा अहीं छी...आ संयोग...कि कुसंयोग...जखन तीन बजे राति मे सिरमा मे आबि क' विभा जगोलक त' छातीक धकधकी थर्मामीटरक पारा जकाँ एकाएक बढ़ि गेल रहै



आ भगवती घर सँ मायक खखास सुनि क' विभो भालरि जकाँ काँपि उठलि...छल। ओकरा सब बात मोन पड़ैत गेलै...अही बेर ओकरा लागल रहै जे ई सासुर नहि इन्द्रासन छैक आ ओकरा रस-गंधक सरोबरि मे विभा डूबा देलकै-ए। आकण्ठ-निमग्न। आब ने ओकरा हेलै के इच्छा छैक आ ने उपर होइके ध्यान...ई सब सोचिते ओकरा हँसी लागि गेलै...

पायल रुनझुनबैत विभा चाय ल' क' आयलि...सेहो खियाल ओकरा नहि रहलै।

''इएह मुस्की... बिहुँसब त' हमरा कतल केलकै 'चन्दन' विभा बाजलि त' ओ फड़फड़ा क' उठल आ टकटकी लगौने विभा के देख' लागल, ''चन्द्रमुखी हमर! बाबूजी कहाँ छथुन?''

''बजार गेलखिन''

''त' आ'...अइठाम बैस।'' चन्दन ओकरा डाँड़ मे हाथ फँसा क' अपना दिसि घिचलक।

''हाँ...हाँ...चाय हेरेतै?''

''आ हम जे अइ रुप जाल मे हेरा गेलौ से?''

''अच्छा पाहुन एकटा बात?...

''की? फेरो पाहुन?'' आब जँ विभा ओकरा पाहुनक संबोधन दै छै त' ओकरा कटाह बुझाइ छै। चन्दन ओहि दिन मना क' देने रहै जे आइ सँ तोँ पाहुन नहि कहबें...नहि कहबे ने?'' से विभा जखन-तखन पाहुन कहि क' चन्दन के खौंझा दै छै आ चन्दन हाफु!

''हँ...हँ...पाहुन...पाहुन...एक बेर नै...सौ बेर कहबौ...''

''रुसि गेलै तइ सँ की''। विभा ओकरा एके सेकेण्ड मे बौंसा लेत, ''है! एक बेर इम्हर तकै त।'''

''तकिते छी कोम्हरो की'' चन्दन लोहछल अछि। ''हमर समान सब ओरिया दिहें भोरे हम चलि जेबौ।''

''अच्छा भोर मे नै जेबैं...अखन एक बेर हमरा दिसि ताक ने'' दुनूक नजरि एकठाम भेलै त' विभा मारलकि एकटा तिरछी कनखी...दुनू के हँसा गेलै आ चन्दन बौंसा गेल।

''बेस त' तों आराम करै...हम तोहर समान सब ओरिया दै छियौ...भोरे जेबही ने तों?''

''कत'?''

''कत' से त' तोहीं ने जनबें'' विभा उठले सुरफुरायलि त' चन्दन ओकर आँचर पकड़ि लेलकै, ''दाइ! जेबौ त' कुही होइत रहबें।''

''तोरा चैन भेटतौ ने'' देख चन्दन हम तोहर हर हकुम पुरबैत छियौ आ तो हमर एकटा बात नहि मानबें?'

''की?''

''सुनै काल्हि कोजगरा छै...फुलबारी मे सब बेर कोजगरा राति मे छौंड़ा सब नाटक खेलाइ छै...काल्हि ओ नाटक देख ले। परसू हेतौ आठम दिन...परसू कोइ जाय नै देतौ...आ चारिम दिन तोरा जे फुराउ से करिहें...कोइ रोकबो ने करतौ।''

''वाह!...वाह! गुड आइडिया! रानी के हुकुम शिरोधार्य...लेकिन शर्त एतबे जे नाटक देखैले' संगे जाय पड़तौ!''

कोजगरा रातुक पूर्ण चन्द्रमा जवानी सँ तनतना रहल अछि। फुलबारी के फूल सब यौवन-भार सँ विह्वल-वेकल औनाइत डोलि रहल छै...ओकरा गंध सँ आकुल-ब्याकुल बसात वातावरण मे झुमि रहल छैक...नाटक कखन सँ शुरु छै से एकरा सभकेँ कोनो पता नहि...ई दुनू स्वयं सँ निपत्ता भेल अछि अखन।

''चन्दन!''

''हँ विभा...'' चन्दन ओकरा गाल मे दाँत कटबाक उपक्रम करैत अछि।

''फेरो शैतानी शुरु भेलौ तोहर?''

''डकैती क' रहल छियौ की...आ इम्हर लग मे।'' चन्दन के निमंत्रण मे एकटा जादू छै...ओ जादू विभा के श्लथ केने जा रहलैए...तथापि ओ साहस केलकि, ''नै, इ सब अखन नै।''

''कोनो की हम खून क' देबौ?'' चन्दन बेसम्हार भेल जा रहल अछि...

''जे बुझही तों?'' विभाक स्वर लड़खड़ा रहल अछि...'' कोइ देखतै से?''

''पोखरि मे उमकैत कमल... ई चम्पा-चमेली आ रजनीगंधाक फूल...मस्ती मे चूर यौवनक गीत गबैत चान...ई इजोरिया राति...ई सब की देखतै?''

चन्दन के आलिंगन मे दाँत तर ठोर जँतने विभा कसमसा उठलि। एकटा चुम्मा लहकि उठलै आ चन्द्रमा के मेघ नुका लेलकै।



# कर्जखोर

आइ एक गते छै।

आ प्रत्येक महिनाक एक गते दासजीके मथटनकी शुरु भ' जाए छै। किए शुरु भ' जाए छै से तेकर कारण ने पत्नी, ने बेटा, ने दोस महिम...कोई ने बुझै छै आ दासो जी ककरो किछ किछु कहबो ने करै छै। आन-आन दिन त' दासजी खूब हँसत, खूब बाजत मुदा एक गते ओकर सब खुशी, सब उमंगके लकबा मारि दै छै। ओ मूड़ी निहुरौने आ झटकारने घर दिश बढ़ल जा रहल छथि— 'केओ कतौ देख ने लै' एहन भाव-भंगिमा सँ। गेट पार क' लेलक त' ओकर जानमे जान घुरलै ओ अबिते चिकरि उठल, ''सुनै छी।''

''की?''

घाम सँ लथ-पथ मुँह पर केश छिरिऔने, हाथ मे गिल आँटा लेभरल चुल्हि त'र सँ पत्नी आबि क' सोझा मे ठाढ़ भेलखिन, ''कहु...।''

''किओ हमरा खोज-पुछारी मे अबै त' कहबै जे घरमे नै छथिन, कतौ बाहर गेल छथि। आइ एक गते छै ने। प्रदीप तगेदामे ऐबे करत।'' आ ओ कोठरीमे आबि गेल देखलकै जे छोटकी बेटी कथुले' घेओना पसारने छै...छोटका बेटा कूद-फान क' रहलै-ए आ मांझिल आ जेठका पढ़ैक लाथे लालटेमक तेल फूकि रहल छलैक। ओ कपड़ा बदलि क' हाथ-पैर धोलक आ चाय पीबाक हेतु ओ घरवाली ल'ग आबि क' भनसा घर मे बैस रहल।

''दास जी।...दास जी यौ...''...केओ गेट पर सँ गद्दह केलकै त' घरमे घरवाली ल'ग बैसल दास जी आवाज सुनि क' एक बेर भालरि जकाँ काँपि गेलाह। 'अबैछी...या...के...छी' पुछितथिन से बकार मुँह सँ नै निकललनि किन्तु अनायासे पैर गेट दिशि बढ़ल चल गेल जेना 'नर्बस ब्रेक-डाउन' मे आदमी अनइच्छित के तरफ निशा मे बढ़ल चलि जाइ-ए।

दासजी के लगलै जे गेट पर मनुक्ख नै कोनो प्रेत ठाढ़ छै जे एक्के हबक्कामे ओकार गीड़ जएतै। ओ अकबका गेलाह कोनो उत्तर ओकरा ल'ग नै छलै। ओ धर खसौने रहल आ गडबडाइत मुँह स' एतबे बहरयलै, ''की यौ प्रदीप बाबू... की समाचार छै...।''

आगन्तुक प्रदीप छल। परोपट्टाके नामी धनिक... नामी बदमास... आ नामी दोकानदार। दै कालमे हँसिक' उधारी दै छै आ लेब' कालमे चाम सिसोहि क' असूल क' लै छै।

अचानक दासजी के सब किछ बिसरा गेलै। अपन अस्तित्व...प्रदीपक प्रेत...अन्हारमे डूबल गेट...सब किछु आ ओकरा दिमागमे एकेटा बात रहि गेल जे या त' मध्यम श्रेणीक ओ व्यक्ति अइ 'जगह' के नै अछि...आ कि प्रदीपक प्रेत अइठामक 'जीब' नै भ' सकैए...की ओ दुनू अइठामक 'सत्य' अछि। मुदा अइठामक सत्य मात्र एतबे छै—कर्जा आ कर्जखोर... प्रदीप आ दासजी... अनगणित... असंख्य।

प्रदीप साइकिल लगा' क' गेटक एक सीढ़ी आर चढ़ल, ''आब बाजू जे कहिया हमर पाइ देब।''

ठोंठ पर सवार प्रदीपके अपना प्रयास स' हटब' चाहलक दासजी—'देखू प्रदीप बाबू विलम्ब त' जरुर भेल...मुदा अहाँ अइ बातक पक्का भरोस राखू जे जा धरि हमरा साँस रहत ताधरि अहाँके पाइ नै बुड़त। भ' सकै-ए किछु आर लेट हो मुदा...हम आर किछ भ' सकै छी लेकिन बईमान नै। नेत मे हमरा खोंट नै अछि...से विश्वास जरुर करु।'

लेकिन प्रदीप आइ दासजी के कोनो बहाना नै सुन' चाहैत अछि...आब कनियो विश्वास नै भ' रहल छै। बहन्ने सँ टारैत आइ ओकरो पाइके दू साल सँ' उपर भ' गेल छल। कहिया दासजी दोकान शुरु केने छल। ओही समयमे प्रदीप ओकरा 590 रुपैयाक समान उधार देने छलै जे अहाँ समान बिक्री क' क' हमर पाइ घुरा देब...फेर एकटा लेब...एकटा देब...किछु दिन ई क्रम रहबो केलै मुदा बेसी दिन नै। अचानक पार्टनरके रसमिजाजी सँ निरन्तर दोकानमे घाटा होम' लगलै आ अन्ततः खिसिया क' दोकानक ढढर खसा देने छल दासजी। कहाँ त' दासजी के मोनमे ई रहै जे दोकानक आमदनीए सँ कोनो तेसर काज सपरत आ कहाँ...आइ ओही पाइ के तगादामे प्रदीप दू साल सँ अबैए आ दासजी के अवस्था...बोली आ बिचार अथवा बहन्ना जे कहियौ



ओ अबैत रहल...जाइत रहल।

''देखु दासजी, अहाँ ले' एते पाइ कोनो बड़का पहाड़ नै छै...कनियो ध्यान देबै त' इन्तजाम भ' जेतै हमरा बेसी हरान नै करु...पाइ त' हमर असुल भ'ये जैत... आगामी एक दू गते धरि कोनो इन्तजाम क' क' हमरा भेट जयबाक चाही...'' आ साइकिल उठाक ओ बिदा भ' गेल।

अंगना अबैत मांतर दासजी घरबाली पर बमकि उठल, 'गदही हाक देलकै त' नै बुझलियै जे की कहबा अछि... से नै त' लालटेन लेस क' हमर मुँह देखैत रहती, 'टरका' नै भेलैन। हम त' तंग आबि गेल छी...एक आदमी कमैनिहार आ नौ आदमी हुरनाहर...की करबै...चोरी...बेइमानी...हमरा बुते पार नै लागत...घरक कोनो खर्चमे कटौती नै भ' सकै-ए... तखन कटि क' मरि जाउ हम? अन्ट-शन्ट जे मुँहमे अबैत गेलै दासजी उगलैत रहल। फेर ओ फुच-फुचाएले उठि क' आयल आ बरामदामे राखल चौकी पर चितंग भ' गेल... बच्चा सभक पढ़ाइ-लिखाइ...अन्न-बस्त्र, दवाइ-दारु...पावनि-तिहार...मकान भाड़ा...कोन मदमे ओ कटौती करोअ...आ धान जकाँ अपने-आपके खोंटैत रहल दासजी। अनायास ओकरा दिमागमे सुरसुरी उठलै जे ककर-ककर कते पाइ कर्जा छै ओकरा उपर...उठिक' कागज-कलम निकाललक आ फेर एकटा फेहरिस्त बनौलक—ध्रुवजी 1500, गोपाल तकिया, जाजिम, चादर वीरेन्द्र 500, उमाशंकरजी 400, प्रदीप 590, हरिशंकरजी 1700 लगभग, सुरेन्द्रजी 168, विनयकुमार 168, हरिचन्द्रजी 1000, सितवरी साहु 500, दीपु 100, दवाइवला 500, वापरे... आर बेसी ओ गिनती नै क' सकल। एतेक रिनियां महाजन कपार पर रहितो ओ इएह सोचैत अछि जे पाइ भेला पर सबके आपस क' देतै... ऋणमुक्त भ' जाएत ओ। लेकिन कहिया धरि...कोनो बाट नै भेट रहल छै। ओ जखन-जखन असगर रहैत अछि त' एतबे बात सब ओकरा मोनमे घुरछियाइत रहै छै, ऋणक महाजालसँ कहियो निकलि सकत कि नै...मुदा प्रत्येक महाजन सब ओकरा गिद्ध बुझाइ छलै जे भोर-साँझ ओकर देहक मांउस आ ड्योढ़ीक माटि खखोरि लेबाक फिराकमे लागल रहै छै आ कोनो महाजन ओकर विश्वास नै करै छै। किए नै करै छै बिश्वास? ओ लुच्चा-लफंगा त' नै अछि जे ओकर बातक कोनो 'भेल्यू' नै छै? आ बातक भेल्यू नै रहने आदमिएक कोन भेल्यू रहि जाइत छैक? ओ ई बात नै बुझि सकल जे अइ ऋणक खोहमे सब एकरा निश्चिंत भ' क' किएक नै रह' देब' चाहै छलै?

ओकरा आब अकच्छ लगलै साथे आत्मग्लानि सेहो भेलै...। भेलै जे भागि जाइ...अइठाम सँ। त' कि भागि-ए जाइ आ एकटा ठोस निर्णय ल' क' ओ सुतल पत्नीके उठौलक, ''सुनु एखन एगारह बाजि रहल छै... ठीक चारि बजेमे हमसब चलब।''

''कत?'' औंघाइत पत्नीक अलसायल स्वर रहैक।

आ जखन करीब 7 बजे भोरमे अपन मोटरी-चोटरी बाल-बच्चा समेटने ओ इमली गाछ तर बैसल त' एकटा बड़ पैघ निसास ओकरा मुँह सँ बहरयलै, आब तकैत रहथुन दासजी के ओ ओइ परोट्टाक सिमानसँ बहुत दूर निकलि गेल छल।



# रामपरी

जाड़ एकदम जुआ गेल अछि। तैयो हम आइ कनकनी मे पत्र लिख रहल छियौ। मोन नै मानलक हमर आ तोरा गेलो त' अइठाम सँ बरखक धक लागि गेलौ। जाधरि तों एहिठाम छलैं ताधरि मोनक बात कहि क' जी हल्लुक क' लैत छलौं...आब त' सेहो सपना भ' गेल। आदमी कतेक विवश होइत अछि...जीअ' ल' सेहो...मरैले' सेहो। से जँ नहि होइतै त' हम अखन धरि जीवैत रहितहुँ?

तोहीं कहै, कतेक बेर तों हमरा बुझा देने छैं, जे मनुक्खकेँ वर्तमाने मे जीअक चाही। अतीत आ आगत लोक के कोंढ़ तोड़ि दैत छैक। सेहो तोहीं कहने छलें। आइ हम फेर तोरा सँ पुछैत छियौक जे जँ वर्तमाने पिजुआ गेल होइ त' आदमी साँस ल' सकत? जी सकत ओइ मे? हमरा त' बुझाइए जे वर्तमान ई दर्द आ अइ तनाव मे हम मांटिक ढेप जकाँ छन-छन गलि क' गुड़कि रहल होइ...आ तोहर पीठ हँसोथनाइ कहियो बिसरब हम? संगी ओहने अवस्था मे लोक सहारा खोजैत अछि। अइठामक लोक केहन थुत्थुर अछि से त' तों जनिते छैं? हमरा ल'ग हमरा सन...तोर ल'ग तोरा सन...मुँह देखौअल बात। आ घरक लोक केँ तों नीक जकाँ चिन्हतें' छैं'। हम त' एतबे सोचैत छी जे कारी-गोर भेनाइ कि लोक के अपना हाथ मे छैक? आ कि कारी आदमी के 'जीअक' मोन नहि होइत छैक?

परुका सालक बात त' तोरा मोने होयतौक? तोरे सामने हड़-बिर्रो मचल रहै? तों ओकरा कोना बिसरि सकैत छैं'? आ हमरा पर त' पहाड़े उनटल छलै? ओइ दिन कथिले? इएह ने जे हम कनी बेसी राति धरि दुर्गा ओइठाम गीत लिखैत रहि गेल छलौं आ हमरा पहुँचाबैले' टूना भाइ आयल रहथिन। तों तखन

हमरे आँगन मे छलें' देखने रहुन कि ने...कोना हमरा देखिते सब झाउँ-झाउँ क' उठल रहै। जेना हम...हम नहि कोनो अजगुत चीज रहल होइ...हमर देह-मोन त' सब दिनक घच-फच सँ सक्कत अछिए। इएह सोचैत छलौं जे सतमाय-कठबाप बड़ दुख दै छै मुदा, अपन माय-बाप! एतेक कठोर! कोखिक जनमल- केहनो रहौ, कारी-गोर,लुल्ह-नांगर,घोघाह-कनाह,आखिर होइ त छै अपने कोखिक जनमल ओ संतान।

तोँ कनी सोचही ने हिनकर सभक ब्यवहार! हमर बियाह नहि भ' रहल अछि...कोनो लड़का ठीक नै होइत छैन त' अइ मे हमर कोन दोख? एक बेर कोनो गाम सँ...गामक नाम याद नहि, खवासनी आयल छलि सेहो त' हम तोरा कहने छियौक। वीरपुर सँ हमर पीसी के बेटी आयल छलि ओकर बेटी चन्द्रमा मड़वा पर बैसल रहै से ओकरे सब देखा दै गेलै...बाद मे एहन-एहन बात सब कहुँ छपित रहै छै... ? के ने के खवासनी के लुतरी लारि देलकै कि सब भण्डे फुटि गेल मुदा तोरा सप्पत...हमरे सप्पत ई बात सब ककरो भनक नै होइ नहि त' हम बदनाम भ' जायब। नहि जानि किएक तोरा सँ कोनो बात हम छपा नहि पबैत छी...कि जाने?

सखी! ओ दिन तोरा मोन छौक? जहिया भरि लोहिया उधियाइत दुध हमरा पैर पर उझिला गेल छलैक आ हम बफारि काटि क' बेहोस भ' गेल रही...हम कोना बिसरब तोहर ओ उपकार। भरि-भरि दिन तों हमरे ल'ग बैसल रहैत छलें'...तोरे हाथे हम खाइत छलौं...तोंहि दबाइ लगा दैत छलें'...सहोदरे छलि ने चंद्रा...एको पाइ दरेग भेलै जे दीदी के पैर झरकि गेल छै...कोना कोनो काज क' हेतै...हमही क' लै छी...से कथी? जखनो नीक रहैत छी तखनो सब काज कर' पड़िते अछि आ ई समंगटुटी कथिले आँगोसमांग मे बाँहि पुरत? ओ त' हमरा स' ओढ़ाउढ़ करत...फटीदारी करत। ओना माय-बाबू से ओकरे मानै छथिन। लोक जे माने बुझौ...हम त' इएह बुझै छी जे ओ गोर अछि...नाक सेहो ओकरे ठाढ छै आ आँखि त' साँचो नम्हर-नम्हर छैक छौंड़ी के आ हमरे की अछि? लोक लाख कहै जे कनाहि अछि...कारी अछि...पचीसटा ऐब किएक ने जोरोअ...मुदा आँखि बला सँ कनि बेसिए देखैत छी हम। लेकिन नै? लोक के चाहिएक आँखि...भले ओइ आँखि मँहक सब लाज-बीज चूबि किएक ने गेल होइ...आ बहिना सब करमक दोख! से जँ नहि होइतैक त' सूर्यमुखी कनाहि किएक होइत?...ई सब बात तोरा गेलाक बाद के अछि। भेलै



ई जे ओइ दिन चुल्हा पर दालि घोटैत रही कि टाटक करची...जेना हमरे ले राखल रहै ओरिया क'...आँखि मे गरिए ने गेल कच्च सँ। बस तइ दिन सँ सूर्यमुखी कनाहि।

अपना मोनक बात तोरेटा सँ त' कहैत छियौ...दोसर ककरा कहबै? श्यामा अछि त' ओकरा कोनो बात पेट मे पचबे नै करैत छैक...मंजु के गोपाल सँ छुटिए ने कहियो...आ रहिगेल बहिनपा...तोरा सँ कोन बात छपल छैक? बहिनपा के अपने कोन कम बिपत्ति भगवान देने छथिन? बेचारी! भरि-भरि दिन ओ डाकपीनक बाट तकैत रहैत अछि। कोनटा सँ सटल। मुदा भगवान नीक नै करथिन, ओकरा छोरहिं के मोन रहै त बियाहे बेकार केलक कि? आब सुनैत छियैक जे नेपाल मे कोनो ठाम पेट-पोसिय करै छै।

के ने जायत छैक। काज-उद्यमक आँगन मे बेर-अबेर होइते छैक। ओइ दिन बच्चा भाइ अंगना सँ पूजाक हकार आयल छलैक। हम बहिनपा,श्यामा सब गेल रहियै हँकार पुरैले'...से ओइठाम गीत गबैत-गबैत लेट भ' गेल छलै आ तइले' हमरा घरक लोक दुर्गति क' देने छल-छौंडी उढड़ि जेतै कहियो...कि इएह एकटा गीत-गाइन छथि...कि एकरा साँपो-कीड़ा ने कटतैक जे पिण्ड छुटितै लोकक। तोहीं कहै,लोक कतेक सबूर करत?

आ से जखन हमरा बरदासि सँ फाजिल भ' गेल त एक जे अबैत से लिच्ची-गाछी मे पाथर सँ पैर ठोकर लागि गेल छल से आंगूरक पूरा नह ओदरि गेल रहै। मोन त' ओहिना बिसबिसा रहल छल। अंगना मे अबिते भैया कहलखिन-जलखै ला...' चन्द्रा नहि उठलै...हम कनी आँगूर सँ खून पोछ' लगलौं। जलखै मे देरी भेलै त' भैया हमरे पर बमकि उठलखिन। हमरा त' कहै छियौ सौंसे देह फोंका उठि गेल, ''अहाँ सबके हमर धुआ नहि देखल जाइए त' एके बेर कण्ठ दबा दिअ'...'' तों ठीके कहने छलें' जे बहीर जोर सँ सुनैत छैक...

आब कहिया तोरा सँ भेंट हैत आ हमहीं कोन गति-पति मे रहब से के जनैत अछि? तेँ सोचैत छी लिखहे बैसल छी त' मोन पारिक' सब बात...सब गप्प कहि सुनि ली। तोरा त' बुझले छलौ...हमरा पढ़बाक कतेक स'ख छल। आब त' मोने मरि गेल त' स'ख-सेहन्ता कथिक? से अहु पढ़ै वास्ते जे धुक्कम-फज्जति भेल छलै से आबो जँ हमरा मोन पड़ैए त' गड़ाबकोड़ लागि जाइत अछि...लिखते-लिखते भैया बला कलमक नींब हमरा बुते टुटि गेल

रहैक। ओइले' माय-जकरा कोखि सँ हमर जनम भेल अछि...तेहन समधानल मुक्का गरदनि पर मारने छल से ओइ मुक्काक चोट अखन धरि कतौ बाँकी अछि। ओहि दिन हम अपन करची कलम तोड़ि फेकलौं आ हमर आठ क्लासक किताब खुट्टी पर टांगल अखनो जखन तखन हमर मुँह दुसि दैत अछि।

आर समाचार कोनो खास नहि। श्यामाके कतेक ठाम सँ कथा अबै छै लेकिन अखन धरि कतौ ठीक नै भेलैए आ बुचिया त' एकेटा फकरा घोसैत अछि जे हम बियाहे ने करब। किएक? से त' वएह जनतै। ककरो सँ प्रेम-त्रेम छै कि? अइ बेर जकरा-तकरा बच्चा भेलए सबके बेटी।

हँ एकटा बात आरो मोन पड़ल। तोँ जे चिट्ठी आ समाद कन्त मार्फत पठौने छलें' से चिट्ठी त' देलक आ मुँहझौंसा समाद कहिते ने छल। छौंड़ाक ई कोन बानि छै से नै कहि? किओ कोनो बात के चिट्ठी-पतरी देतै त' आधा कहत आ आधा पेट मे गारि लेत...औना क' छोड़ि दै छै लोक के। बहुत गोहरबैत-पोल्हबैत तखन जा क' कहलक तोहर समाद। गुह-गारन छै छौंड़ा। खैर, तों अपन समाचार लिखिहें' कोना रहैत छैं? असगर मोन लगै छौ कि नै? कोनो ठाम चर्चा-बर्चा होइछौ कि नै? अइ बेर त' तोरो पढ़ाइ खतम भ' जेतौ शायद...सब बात फरिछा क' लिखिहें'। हमरा गाम मे एकटा मास्टर बदली भ' क' एलै-ए। ओ कवि छै कहाँ दन। गीतो लिखै छै आ गेबो करै छै। से ओकरे लिखल आ गाओल गीत अखन अइठाम खूब चलल से लिख रहल छियौ।

*''अनचिन्ह आँगन मे रहबै कोना हम*
*कोना क' बहिन के बिसरबै यौ भैया।।*
*बचपन के संगी छुटल संग-साथी*
*देखाओत के आँचर सँ झाँपि साँझ बाती''*
*किछु दिन त' रहतै उदासी भवन में*
*दरबज्जो पर कनतै बन्हल कारी गैया*
*कोना क' बहिन के बिसरबै यौ भैया।।*
*जनम देल जननी पोसलखिन जे बाबू*
*भौजी अहुँले हिया अछि बेकाबू*
*पिताजी आ भैया अपन भार बुझिक'*
*हमरा बेचलखिन ओ गनि रुपैया*



*कोना क' बहिन के बिसरबै यौ भैया।।*
*बीतल बेर जल्दी करु कहि डेराओल*
*नगर भेल निर्मम जे महफा चढाओल*
*बिधाता कथिले' तों बेटी बनौले'*
*बहय नोर झर-झर छुटल नगरिया*
*कोना क' बहिन के बिसरबै यौ भैया।।*

रामपरी, तोरा गामक बटगमनी बड़ बढ़िया होइत छौक...एक-दू टा लिख क' पठबिहे। बिशेष बात दोसर पत्रमे। आब मोमबत्ती सेहो लगिचाइ पर अछि आ राति सेहो मने एक-दू सँ कम नै होइत हेतैक!

बेस त' आब आज्ञा दे।

'तोरे सूर्यमुखी'

**( 28.8.76 )**

# अस्तित्व

''सवाल ई उठै छै जे तखन जाएत के?''

''हमरो त' सएह कहब अछि...''

''हँ, रहनाइ त' एक आदमी के जरुरिये छै...''

''मुदा के?''

इएह एकटा विकट प्रश्न छलैक आ श्री कान्त, शशिकान्त, आ सुधाकान्त तीनू भैयारी ओही प्रश्नक महाजाल मे ओझरायल छल, जहिया-जहिया तीनू भाइ गाम अबैत अछि त' एक बेर क' अइ विषय पर घोंघाउज अवश्य करैत अछि, अहू बेर फगुआ मे अपना-अपना घरवाली आ बच्चा लए सब भाइ अलग-अलग कपड़ा-लत्ता अनने छल...मुदा माय लए ककरो जेब सँ पाइ नहि बहार भेलै त' हारि क' बुढ़वा अपने एकटा पढ़िया साड़ी किन क' आनि देने छलैक, अखन त' बुढ़वा अपने कमाइत अछि...कुबगर अछि, मुदा पौरुख जेतै तखन पुछतै बेटा सब? साड़ी के पीअर रंग मे रंगैत तीनू सहोदर देखलक आ तीनू एक दोसरक मुँह देख' लागल...बुढ़वा जेना एक-एक झापड़ तीनू के लगौने छल।

पहिने श्रीकान्त मुँह खोललक, ''जरुरी छै त' विचारि क' एकटा निर्णय करै जो जे की होयबाक आ करबाक चाही? लेकिन अइ पुरान बातक विचार-विमर्श होइते रहतै...पहिने शशिकान्त। एकटा खस्सी हम फगुआ वास्ते मोला लेने छी...पाइ दइ जेबहक तखन ने फगुआक आर सरंजाम हेतै...

''पाइ त' आबए काल हमरा देलक नहि...हम त' दोसरे सँ सापटी ल' क' एलौं अछि...''

''ओते महग खस्सी ल'क' की हेतै भैया...'' सुधाकान्त बाजल, ''एक दू किलो माँछे आबि जेतै तैयौ बिध, विसाइन भ' जेतै...''



''ऊँटक मुँह मे जीरक फोरन...नहि? एगारह आदमीक आश्रम आ एक दूसेर पोठी-कबै'' अन्ततः पाइ धरि ककरो टेंट सँ बहार नहि भेलै, आ तकर कारण छलैक, सब भाइ अइ बेर मोन-मोन गूड़ चाउर फाँकि रहल अछि, अपना-अपनी क' तीनू भाइ नेयारने अछि जे अपने घरवाली के ल' जायब... श्रीकान्त चारु बापुते नेपालक कोनो प्रदेश मे रहि क' काज करैत अछि, बाप अपने जमाना मे किछु जमीन जमीदार सँ सालाना किश्ता मे ल'क' घर बनौने छलथि, सभक आमदनी सँ छुच्छ-रुक्ख कोनो धरानिए!'' बुतात चलैत छलैक...गाम मे घराड़ी छोड़ि भांग-बथुआ किछु नहि छल, यैह कारण छलै जे कोनो भाइ कि बुढ़ा गाम अबैत छलाह त' इच्छा रहितहुँ दस दिन सँ बेसी गाम-घर मे नहि रहि सकैत छलाह...जे पाइ-कौड़ी रहैत छलैन से दसे-दिनक बेसाह मे उड़ि जाइत छलैन...अगर कही एक-दू दिन बेसी रहि-जाइत गेलाह त' जायबला भाड़ा सेहो खर्च भ' जाइत छलै आ फेर ककरो सँ सुदिए पर भाड़ा-खर्च लेल जाइत छल।

ओइठाम कोनो नौकर त' रखने नहि छलथि भानस-भातक सब काज अपने कर' पड़ैत छलैन मुदा जखन ड्यूटी सँ हारल-थाकल तीनू भाइ आपस अबैत छल त' मोन त' लोहछल रहिते छलै आ तखन जे चुल्हा फूक' पड़ै...चाउर फटक' पड़ै...हरदि पीस' पड़ै त' मोन आर धधकि उठै, अबिते-अबिते पहिने दालि-भात बला हंडी के तामसे दू-चारि लात लगा अइ कात सँ ओइ कात ढनमना दैत छलै आ माँड़ पसयबाक बेर मे त होइ जे इएह बरकल माँड़ थोड़े बुढ़ा के कपार पर आ थोड़े-थोरे अपना कपार पर ढारि ली...नौकर रखबाक कोनो प्रश्ने ने छलैक आ सामर्थ्य रहितै त सब गोटे होटले मे किएक ने खाइत?... से श्रीकान्तक नजरि मे तकर एकेटा विकल्प रहै जे गाम सँ ककरो मंगा लेल जाय...माय त' बुढ़ छलखिन से...ई तखुनका गप्प छैक जखन घर मे सिर्फ श्रीकान्तेक बियाह भेल छल...तेँ अपने घरवाली के अनबाक सेहन्ता हुनकर रहैन।

कहियो दालि असिझ...कहियो तरकारी मे नूने-नून...कोनो दिन हरदिए उझिलल...त' कहियो भाते कुचराह...बुढ़ा एक दिन देखलनि... दू दिन देखलनि... आ देखैत-देखैत सहाज नै भेलैन त' एक दिन ओ बमकि उठलाह, ''तोँ सब त' पठ्ठा जबान छैं... अँतरी मजगूत छौ... केहनो भकोसि लेबय त' पचि जेतौ... लेकिन हमरा ओ पचत?... बरु, हमर सिधे ने लगबै जो।''

किन्तु बातक कनियो-कोनो असरि नै भेलै ककरो ? उनटे ओ सब आरो बेपरवाह भ' गेल, बुढ़ा खाथि या नहि... खेलहा पचौन वा नहि... सिज्झ... अनून... कुचराह... कथूक परबाहि नै... हारि क' बुढ़ा के कह' पड़लनि श्रीकान्त के जे मंगा लहुन कनियाँ के मुदा हुनका आन्तरिक मोने स्वीकार नै छलैन जे कुल-पुतोहु परदेश आबि क' रहथि, शहरक बात-बिचार... बातावरण गाम-घर जकाँ थोड़बे होइत छै, गाम-घर मे त' लोक एक साँझ उपासे अथवा नूने-रोटी पर निमहि जाइत अछि... लेकिन शहर मे त' से कतेको कारणवश संभव नहि होइत छै।

...एतुका टीमे-टाम अलग-अजब...दोसर, जँ घरक कनियाँ-नवकनियाँ बाहर शहर मे मुँह उघारिक' चलती...बुलती से बुढ़ा के एको-रत्ती पसिन नहि, पुतोहु अगर सब सँ हँसिए-बाजि लेलनि त' घरक मरजाद की रहल ? श्रीकान्तक घरवाली एत' आबि गेलखिन, आ आबि गेलखिन त' बुढ़ा के छोड़ि सभक निसास फक्क द' छुटल... आब नीक भेल... बर्तन-बासन... भानस-भात सब किछु सँ कात...सब झंझटि सँ फराक...एकदम स्वतंत्र...मुदा छओ महिनाक बादे कनियाँ के गाम पहुँचाबय पड़ल, नीक भेलै...बुढ़ा सोचलनि...एक त' प्रथम कल्याणक योग...दोसर...दोसर बात त' जे अपना देह मे भिजैत छलैन... ककरा कहथिन ? गलती त' अपने छल जे कनिया के गाम सँ अनबाक आज्ञा देने छलखिन, पुतोहु के सब सँ हँसनाइ-बजनाइ-सँ खरीद फरोख्त...अनचिन्हारो सब सँ बाजब-भुकब...बुढ़ा के एको-रत्ती सोहन्ता नहि छलैन...लेकिन बजितथि की ? मोने-मोन पित्त घोंटि क' रहि जाथि... श्रीकान्त के एक-दू बेर इशारा सँ कहबो केलनि...लेकिन रंग एहन पकिया छलै जे दोसर कोनो रंगक असरि कनियो नहि भेलै...आ बुढ़ा फुचफुचा क' रहि गेल छला।

बुढ़ा वरण्डा पर राखल सन्दूक पर पड़ल छथि...आ अँगना मे पटिया पर बैसल तीनू भाइ चाउर-बदामक भूजा जलखै क' रहल छल, पुन: सुधाकान्त साहस करिए, ''अपना सबके ककरो फुरसति नहि...आब ई उमेर मे बाबू भानस मे बैसथि सेहो ठीक नहि...'' ओ श्रीकान्तक मुँह तकलक, ''अइ बेर ककरो नेने जइतियैक ?''

''लेकिन जाएत के ?'' श्रीकान्त फेर गेन के ओम्हर गुड़का देलक...

''अइठाम चारि-चारिटा स्त्री-गण अछि...ओइ मे सँ ककरो ल' गेनाइ अहाँ सब के उचित नै बुझा रहल अछि ? हद् भ' गेल...' शशिकान्त के थम्हल



नै गेलै, ''मौगी सब अइठामक माटि भोम्हरैत रहोअ...आ कमौआ सब ओत' हाथ पैर झरकाओत ?''

''से त'...कए, दू, तीनक गिनती सबके अबैत छै'' श्रीकान्त सन्दुक दिस आँगूर देखौलक, ''सब सँ विचार-विमर्श क' लै जो जेकर गेनाइ उचित आ नीक हेतै...''

''बश...बड बेश...करैत रहू घमर्थन...हम अइ बेर माय के नेनहे जेबै...''

''माय ले आइ कोन दरैगक उद्रेक होइत गेलै बुढ़वा सन्दूक पर पड़ल-पड़ल एकदम साकांक्ष भेल...कान खढ़िया जकाँ ठाढ़ भ' भेलै।

''लेकिन माय के गेनाइ ठीक नहि हेतै...एक चोत गोबरो आनि क' के दैतै एकरा सबकेँ...'' श्रीकान्त बाजल।

दुनू भाइएक बात सँ शशिकान्तक मोन लहरि गेलै, 'माय जेतै' से की कहि देलकै सुधाकान्त ? ओ मूड़ी उठौलक त' ओकर लाल-टेस आँखि देखिते सुधाकान्त सहमि गेल, 'गलती भ' गेल' से ओ अपन जी कूचि क' स्वीकार क' लेलक, फेर दुनू भाइ श्रीकान्तक मुँह ताक' लागल, ''तखन आब अहीं बाजू जे के जाएत ?''

आन खन त' भैयारी जकाँ एको-रत्ती बुझाइते नै छैक आ अखन बाबू के बाद अहीं छी से कहि क' पोटए चाहैत छैक ओकरा, ओ सम्हरल, ''देख बौआ। जे कोइ परिवार ल' जैहें, से अपना-अपना बल-बुता पर ल' जाइ जैहें...आ आब फगुआ बादे ने कोनो ठोस निर्णय हेतै ?''

असल मे श्रीकान्त अपना घरवाली सँ कनफुसकी करत से दुनू भाइ बुझि गेल, सही बात त' ई छलै जे ओ दुनू सेहो अपन-अपन घर वाली सँ मंत्रणा कर' चाहैत छल, सुधाकान्त सोचैए जे अपना मुँहे अपन घरवाली के नाम कोना कहियौ ? शशिकान्तक धुक धुकी बढ़ि गेलै जे सुधाकान्तक घरवाली के जाइएक बात उठतै त ओ कोन आधार परि नहि कहतै...आअपन घरवाली के ल' जा सकत।

राति मे श्रीकान्तक घरवाली कहलखिन जे दुनू छोटकी अइठाम रहती त' की हर्ज ?

''अहाँ नहि बुझलियै ?'' श्रीकान्त बाजल ''ई सब गुण्डा अछि...अहाँ के नहि बुझल अछि तैं...सुधाकान्त कहाँ दन बाबू के कहैत रहैन जे छोटकी भौजी जाइथ त' बढ़िया...हुनका भूत-प्रेतक शिकायत सेहो छनि...असल मे

मोन छै ओकर जे अपने कनियाँ के ल' जाइ...''

''तखन... ?''

''किछु नहि...बाबू के पेट मे घुरछी-करैत रहैत छैन...ओ किन्नहुँ नहि चाहथिन जे कोइ अपन परिवार के ल' जाय...''

''किछु विचार नै करै जायब त' कोना हेतै...सब सँ बेसी त' अहींके ड्यूटी अछि?''

''देखियौ की होइत छै?''

फगुआक दू दिन बाद श्रीकान्त कतौ जा रहल छल...कि पाछू सँ सुधाकान्त गद्दह केलक, ''भैया कने एम्हर अबियौ त'...''

''की...''

''की विचार भेल अहाँ सब भाय के?'' बुढ़ा पुछलखिन, ''के जेतीह?''

''अहाँ जकरा कहबै सएह जाएत...''

बुढ़ा शुरुये सँ एकर सभक घमर्थन देख रहल छलखिन, लेकिन अखनो कोनो निर्णय नहि भेल छलै से बुझिते ओ बमछि उठलाह, ''आइ कते दिन सँ तोरा सभक ताल-मात्रा देख रहल छी... मुदा मोनक बात कोइ ने उगलै छै... आ जे बात तोरा सभक मोन मे छौ से हमरा जीबैत... पूरा नहि होइ जेतौ... हम की नहि जनैत छी... सब अपना-अपना घरवाली के ल' जाइले बेहाल छथि...किन्तु हम देख चुकल छी...मोनक बात क्यो खोलता नहि...क्यो नहि जेतै घर सँ...भानस करबे त' करिहें...नहि त' भागि जैहे, हमरा घर सँ...शैतान सब नहि तन...परिवार के छिन्न-भिन्न कर' चाहैए ई सब...''



# सुनगैत करेज

महेशवा छड़पल आ एकटा आम गाछक दूकन्हा पर सुटकि गेल। सुटकि गेल त' निश्चिन्त भ' गेल। फेर ओ पैंट मे सँ...पैंट मे बटम लगयबाक जगह पर ओ चक्कू सँ भूर क' देने रहैक ओही भूर मे सँ ठुट्ठा बीड़ी निकाललक आ डोराडोरिक फुदनाबला गिरह ओइ भूर मे फँसा क' दहिना कात घिचलक...पेंट डाँड़ मे कसा गेलै। तखन ओ किताब सँ काठी आ सलाइएक खप्पा निकाललक आ आब ओ बीड़ी धुकि रहल छल...मस्ती मे गुनगुना रहल छल। सूर्य भगवान ओम्हर ढरैत गेलखिन।

''महेशवा...रे, रे...महेशवा...आ...आ...आ...''

देह-हाथ कोकड़ियाकए छौंड़ा आरो गाछ सँ सटि गेल। कहीं देख लेतै त' ओ सब पकड़िक' मंगनी मे ओकरा मास्टरजी लग ल' जेतै आ मास्टरजी ओकरा अधमौगति क' देथिन...चारि-पाँचटा छौंड़ा चटिया सब छलैक...ओ सब हाक द'क' आगू बढ़ि गेलै...दूर चल गेलै त ओ उतरल...गाछी मे टहलि-टहलि क' ओ गीत गबैत रहल...दूर-दूर धरि पसरल आमक गाछ...महुवा, सिसो आ जामुन गाछक कतार...हरियरी, चिड़ै चुनमुनीक चूँ...चूँ...ओकरा स्कूल सँ बेसी रमनगर लगैत छैक। खा क' त' महेशवा स्कूले बिदा भेल छल...मुदा कोन उमकी मोन मे उठलै जे ओ गाछी दिस बहटि गेल...आ ई उमकी ओकरा महिना मे उठिए जाइत छै आ ओ गाछी दिस लए जाइत छैक...हाथ पकड़ने...जबर्दस्ती घिचैत, मुदा ओकरा कचोट होइ। जँ कोइ साथी भेटितै ओकरा? मुदा तइ सँ की? ओ ओही निर्जनता सँ बतिया लैत अछि। ओकर निर्जनताक साथी छै...वएह गाछ...चिड़ै-चुनमुनी...कचबचिया...हरियर-हरियर जजाति...लहलहाइत खेत आ जखन स्कूल सँ घुमबाक बेर होइ छै त'

फेर कहि क' ओ चल अबैत अछि।

से आइयो जखन ओकरा हिसाब सँ चारि बाजि गेलै त' ओ किताब-कापी काँख तर दबने अँगना पहुँचल। महेशवा के देखिते ओकर माय पुछलकै 'आइयो स्कूल गेल छलही कि कतौ... 'बाजे ने मुरलिया रे' होइत छलै?

''तोरा कहियो विश्वासे नहि भेलौ?''

''त' चटिया सब अंगना आयल छलौक से?''

''वएह सब त' पकड़ि क' ल' गेल आ...आ बस्ता राखि क' ठाढ़ छल... जकर माने छलैक जे महेशवा पढ़ि क' आयल अछि...ओकरा आब बेढटिया चाही। माय साँझ देखा रहल छलीह। भीत पर एकटा माँटिक पूतरी बनाओल छलैक 'दीपोदाइ' दीपोदाइएक एकटा हाथ माथ पर आ एकटा हाथ आगू पसरल। ओही पसारले हाथ मे दीप राखिक' ओकर माय खाय ले देलकै— 'तों खा क' मटिया तेल ल' अनिहें...हम अबैत छी।

महेशवा हबर-हबर खा क' पाइ लेलक आ बोतल उठौलक...ओकर आँखि चमकि उठलै...इएह मौका छै...महेशवा चाउरक पथिया सँ चाउर ल'क' पेंटक दुनू जेबी मे कोंचि लेलक।

भोरमे माय भानस घर दिस बिदा भेल त' पथिया के चाउर झुझुआन लगलै। ओ नपलक...चाउर कम त' रहबै करै। ओ त' नापि क' रखने छलि। धुर! ओकर मोने पपाह अछि...लेकिन मोन नहि मानलकै...ओ तामा सँ फेर चाउर नपलक... चाउर कम त रहबै करै। कोन जिन्न घर मे लागल छै से नहि जानि...मूसो खेतै त' पौवा भरि चाउर खा जेतै? ओ महेशवा सँ पुछलक। महेशवा के तखन हँसा गेलै। तैयो ओ 'नहि' छोड़िक 'हँ' नहि कहलक माय झुर-झमान होइत रहलै...गुनधुनी धयने रहलैक ओकरा...फेर की फुरयलै...उठलि आ महेशवा वाला किताक पेटी मे हुरिया पसार लगलि...किताब...कापी...करची कलम आर की रहतै? फेर ओ किताब उठौलकि...बापरे...! नारियलक टुकडी...मिश्रीक ठेप...बिड़ीक ठुट्ठा...ओ आबि क' महेशवा के थोपिया देलकै...'' कोढ़िया आब खैहें अंगोर...अपन करेज...सिधा बेचि क' नारियल मिश्री खेता...''

महेशवा गमि गेल जे आब आइयो खेनाइ बन्न। कने काल बाद ओ स्कूल विदा भेल। मोन मे उथल-पुथल होइत रहलै...नारियल... मिश्री खेनाइ कोन पाप छै... आर लोक सब अपना मोनक बात करै-ए कि नहि? हम जँ गीत



गबै छी... जे मोन होइए से खाइ छी...हे बिड़िए पीबै छी त' सब हमरे गंजन करैए... करेजा हमर सुनगै-ए...ककरो बाप के की जाइ छै? ओ ई बात सब नहि बुझि सकल। स्कूल मे ओकर मोन नहि लगलै...टीफिन मे ओ बाहर निकलि गेल...सामने मन्दिर छल...ओ मन्दिर मे पैस गेल, आगू मे महादेव थोपल रहथिन आ लिंग पर एकटा दस पैसाही चमकि रहल छलै। महेशवाक आँखि सेहो चमकि उठलै...महादेव ने तहादेव...हम भोर सँ भूखल छी आ ई माथ पर पाइ रखने छथि, ओ झुकल आ पैसा उठक' पैंटक भूर मे घोसिया लेलक, ''बाजे ने मुरलिया रे?''

महेशवा एक अना के बिड़ी...दू पाइ के गूर लेलक आ दूटा पाइ दोकान मे जमा करा देलकै। गूर गाल तर जँतने ओ आगू बढ़ल। किछु दूर आयल तँ पेशाब करैत लागे ओ खेत मे बैस गेल। जेब सँ बिड़ी निकालि क' माटि तर घोसिया देलकै आ ओइ पर सँ आर एकता माटिक ढेप राखि देलकै-'चेन्ह' रहतै।

आँगन मे चिराग-बाती भ' गेल रहैक। दीप ल' क' महेशवा पढ़' बैसल। माय करिया कक्का सँ बतिया रहल छलै। जखन महेशवा गमि लेलक जे ककरो ध्यान इम्हर नै छै त' ओ ठोर तर बिड़ी जाँति क' दीप मे धरौलक...हबर-हबर दम घिचलक कि खोंखी उठि गेलै...धूँआ सँ घर गन्हा रहल छलैक...एक हाथ मुँह जँतने ओ खोखिंतो छल आ दोसर हाथ धुँआ पर चला रहल छल...धूँआ खतम भ' जेतै त' कोन गबाह जे महेशवा बिड़ी पिअने अछि मुदा मायके गमक लागि गेलै...ओ सहटि क' केबाड़क दोग लग आबि आ महेशवा के बिड़ी मिझबैत देखि गेलीह... ''महेशवा के बजाउ त'' करिया कक्का सँ माय कहलकै... ''छौंड़ा फेर बिड़ी धुकैत छल घर मे...''

''तों बिड़ी पिबै छलही''...करिया कक्का बाजल...''किछु नै कहबौ...कि मुँह बजान चाही तोरा?''

''नहि कहाँ पिलौंह हम...''

''एकर मुँह सुँघू त'...'' माय मुँह सुँघलकै आ ओकरा हाथ सँ ठेल देलकै...करिया कक्का बाँहि पकड़ि लेलखिन, ''कत' सँ बिड़ी अयलौ?''

मारि नै लागत से तइ भरोसा मे महेशवा कबूल क' लेलक जे फँला ठाम सँ बिड़ी अनलौं आ फलाँ ठाम रखने छी मुदा करिया कक्का एक झापड़ देलखिन मुँह बजौन आ दू चारि झापड़ सूदि। ''पाइ के देलकौ?''

''मन्दिर मे महादेवके माँथ पर सँ लेलियै...''

''आँती उठल छै''...माय कपार ठोकलक''बापरे जुलूम केलकै छौंड़ा...'' आ तुरंते कबुला कए देलकै जे हे महादेव बाबा,महेशवा नीके रहतै त' पाँच लोटा जल चढायब। मुदा करिया कक्का नहि छोड़लखिन...''थूक फेक आ चाट... कही जे एहन काज फेर नै करब...''

झापड़ मोने छलैक। ओ तुरन्त हुक्म के तामिल केलक। महेशवा अपना जनैत त' बड़ बुधियारी सँ काज करैत अछि...मुदा लोक एहन जे ओकरा पकड़िए लैत छैक। तइ ल' क' महेशवा आरो परेशान... किएक लोक आँखि पर चढ़ौने रहैत अछि। एक्को रत्ती दया-दरेग छै ककरो ? ओ सोचैत अछि...सब किछु बिकाइत छै जँ कतौ स्नेहो बिकाइत होइ त' सब छोड़ि-छाड़ि क...कोनो धरानिएँ थोड़बो स्नेह अबस्से किन लेत आ एकरा सब मे बाँटि देत...आ हठात् ओकरा मोन पड़ि गेलै ओ मुरुत... महेशवाक प्राण त ओही मुरुत मे रचि-बसि गेल रहै जेना।

ओइ दिन सर झप्पी रहै। पाँच-छौ आदमी गाछी गेल छल। सारा झपैत काल सारा मे सँ दू टा मुरुत बहरयलैक। दुनू मूड़ी एक रंग...सुगवा नाक...सुरेबगर ठोर...आँखिक सिरखार मनुक्खे जकाँ...कोइ कहै जे फेक एकरा...कोइ कहलकै जे नहि दादीक आशीर्वाद छै ई...कोइ कहै जे दादी के डाइन मारने छलैक तकरे सबूत अछि... अन्ततः दुनू मुरुत लोक जुमा क' फेक देलक, मुदा महेशवा कखन ने कखन आँखि बचाक' दौड़ल गाछी...तकैत-तकैत एकटा मुरुत भेट गेलै...दोसर नहि भेट रहल छलैक। दोसर मुरुत तकैत काल हाथक पहिल मुरुत नीचा खसि पडलै...आहा हाँ...ओकर करेज धुक धुका उठलै। केहन सुन्नर मुरुत फुटि गेल... बीचो-बीच ओदरि गेल छलै...सेहो नीक भेलै...आब ओकरा ल' जयबा मे सुबिस्ता हेतै...ओ ओकरा पाढ़ि सँ बान्हि लेलक आ पेटी मे राखि देलकै।

आ जखन-जखन ओ अपना मोनक कछमछाइत बात करबा मे औना गेल...अपस्याँत भेल...तखन-तखन सब बात...सब दर्द ओ चुपचाप ओइ मुरुत के सुना दै छै...''दाइ देखै छें...लोक हमरा कतेक मारै-ए...तों त' बुझिते छही...हम केहन छी...कतेक दुलारु रही तोहर...'' से एक दिन जखन ओ बतिया रहल छल से माय कोना-ने कोना सुनि गेलै आ जखन मुरुत देखलकै त माय कपार पीट' लागलि... ''आँती उठल छै...छौंड़ा आब नहि जीतै रौ बाप...सारा मेंहक भूत कोढ़िया पेटी मे सैंतने अछि...'' आ मारि जे लगलै से फोकट मे। महेशवा दलान मे ठाढ़ बिड़ी धुकैत छल अखन से पितिआइन देख गेलखिन—''आब' दिऔ पित्ती के आइ...'' पित्ती के नाम सुनिते ओकर मोन उदास भ' गेलै...हलदिल्ली मचि गेलै ओकरा भीतर...फेर वएह मारि...वएह उपास...फेर थूक...मोन त भेलै पहिने पितिआइनेक गरदनि मचोड़ि दी। आँगन आयल त माय खोरनाठी नेनहि दौड़लै... ''मचरुआ! कतबो लोक कहत...तैयो सुनबाहि नहि... बिड़ी धुकबे करताह...''

''हे! चिचिआइ छै कथिले...करिया कका औथिन त हमर घेंट रेत देताह...सएह ने ? कंठ मे भूर भेल छनि हिनका ...खाली गारि-मारि...स्थिर सँ बाजिए ने होइए...बोली मे कनियो स्नेह बुझाइते नै अछि...'' आ ओ चद्दर तानि क' पड़ि रहल...सभक हाथ ओकरे मारैले कुरियाइत रहै छै...ओ मोने-मोन अँटकर लगबैत रहल। आब पहुँचल...करिया कका आब पहुँच गेल...उठौलक थापड़...दाइ जकाँ इहो मरि जाइत...ई मरता त हिनका सारा मे सँ हे भगवान! साँपे निकलै...छुच्छे साँप...ओकर करजे खोरनाठी जकाँ धुँआइत रहलै...मरबो नै करैए सार!

# थकुचल मासुक बुट्टी

अइ बेर गाम अयलहुँ त' एकटा बिचित्र प्रकारक सनसनी सँ गामक जनमानसक समुद्र उथल पुथल रहै, हमरा आश्चर्य पर आश्चर्य होइत गेल, की बात छै? ककरो मुँहे सुनियैक जे 'खुनियाँ अछि... खुनियाँ' कोइ कहै जे मरदे ओहन-ओहन त' डाकू भेलै हौ...एक आदमी कहलक भाइ बर बखत ओकरा डाँड़ मे एकटा डाइगर रहिते छैक खोंसल।

''डाकू...खुनियाँ...के हौ?''

''ललनमा...''

हवाक लहरि पर थरथराइत रहल ओ चारिटा आखर—'ललनमा'। सुनिते हमर मुँह डोका जकाँ खुजि गेल। ''ककर खून केलकैए?...'' अचानक एक आदमी हमरा पाँखुर पर हाथ मारलक। ''हे बड हेम छेम छलै ओकरा सँ'' ओइ राति अहुँ बहिन सँ गप्प करैत... हँसैत हम अपना आँखि सँ देखलौं से बाउ...कने बचिक'...''

मोन भेल जे एक तबड़ाक खीच ली एकरा। ललनमा के नाम सुनिते हमर मोन बिसबिसाय लागल छल। हम पिनपिनाइते ओकरा आँगन पहुँचलौं। घरमे नै छल... कत' गेल? कत' भेटत? भरि दिन ओकर छाँह हमरा हाथ नै लागल, चोट पर भेटैत त' सत्तम बात एहन घुस्सा दितियै जे ओकर सब दाँत झरि जैतै, हम कसमसा क' रहि गेलौं। की भेलै? कोना भेलै? कखन भेलै? अनेको प्रकारक सवालक भाला हमरा घोंचैत रहल। अपन मोनक प्रत्येक द्वन्दक एक-एक अक्षर हम सोझरबति रहलौं बाँसुरी...गीत...ललनमा, खुनिया... डाकू ललनमा, गीत...गाम...आ डाइगर, डाइगर आ ललनमा आ समाज...

''कथी खाइ छें?''



''भेटमाउस।''

''हमरो दे न?''

''उहुँ, गीत सुना त' देबौ।''

''दोस-दोस लगा त' सुना देबौ गीत''

आइ सँ बारह बरख पहिने-ओइ दिन हमरा आ ललन मे दोस-दोस लागल छल...ओइ दोस्ती मे एकटा शर्तो लागल छलै। शर्त ई छलै जे ललन गीत सुनाओत, हम भुज्जा देबै। हमर भुज्जा ओकरा नीक लगलै, ओकर गीत हमरा नीक लागल।

औंठिया केश, प्रशस्त कपार...पातर-पातर ठोर पर थिरकैत बाँसुरी। आँखि मे एकटा अद्‌भुत सम्मोहन जे लोक के बरबस बान्हि लैत छलैक। ओकर गीत सुनि क' लोकक मोन बेवश भ' जाइत छलैक...हाथ ठमकि जाइत छलैक आ एकटा अकथनीय बेचैनीक हिलकोर सँ कोंढ़ दलमलित भ' जाइत छलैक।

ललन गीत गबैत रहल...गीत समाप्त होइत रहलै। शर्त मोताबिक हम ओकरा आंजुर मे भुज्जा दैत रहलियैक। गीतक समाप्ति पर ओ आँजुर बढ़ा क' बिहुँसि दैत छल आ फुटहा सँ भरल आँजुर अपना कपार सँ लगबैत छल जेना ईश्वर ओकरा उपहार मे मौलश्रीक फूल सँ आँजुर भरि दैत छलखिन। धीरे-धीरे ओकर बाँसुरी आ गीत ओइ परोपट्टा मे उजागर होइत गेल। कोनो शुभ अवसर पर ओ अपन स्वर सरिताक मधुर जादू सँ लोकक करेज बन्हैत रहल।

अहिना ओइ बेर कृष्णाष्टमीक राति रहै गाम मे जन्मोत्सव के अवसर पर नाटक आ ललन के बाँसुरी वादनक कार्यक्रम सेहो आयोजित रहैक। हमरा गामक जन्माष्टमीक मेला आइयो नामी छैक। दू-चारि गामक लोक सबसँ दू-दिन हमर गाम दलमलित भ' उठैत अछि, तेँ युवक सबके इन्तजाम बात नीक जकाँ देख सुनय, पड़ैत छै। ओहु बेर स्त्री-पुरुष के लेल अलग-अलग व्यवस्था भेल छल। एक कात पुरुष दोसर कात स्त्री। ओइ राति स्त्रीक गोल मे ललनके बहिन सेहो उपासलि मुदा प्रसन्नचित्त नाटक देखबामे व्यस्त छलि। ओम्हर ललन स्टेज पर बाँसुरी टेर रहल छल। मंत्रबद्ध लोकक ठाठ बाँसुरिक स्वर पर थर-थराइत सभक करेज। करेजक गुदगुदी ठोढ़ पर अबैत-अबैत मुस्कान बनि जाइत रहल राति तीन सँ बेसी भ' गेल रहै। अचानक स्टेज पर जरैत पेट्रोमेक्स भुक्क सँ मिझा गेल छल। ललन अन्हारे मे टेरैत रहल। लोक

पेट्रोमेक्स के व्यवस्था मे दौड़ल हुलि-मालि भ' गेल, एकाएक चम्पा छटपटा उठलि समाजक किछु असमाजिक छाहक हाथ चम्पाक मुँह जाँति क' उठा नेने छलैक उठा क' पोखरिक महार पर पटकि देलकै। चम्पा हाथ जोड़लक...बिनती केलक मुदा...सब किछु जेना नियोजित छलैक। पुर्व नियोजित। एक-दू...तीन...कतेक मूड़ी ओइ अन्हारमे प्रेत बनि गेलै। चम्पा बेहोस भ' गेलि आ ओ लफंगा सब ओकरा गन्हाइत आ भिनकैत छोड़ि गेलै। आ चम्पा होशमे आयल त' ओकरा एकेटा बाट भेटलै...कनैलक चटनी।

अचिया धुधुआ रहल छलैक आ ललन...ललन एकटा गाछ तर बैसल बाँसुरी बजबैत रहल। बाँसुरीक भुर सँ व्याकुलता...सहोदराक बिछोहक दर्द...पिघलि क' बहराइत रहल...ललन के आँखि सँ नोर...आ हम अचिया...अचिया पर जरैत ललन के बहिन चम्पा आ कटिहारी के लोक सब किछु देखैत रहलौं...बज्र बनि देखैत रहि गेलौं।

बाद मे हमरा पढ़ै वास्ते बाबूजी शहर पठा देलैन। ललन गामे रहल। आबए काल दुनू गोटे छटपटा गेल रही, मुदा दुनू गोटा विवश छलौं, दुनू गोटे बिछुड़ि रहल छलौं। ''आब हम तोहर गीत, बाँसुरी नहि सुनि सकब।'' ''हमरो आब भुज्जा के देत? कत' भेटत?''...गाम आ शहरक अन्तराल बढ़ैत गेलै। ओना बीच-बीच मे हम गाम अबैत छलौं, मुदा एक त' पढ़नाइ-लिखनाइ एक झंझटि...दोसर वयस सेहो आब गदह-पचीसीवला नै छल। हम ललने साथे बेसी नै रहि पाबी। एम्हर दू-तीन खेप सँ हम ललन के मुँह पर ओ सुरखा...ओ ताजगी...गीत सन ललितगर मुस्की बाँसुरी के स्वर सन मधुरता...किछु नै देखैत छलौं। मोनमे कचोट होइत छल, मुदा हम की क' सकैत छलियैक? ओ भीतरे-भीतर टुटि रहल अछि? किएक?...आ किएक के बाद हम आगु किछु नहि सोचि पबैत छलौं बाँसुरी वला टीस ओकरा आँखि मे छल-छलाइत देखि हम औना क' रहि जाइत छलौं।

आ अइ बेर त' नै जानि की बात छलैक जे पूरा गाम ओकरा पर कन्हुआ गेल छलै। खुनियाँ डाकू...डाइगर...ललनमा...झलफलाइत साँझ मे हम पोखरिक मोहार पर बैसल थर-थरा गेलौं हमरा सामने साक्षात ललनमा ठाढ़, हमर ललन मुदा आन बेर जकाँ हम हफसि क' छाती सँ नै साटि सकलौं। हमरा एकटा डर सन्हिया गेल छल लागल जेना एकटा अदृश्य डाइगर हमरा करेज मे घोंपाइत चल जा रहल हो। ओकरा हाथ मे एकटा रुमालक पोटरी छलैक। हमर



अकचकाइत भाव-भंगिमा देखि ललन रुमालक पोटरी नीचा मे राखि देलकै आ आगू मे बैस गेल। फेर कने ओ मुस्कायल, हमरा लागल जेना एकरा मुस्कियाबय मे आब दर्द होइछ छैक। कतेक प्रयास बाद ओ मुस्कायल छल। हमरा अनायास मोन पड़ि गेल एकटा गीत ...एक मुठी भूज्जा... हम ओकर दर्द आ टीस। अन्ठारि क' पुछलियैक, ''की बात ललन? गाममे तोरा मादे ई केहन हल्ला छै? कोन हड़कम्प तों गाममे मचौने छें? हमरा त' लोक के बात सुनि-सुनि क' भोरे सँ पित्त चढ़ल अछि...की बात छै से कहै...लेकिन पहिने थम। पहिने एक बेर बाँसुरी बजा आ एकटा गीत सुना। फेर त' आर बात हेबे करतै।''

''...''

''गाबै ने एकटा गीत...हमरो सँ लाज होइछौ कि।''

''किशोरी'' एकाएक ओकर स्वर बदलि गेलै, ''न किशोरिया...आब नै गाओल पार लागत हमरा। स्वर मे उदासी छलैक आ कोनो चीज छूटि जयबाक कसकि। तैयो हम जिद केलियै। हमर बात सुनि क' ओ आर लोहछि गेल। ''देख किशोरिया। बेसी रगड़पन करबे त'...'' आ ओ पेट त'र सँ एक डेढ़ हाथक सोंटा खीचलक, मुट्ठी लग सँ खोललकै त' एक हाथक छूरा ओइ अन्हार मे चमकि उठलै।

हम अबाक्—''इएह अछि हमर ललनमा? हमर एक मुट्ठी भुज्जा खेनिहार ई ललनमा नै अछि, बाँसुरी बला ललनमा...डाइगर बला ललनमा...नै बन्न करै एकरा...बन्न कर।''

''आब ई कोना बन्न हेतै किशोरिया? जे समाज कहियो हमरा बाँसुरी देने छल—ओकरे देल छै ई।''

''नै ललन, तोरा छोड़ए पड़तौ ई सब...कतेक खून केने छें एहि सँ।''

''सहस्त्रो खून...किशोरी हजारो खून भेल हेतै। तोरा बुझल छौक? कत' गेल हमर गीत...कत' हेरा गेल हमर बाँसुरी? नै बुझल छौ तोरा? सुनि ले सब किछु...'' हम सुनैत रहलौं...

ओइ दिन शनि रहैक। छुट्टी रहितहुँ बाबू जी अफिसक काज सँ बाहर दूर मे जाइ ले तैयार भेलखिन। हम नै जानि किएक आइ अपना मोनक बात कहि देलियैन जे एकटा बढ़िया बाँसुरी हमरा ले नेने आयब।

''अच्छा...अच्छा हम जरुर नेने आयब...''

बाबुजीके ई अन्तिम बात हम सब सुनने छलौं। 'परसु आएब' से कहि क' बाबुजी गेल रहथिन...मुदा कतेक परसु बीतल। नै हमर अधबैसू कमौआ बाप आ ने हमर बाँसुरी, किछ नै आएल। पता लगाओल गेलै। बाबू ने अफिस मे रहथिन...ने जाहिठाम गेल छलखिन ओत' आने गामे एलखिन। त' जमीन गीड़ गेलै बाबू के कि आसमान। कतेक तरहक आशंकाक मेघौने आकाश तरमे हम सपरिवार पंद्रह दिन धरि छटपटाइत रहलौं मुदा जइ दिन कादो-कुम्ही भरल पोखरि मे सँ हमर बाबूक लहास...जगह-जगह सँ नोचल...ठाम-ठाम सँ खायल-खोखरल हमरा सभक सुपुर्द कैल गेल त' पारिवारिक समग्र चेतना...हमर कोंढ़ी दैत भावना...कुमार गीत...कोमल बाँसुरी...सब किछु के लकवा मारि देलकै। किशोरी ओही दिन हमरा अन्तरक सब भाव...सब गीत सब किछु के लकवा मारि देलकै आ आब जे हमरा भीतर किछु जीवैत अछि ओहो ओहिना नोंचल-भोम्हरल अछि। बाबूजीके लहास जकाँ मनुक्ख के हम बहुत दिन धरि बाँसुरी सँ कसिमे रखलियै...मुदा आब ओ मात्र अइ डाइगर सँ कसिमे रहतै...आ तों कहै छें जे गीत गा...हम अपना के कोना परतारु कोन मिठका दवाइ सँ फुसलाउ...नै किशोरी...आब ई सब किछ नै...

ललन चुप भ' गेल छल। हम हतप्रभ रहि गेलौं। ओकर हँसी कत' छै? ओकर गीत कोनठाम अहुरिया कटै छै? ओकर बाँसुरी कत' हेरा गेलै? कहाँ सँ आनु हम? कत' ताकु ओ सब?

''तों नै ताकि अनबें...कत' भेटतौ तोरा? बाबूजीक खेलहा नाक...खोखरल आँखि...गलल अंग'' आ ललन रुमालक पोटरी खोललक रंग बिरंगक बाँसुरी...नरकट...बाँस आ चानीक बाँसुरी। टुटल...फोड़ल...झाझन भेल बाँसुरी, हमरा लागल जेना ई बाँसुरी सभ नै वरन् ललनमा करेजक बुट्टी सब होइ आ जकरा कसाइ अपना चौकी पर थकुचि क' छिरिया देने छलैक।



# खण्डित लोक

बुढ़वा उठि गेल छल इम्हर किछु दिन सँ नीक जकाँ निन्न नहि होइत छै ओकरा... खा-पी क' राति मे आँखि मुनै-ए... खोलै-ए... झपैक लै-ए आ चौंक उठै-ए... दू अढ़ाई बजे एक बेर बहराइत अछि आ तइके बाद एहि करोट सँ ओइ करोट सगरो राति कछमछाइत... छटपटाइत... सब दिनका इएह हाल। भोरक सिहकी सँ पहिने मोन-प्राण गुदगुदा उठैत छलैक... मुदा आब धधराक छाह जकाँ बुझाइत छैक। हाथ बढ़ा ओ कान्तिपुरक बटम टीप देलकै। समाचारक समय भ' गेल छलै ... 'यो समय मुना चिया को हो' आब प्रमुख समाचार... बितल राति माओबादी आ सेनाक भिड़ंत... ओकरा पित्त लहरि गेलै... अइ सँ बेसी आ ताजा कोनो समाचार नहि... सब दिन एहने खबरि... भिड़न्त... मुठभेड़... मृत्यु... घायल आब ब्रेक के पालो।''

ओकर कछमछी बढ़ि जाइत छैक भीतरे-भीतर ओ अपने मे औना जाइत अछि। कतौ अन्यत्र पड़ा जयबाक... नुका जयबाक मौका ताकि रहल अछि... ताकए लगैत अछि फेर मोनेमोन दोहरबैत अछि सय सँ बेसी घायल। पचासक मृत्यु... दर्द... दर्दक अनुभूति... छटपटी। अपनासँ दूर कोनो पहाड़क खोहमे कुहरैत... छटपटाइत... जवान माओबादी! मनुक्ख! ककरो बेटा! ककरो सोहाग बियावान मे हुकरैत दम तोड़ैत...!

''बच्चा नहि उठलैए अखन धरि?'' एकाएक बुढ़बा के जेना अख्यास भेलै। घरक लोक अइ बच्चा के खाली बच्चे बुझैत छैक। हाड़ माउस साटल... टकटकी लगौने एकटा नीरीह बच्चा बस। मुदा ओ मात्र एकटा बच्चे नहि... ओकरा नजरि मे—ओकरा विचार मे ओ अइ दुनियाँके अति संवेदनशील निस्पृह शिशु... संसारक छल-प्रपंच सँ कात एकटा निर्मल, पवित्र आ नितान्त

ईश्वरक प्रतिमूर्ति लगैए। ओकर वंशबेलि... कुलदीपक ओकर पौत्र। ओ बच्चाक घर दिस हुलकी देलक... एकर माथा एक दिन चौपट भै-ए जेतै... बुढ़बा बमकल, ''ई सब दिन जे एना भोटिया गद्दाके सिरमा पर सुतै जेतै त केहन हेतै माथक आकार?''

''ओइ पारसँ सिमरक तूर आनिक' बना देबै गेरुआ।'' बुढ़िया कहलकै। बुढ़िया एना चिचिया क बाजल जे छुटल गोली जकाँ तड़ातड़ बुढ़बाक छाती मे धसैत चलि गेलै... ओ तिलमिला उठल फेर ओ अपना के संयत केलक। बुढ़िया अहिना चिचियाक बजैत छैक। ओ कहतै किछु, ई बुझतै किछु। दुनू मे कोनो तार सइर सँ कहियो ने सोझरैल। बुढ़बा गुम्हरल, ''ओइ पार सँ अनती सिमरक तूर। एकटा जोंगी हड़ड़ि आनल ककरो पारे ने लागल आ...'' आ फेर मोने मोन कहलक—देखबै हमहूँ किने—कोन ओइ पार सँ अतै सिमरक तूर... कहिया बनतै गेरुआ... आ कहिया ओइ गेरुआ पर सूतत बच्चा? बुढ़ियाक बात ओकरा भीतरे भीतर मन के खोखरैत रहलै... तैयो ओ मोन मे गिरह बन्हलक... छुट्टीक दिन अपने गेरुआ उघारि क' दूटा गेरुआ बनाओत—एकटा अपना ले' आ एकटा अपना पोता ले'...।

ओकरा दिमाग मे बुढ़िया बला तानी-भरनी चलिते रहैत छै... ई ओकरे बुढ़िया छलि जेकरा ओ कहियो ललका पटोर मे लेपटा ढोल पिपही आ समदाउनक संग महफा बैसा क' अनने छल अपना घर मे... एकटा लालपरी... लेकिन आब ओइ लालपरीक बुट्टी चमकैत हड्डीक कंकाल टा रहि गेल छै। ओइ देहक आत्मा त' कहिया ने विला गेलै... बोली बाणी... क्रियाकलाप सँ एकोरत्ती नहि लगै छै जे दुनू घरवाला-घरवाली छी। सोहाग-सिनुर कि सिंगार-पटार एक दोसराक छी... किच्छो नहि... एहि मौगी खातिर किछो नहि... ओकर मोन फेर तीत भ' गेलै। साँय-बहु बला कोनो लक्षण नहि छैक। दुनू दुनू पर कनखल रहैत छै। एकरा देखिते ओकर मोन-आत्मा धधा उठै छै... आ ओकरा देखिते एकर मोन अनेरे छूरी फनकाब' लगैत छै। बुढ़िया कहियो ने सोचलकै जे ओकरा घरबलाके कथूक बेगरता हेतै। एक लोटा पानिए कि एक जुम खैनिएँ...आ मधु मिसरी मे बोरल प्रेमक बोली के त' कोनो कथे नहि... जखन बजै छै... पाबनि-तिहार कि अनदिना... बजै की छैक बस कार कौआ जकाँ कर्र-कर्र करैत रहैत छैक। ओकरा अपने छगुन्ता लगै छै...एना किया भेलै? एकटा पूब आ एकटा पछिम बला स्थिति दुनू बेकतीक जीवन



मे कोना भेलै? ओ मोने मोन अख्यास' लगैए... ओकरा सिनेह खुऔने छलैक कि नहि? विवाहक ई विधि ओकरा सभमे होइतहि छैक... मोन पारि क' सिनेह खुआओल जाइत छैक ... दुनू प्राणी मे भरि जीवन सिनेह बनल रहतै। से छ-छटा साइर छै सासुर मे। एगो विधकरी... पाँचटा सारि... छ गो भेलै कि नहि? से ठकि फुसिया क' सिनेह त' अबस्से खुओने छल हेतैक। तैयो पचीस-तीस बरखक बादो एक-दोसरक प्रति ओ सिनेह नहि फुला सकलै ओकरा सभक जीवन मे।

ता छोटका बेटा साइकिल के स्टैण्ड मे लगा देने छलैक। स्टैण्ड माने आँगन मे पूबमुँहे। बुढ़बा देखलक त' छोटका बेटा पर सेहो तमसा उठलै । बी ए मे पढ़ै छै... एक लाइन किछु लिख' बैसल त भकभकी छुटि जाइत छै। सन छियासठि मे ओ कलेज छोड़ि चुकल छल। ओ चाहैत त' ओइ जमाना मे सरकारी नौकरी करैत। आइ रिटाइर भ' गेल रहैत। सरकारी नौकर सब त' खाली कुर्सी तोड़ैत अछि... से ओ सब दिन तन-मन सँ ओ कर्म मे लिप्त रहल। आदर्शवादी छल... झूठ नहि बाजब... घूस नहि लेब। वएह विद्यार्थी जीवन मे जयशंकर प्रसाद, शरतचन्द, प्रेमचन्दक पढ़ल साहित्यक बाट पर ओ आगू बढ़ि रहल अछि। वएह ओकर पाथेय छल।

मुदा ओकर ई बात... ई गमकौआ आदर्श घर मे कोइ ने बुझनाहर... सब नकारि देलकै ओकर ई सिद्धान्त के, आ अन्ततः ओकरो। आ अइ सभक अगुआ छलैक इएह बुढ़िया। बुढ़िया के बात अबिते ओकर सिरिंग फेर चढ़ि जाइत अछि। ओही दिनका बात छलैक... बेसी दिन कहाँ भेलैए... ओइ दिन घुमैत काल माँछ किन लेलक... एहन चटपटाइत आ टटका माछ कहियो कभार परि लगैत छै से ओ बड़ हुलसि क' माँछ नेने आँगन आयल आ बुढ़िया माँछ देखिते ओकर तरबा के गरमी मगज ठेकि गेल रहै, ''धौर! आब अइ मुन्हारि साँझ मे के बनेतै माँछ? बुढ़ाढ़ी मे मोन सोन्हाइत रहै छै... एहन कोन माँछ खाइके स'ख... जकरा मच्छर भोम्हरतै-सोहरतै तकरा कि ने? एकरा कथी... रान्हि क' देबै त' चाटि लेत...'' भनभनाइते बुढ़िया घरसँ छाउर आ मछही हाँसु आनि क' माछक पोटरी घिचलक... ओकर बरबरी चालुए छलैक... ओकर ताल तमासा देखिते बुढ़बा के मोन हहा उठलै। मोन भेलै जे उठा क' फेक दी माछ के पछुआर मे... एकटा बुढ़बे हुड़तै की? ओ अपने मोन सँ पुछैत अछि... कोन घर के जनि-जाति मुन्हारि साँझ मे काज नहि करैत अछि... कि

आइए फरलैए दुनियाँ मे मच्छर? कोन मोने माछ अनने छल... आ कोना ओ मोन के डाहि देलकै?

ओकर साइकल पान दोकान लग पहुँच गेल। ठीक चौक पर पानक दोकान छलै दनदनाइत आ दलमलित होइत चौक... आब बुढ़बा एकरा खाली चौक कहैत अछि। हेमनि धरि एहि चौकक एकटा नाम छलैक। मुदा प्रजातन्त्र एलाक बाद नेता सब एकरो नाम बदलि देलकै। ओ आइयो नहि बुझि सकल जे एना खेल-खेलमे लोक ककरो कोनो ठामक नामो ठेकान बदलि सकै-ए। लेकिन ओकरा मनमे ई बात कतौ नीको लगलै। मुदा अखन त' चौक पर ओ देख रहल अछि... चबूतरा पर ठाढ़ शालिकक हाथ मे तलवार आ भव्य मूर्ति... उदास आ असोथकित... असगर... ओ चौंकल... ओकर नजरि दोकानक घड़ी दिस गेलै, ''आरे बाप! साढ़े आठ... खुआबए एकटा पानक मस्त खिल्ली'' आ ओ पानवला सँ पुछि बैसल ''कि हौ कुमर जी! आइयो कोनो हुलिमालि छै अइठाँ?''

''पान लिअ आ रास्ता नापू... अहाँ नहि बुझबै... पहिलुका समय त' हेरा गेलै... आब त' सब दिन... कहियो धरना... कहियो भाषण... कोनो दिन चक्का जाम... कोनो साँझ मसाल जुलुस...'' पान बलाक बात ओकरा आरो भुतिया देलकै। कहियो झगड़ा... कहियो रुसाफुल्ली... कोनो दिन बाजबाभूकी बन्न। ओहो ओहिना जरैत पजरैत रहै-ए... अइ शहरक ओही चौक जकाँ ओकरो भीतर वरमहल ओकर करेज जरैत धुधुआइत रहैत छैक।

बुढ़बा पान खेलक... पाइ देलक आ चढ़ल फेर साइकल पर... साइकल गंतव्य दिस बढ़लै आ दिमाग मे पुन: ओझराइत रील चालू भ' गेलै... बेटा-पुतौहु, बहु-बेटी... समाज... कतौ... कोनो ठाम ओकर मोजर नहि... ओ कोनो बात कहतै... कोनो विचार रखत त' तुरंत प्रतिवाद भ' जाइत छैक... सीना तानि क' ओ सब काटि दैत छै ओकर बात विचार आ मनोरथ के... एना किएक ओ सब करैत अछि से ओ नहि बुझि सकल। एक दिस सम्पति सँ भाय भैयारी ओकर हिस्सा खारिज क' देलक त' इम्हर घर मे मालिक बनलै ओकर बेटा... ओकरा अछैत। सेहो त' इएह बुढ़िया फतबा जारी केने छल जे आब घरक मालिक हमर बेटा भेल आ बुढ़बा दुधक माछी जकाँ फेका गेल से धिया-पुता ले सेहो ओ ओही दिन जड़ल मरल। ओ कहबी छै ने ''जकरा घर मे नइ पुछ तकरा बाहर सब छुछ...'' ओ ओहि दिन प्रतिज्ञा केलक... नीक जकाँ



गिरह बान्हि लेलक ने ओ बाजत आ ने ओकर बोली ककरो कटाह आ कबकब लगतै। ओकर बजला सँ जँ महाभारत होइछै...बुढ़बे बकटेटाह अछि त ने ओ बाजत ने टंटा हेतै। ने ककरो कोनो बातक टोकारा ओ देतै, आ ने लोक ओकरा किछु कहतै... आ बौहु सँ बौहुअक सख-सेहन्ता कहिया पुरा भेलै ओकर... जो बहि अहिना रहै... हमहुँ निसासले रहब... टौआइत... असगर... आब त' सहजहि ओ बुढ़िया सँ बजनाइयो छोड़ि देने अछि।

ओ दहिना हाथ सँ साइकल पकड़नहि बाम हाथ सँ अपन माथ पोछलक... जावाकुसुम तेल सँ गमगमाइत... औंठिया केशक जुल्फी ओकर माथा पर सँ कहिया फुर्र द' उड़ि गेल रहै से ओ नहि बुझि सकल छल... कनी काल पहिने पड़ल पानि सँ धीपल सड़क पर उठैत गरम गरम भाफ भादवक तीक्ख रौद मे चानि चटपटा रहल छलैक। पसेना सँ तर-बतर ओकर गत्र-गत्र आ सफाचट चानि पर रौद अखन वर्छी जकाँ बुझा रहल छलैक। ओकर मोन खिसिया खौंझा उठल...इएह बाट...इएह साइकल आ सोलह दूना बत्तीस किलोमीटर अइ सड़क पर हकमैत-हँफैत ओ घर घूरत। वएह घर... गोबर तुलसी, अरिपन-पिठार, पावनि-तिहार, गीत-नाद, ठाँ-पीढ़ी... एहि संस्कार सभक छुतिसँ दूर... छोट-पैघ, अइँठ-काँठ, आदर्श-सिद्धान्त ओकरा घरक लोक बिसरि गेल छल। टी. भी., डेक, रेडियोक काँट-कुश मे ओझरायल घर... बुढ़बा आब अइ घर के घर नहि... नरक बुझैत अछि। नरक बनि गेल अही घर मे घुमिक' अबैत अछि।

आ लालचन बुढ़बा के फेर सब क्यो आइ घर मे घेरि क' अपन-अपन हथियार सँ ओकर अंग-प्रत्यंग... मोनक प्रत्येक तंतु के कचि क' खण्डित क' क' छोड़ि देतैक आ ओ ओहिना ओइ बरकैत भूमिकण्ड पर छटपटाइत रहि जाइत।

( 11.06.061 )

# छागर

ओकरा अपना गाममे कहाँ किछु एना होइत छलैक... केहन सुन्नर भैया दुरागमन कराक' अनलखिन... हपसि क' कनियाँके हाथे-हाथ लोक लडडू बना लेलक। कोनो प्रकारक दुराव-छिपाव नहि। भौजी सबसँ बजै छलखिन... हँसि-हँसि क' सबसँ बात करैत छलखिन... मुस्का-मुस्का क' सब काज करैत छलखिन... भौजी ठोरक ओ मुस्की कतेक ललितगर होइत छलैन... रुपाकेँ नहि मोन पड़लैक जे अइठाम एलाक बाद ओ कतेक बेर मुस्कायल अछि। घर मे जहाँ कोनो बात होइत रहैत छैक रुपाके ओहिठाम पहुँचैत देरी बातक क्रम टुटि जाइत छैक। ओकरासँ चोराक' कोनो बात कोन गुरमिंटी घर मे होइत छैक से ओ नहि बुझि पबैत अछि। ओ कोनो साड़ी निकाल' जाइत त'... दिनमे चन्दनसँ भेंट-घाट करत त'... साँझ क' शृंगार कर' बैसत त'... त' किएक तरे-तर सब गुम्हरैत-गुर्राइत रहैत छैक?

रुपमके अइठाम एना आइ तीने-चारि दिन भेलनि। लाल पटोर... लाले ब्लाउज... ललका सिन्दूर सँ झकझकाइत सिउँथ... अलतासँ रंगल पयर... मेंहदीसँ चित्रित हाथ... हाथमे लाल-पीयर लहठी... अनामिकामे गुम्फित अंग्रेजीमे लिखल घरवला नामक औंठी आ लाल-लाल आँखि... निन्नसँ मातल आँखि पर थमि-थमि क' झुलि अबैत एकटा लबड़ा लट... साँचो कहाँ सुतलियै राति... सुतहे ने देलनि ओ... आ आइ के बाद कोबरमे बैसल रुपा लजा गेलि-धत्...।

''गिरहथनी! की सब देलकनि बौआ के?''

किछु आबाजक तेजी... किछु ओकर अपन उत्सुकता... रुपा कान पथलकि... कि कहथिन माँ! की जबाब देथिन!!



''सोन सन बेटी देलक आर की...'' भौजी आयल छलखिन त' ओकर माय लोकके एतबे कहै... माँ की कहथिन? अइ सँ पहिने ओ कोबरा घरमे ननदिक कबकब बोली सुनने छलि। गीता कहने रहै, 'कनियाँ छथुन उँट... मुड़ी निहुराक' नवकनियाँ बैसतै कि जेना गरदनि मे टाउक घोपल होइ...'

''अंगोर देलकै बौआ के...'' मायक गोंहछल स्वर सब सुनलकै। चन्दन के भेलै जे लोक समान देखि हाय-हाय नहि करोअ तेँ से बात माय कहलकैए... पुछनहारिके लगलै जे चन्दनक माय लाथ करै छथि। लाथी तँ छथिए ओ... आ रुपाके लगलै जे बिजुलीक करेंट पयरक पयजेब के झनझनबैत सिउँथक टीका धरि अँगोर बना देलकै—लाल टुह-टुह।

रुपाके अनायास गराबकोर लागि गेलै। विवाहक बाद शायद आब ओ बाबूके... मायके ... भैयाके... भौजीके आ सोलह-सत्रह साल पहिलुका छुटल परिवेश के रुप-रतन नहि रहलि... बस अइ घरक लेल आब ओ एकटा ढेंग बनि गेल... आ चन्दन सब बात देखियो-सुनि क' अनठा दैत अछि। कंठ सँ बोलियो नै फुटैत छैक। कथी अटकल छै ओकरा कंठमे? रुपाके लगलै जे एकटा अदृश्य तार छैक जकर एक कात सँ ओ अपने पकड़ने छलि आ दोसर कात सँ घरक लोक खींच क' टानि रहल होइ... जँ-जँ टनैत छैक तार आर झन-झना उठैत छैक!

''ए, गिरहथनी! हम की सब ल' लेब... देखे न दू हमरो आर के... बौआक बियाह केलीह'... कनिया देखा दू... अहिबक फर दू...''

''हँ ले'' ताबत चन्दनके बहिन गीता चारिटा अहिबक फर ओकरा खोंइछा मे ध' देलकै, ''कनियाँ एखनि मुँह धोइ छै, दोसर दिन अबिहें...''

''ए, त' ई बँगौरी सन-सन की देलीह'...'' ओ अहिबक फरके उनटबैत टोइअबैत बजलि, ''बलू चारि प्राणी छी... आर ने दू... बौआ सँ बलू फेर हिनके बियाह होतैन...'' आ ओ खिखिया उठलि।

घड़ीक सुइ दिन, हप्ता, महिना नँघैत रहल। समय बालु जकाँ आगू सँ ससरैत रहलै। ओना त' रुपा जाहि दिन सासुर अयलि... ओही दिनसँ ओकर गुण बखान टोल-परोसक आगू करब ओकर सासु शुरु क' देने छलि। छोट-छोट बात के ल' क' टोल-परोस... अगुओइत-पछुओइत सब ठाम एकटा बदनामीक पहाड़ ठाढ़ क' देने छलैक रुपाक सासु। ओ कहैत रहलखिन, ''हम की बाजू?... नहि बजने त' बदनाम छी... आ आब हिनका की कहियौन?

आइ काल्हिके लोक एतबे कबुला-पाती करैए—एखुल्ले रही दुनू बेकती... अपने नाची अपने देखी... बहु कहतै हगू त' हगत... मुतू त' मूतत... बौओ सँ हरदम ढूसि लड़ैत रहै छै।'' रुपा सुनलक... फेर-फेर सुनलक... सुनैत रहलि आ सुनगैत रहलि। आ ओही सुनैत-सुनगैत कालमे आर आबाज ओ सुनैत अछि... किछु तनल तैयार रहैत छैक। अनायास रुपाके भौजीक बात मोन पड़ि गेलै। भौजीक नैहर सँ विदागरी वास्ते आयल रहैक त' ओ अपने कहने रहथिन, ''हमरा त' नैहर सँ बेसी रमनगर... बेसी खुशी अहीठाम बुझाइत अछि... फेर हम चल जेबै त' माँ कोना रहथिन...'' रुपा एहने बोन-झाँखुर मे ओझरायल छलि त' चन्दन आयल, ''माय कत' गेलै?''

''पोखरि गेल हेथिन...''

''आ गीता?''

''कि जने...''

''अच्छा त' अहाँ असगरे छी...'' चन्दन मुस्किया देलक, ''हम अहाँ लग बैसू?''

''उँहु...'' आ रुपा ओकर हाथ पकड़ि क' अपना लग बैसा लेलकै, ''हम कतेक बेर अहाँके पहिने कहने छी जे अहाँ किछु नहि बजबै त' कोना हेतै... आ बजितो छी त' बुझाइत अछि कोनो बाँसक फोंफी सँ आबाज बहराइत हो... देखु!'' ओ अपन हाथ आगू केलक, ''कहिया सँ एकटा चूड़ीक लड़ हाथ मे अछि... ओइ दिन माँ के कहलियैन त' कहलैन जे अखन पाइ नै छै आ दोसरे दिन गीताके रिबन... अलता... चोटी... की कहाँ सब किन देलखिन...''

''बताहि छी अहाँ... एतेक छोट-छोट बातपर ध्यान देब त' काज चलत? घरक लोक केहन छैक से सब हम अहाँके पहिने कहि देने छलौं... तैयो वएह बात...''

''नै ए! अहाँ लेखे छोट-छिन बात हएत... अहिना मे मोन टुटि जाइत छैक कि... अहाँ माय लए जेहने गीता तेहने हम... से कहाँ बुझलनि ओ...''

''अरे सब ठीक भ' जेतै... अहाँ अपन व्यवहार साफ राखू।''

''अहाँ त' बेर-बेर हमरे कहब कि ने... घर मे सबके बुझाइ छै जे पानिमे सँ छानि क' अनने छी हिनका...''

''हे रानी, हमर एकटा बात... अहाँ धरि जबाब नहि देबै ने त' अनर्थ भ' जेतै...''



''अहाँ हमरे किएक चुप्प करबैत रहै छी... माय के कहल त' पार नहि लगैत अछि... एक बेर कहिऔन माँ के बुझा क' सब बात...''

''अच्छा आब' दिऔ कोनो मौका...''

आ से मौका एकाएक ओइ दिन आबि गेलै। ओइ दिन पछबारि टोलसँ बुलनिहारि सब आयल छलैक रुपाक सासु चटगुनी ओछा देलखिन, ''आउ! आउ!! बैसै जाउ...''

''पुतौहु कत' छथि काकी...'' बुलनिहारि मे सँ कोइ पुछलथिन।

''सूतल हेती... आइ-काल्हुक कनियाँ दिनमे नहि सुततै... जोरसँ नहि हँसतै... सबसँ नहि बजतै त' निमहतै? से हमरो पुतोहु एहिना करै छथि... ककरो सँ बाजै घड़ी धोका नहि... चलती त' धरती दलमलित करैत...'' आ तइपरसँ दही मे सही करैत गीता टीप देलकि, ''से पुतोहु देखहेमे गोर-नार छैन... लूरि-भास कथूक नहि छैक...''

''हँ से गीता कोनो झूठ नहि कहैए...'' आ रुपाक सासु तेल-सिन्नूर लेब' घर अयलीह, ''ए प्रेम सुन्नरि! बाहर होउ... हिनका सबके गोर लागि जइऔन...''

रुपा चन्दनके देहपर ओंगठल दाँतसँ नह खोंटि रहल छली, ''सुनलहुँ ने मायक बोली... पहिने त' हमर प्रशंसा भेलै... आ आब जा क' गोर लागू... हमरा नहि पार लागत एतेक खटराग।''

''ओह माय छैक... अहिना बजैत छै। कनी पैर छुअ'मे अहाँके की धोकरत? जाउ जल्दी छुने आउ पैर...''

''अहाँ कोन दिन हमर भेलहुँ...'' आ रुपा चन्दनक देह परसँ उठि एनामे मुँह देखलक। केश सब मुँह पर छिरिया गेल रहै से सम्हारलक आ आँचर माथ पर रखैत ओ बहराएलि।

रुपा बाहर भेलि तखन बुलनिहारि सब चल गेल छलैक। रुपाके देखिते ओकर सासु बमछि उठलखिन, ''अयँ ए! कनी बाहर आबि क' गोर लागै जैतियैन त' कि तरबा खिया जाइत?''

''तुरन्ते मे इहो बर सियाख कर' लगै छथि...''

''है, हमरा सियाख-तियाख नाम नहि लिय, से हम कहि दैत छी।''

''त' अनेरे कथी अनघोल केने रहै छथि... अबिते छलहुँ कि ने...''

''बेसी मुँह लागल जबाब हमरासँ नहि करु... ई घरेबला पर छजत...''

''घरबला पर सबके छजै छैक... हमरे की छजत?''

चन्दन घरसँ बाहर भेल। ओकरा देखियो क' ओ दुनू अपन मुँह नहि बरजि सकल। चन्दन चुप भेल सुनैत रहल...

''अयँ रौ तों घर मे सुटकल रहै आ तोहर बहु सँ हम गारि सुनू?... बाप रे!'' आ ओ दुनू हाथे अपन छाती पीट-पीट क' रुपाके सातो पुरखाके उकटि देलनि।

''हमरा बाप-दादा के गारि नहि पढ़थु, नहि त' बात आगू बढ़ि जेतैन...'' आ घर चल गेलि।

''कथी बात आगु बढ़त?... हमरा अहाँ अपना हाथ-मुट्ठीमे लेब से अखन नहि भ' सकत...''

''सबके तोँ कथी कहैत रहैत छही...''

''कथी कहैत छियैक... तोहर बहु हमरा सँ मुँह लागल जबाब करै छौ से तोँ आन्हर छें... बहुअक जोर सँ हँसब... धम-धम क' चलब... ने आँचरक ठेकान... ने बोली मे होश...तोरा नहि सुझै छौक?''

''जोरसँ हँसब स्वास्थ्यक लेल नीक होइत छैक... तोहर सभक जमाना आब नहि छैक... तोँ कथिले कूही होइत रहै छेँ?''

''तोँ कतबो बहुअक तरफदारी क' ले... लेकिन घरमे ई सब नहि छजै जेतौ... तोराबुते एकटा मौगी तक सम्हार मे नहि छौक... केहन पुरुख छे तोँ?''

मायक बोली आ भाव सब अखन दोसर रंग छलैक। चन्दन सेहो आब स्पष्ट क' देब उचित बुझलक, ''माय! रुपा दोसर घर सँ आयल छैक... गीते जकाँ किएक ने ओकरो संग व्यवहार होइत छैक?... ओ हमरा दोस्त-महिम सँ हँसै-बजै छैक त' तोरा सभक फोंका कथिले लहरैत छौक... हरदम सबके कहैत रहै छही जे फल्लाँ चीज ओहन... फल्लाँ चीज एहन... कनियाँ एहन... से जँ छलौक त' पहिने टी. वी... रेडियो... हाथी... हवाइ जहाज सब किछु गछा क' गना लै जैतेँ...''

''जे लेब-देब केलक से हम नहि बाजू?''

''बजबे' अपना घरमे कि चौराहा पर... हम त' अखन अपना कान सँ सुनलियौ... एते दिन हमरा विश्वास नहि होइत छल... आ आइ त' सब फरिछा गेल... पचास तरहक निर्रथक बात... सब लागल रहै जाइ छथिन ओकरा पर...''



''बहुचट्टा नहि तन'' ओ फेर अपने हाथे छाती पीट-पीटक' चिचियाय लागलि, ''बहुअक पछ लैत लाज नहि भेलौ रे डकुबा... खुब सुख देलेँ, तो हमरा जनमेलाक... आइ हम आन... बहु तोहर चान... तोरा बहुअक हाथ-मुट्ठीमे रहू... ओकर गारि-फज्जति सहु त' तोहर करेज जुरेतौ कि ने?''

''त' तोरा मोने ओकरा हम कतल क' दिऔ?''

''नहि बौआ कतल किए करबे... चानी पर राखै...''

''अच्छा...'' आ ओ घिचलक चार पर सँ एकटा चेरा आ हनहनाइते घर आबि क' रुपाक पीठ ओइ चेरासँ पिटना बना देलकै। चन्दन आइ आन्हर भ' गेल छल। चेरा-लात-मुक्का... ओ अन्हागांहीस रुपाके धुनि देलक।

''गेरुआ... चौकी पीट क' लोक के डरबैत छैक... लोक बुझौ जे फलनमा बहुके मारलकैए... अखना क' क' मारैत अछि... लेकिन डर ककरा हेतै अइठाम?''

चन्दन सुनलक त' ओकरा चकविदोर लागि गेलै। ओ आइधरि रुपाके चुचकारि क' पोल्हबैत रहल आ चाहियो क' रुपा आ मायमे कोनो तारतम्य नहि आनि सकल। चन्दन के लगलै जेना ओकर अस्तित्वक एक-एक खण्डी काटि-काटि क' सब अपना-अपना हाथ मुट्ठीमे दबौने निचोड़ि रहल होइ... स्पंज बना देने होइ। ओकरा मोन पड़ि गेलै हनीफ कसाइ जे छागरके खुट्टापर लटकौने छूरा सँ बुट्टी काटि-काटि तराजू पर जोखैत रहैए।

# परिवेश

खट... खट... खट... बच्चा भाइयक खड़ामक खट-खटी सँ इनारक जगति काँपि गेल। गामक बड़ एकबाली लोक छथि बच्चा भाई... कहबैका। ककरो गर्दनि छोपि क' ककरो ध'र मे जोड़ि देबाक कला मे पूर्ण समर्थ आ तकरा बच्चा भाइ अपन 'फर्ज' बुझै छलाह। अखन बच्चा भाइ के हाथ मे बेंत छलैन आ कान्ह पर अँगपोछा। इनार मे डोल खसयबा सँ पहिने ओ अनचोके ओइ दुनू गोटे के जाइत देखलखिन। ओकरा दुनू के देखिते हुनका देह मे सहस्त्र फोंकाक लहरि विक्ख जकाँ पसरि गेलनि। मोन त' भेलनि जे काँचे चिबा जाइ... आ काँचे चिबा जाइके हुनकर मनसुबा बहुत दिन सँ मोन मे अहुरिया काटि रहल छैन। जहिया मौका भेटलनि... कि ओ तेना क' दुनूक मुँह थकुचि देथिन से देखत गौंआ... आवेश मे ओ डोलके इनारक पानि मे बड़ी जोर सँ झमका देलनि आ हाथ-पैर धो क' घूर लग आबि गेलाह।

जी हजुरी आ चापलूसी मे तत्पर लोक जुमि गेल छल। बच्चा भाइ अपन प्रशंशा सुनि-सुनि क' जखन हँसैत छथि, तखुनका हँसी ककरो नीक त' नहि लगै छै मुदा 'डरे' ओहो सब छुछुन्नर जकाँ मुँह उठा क' बच्चा भाइके संग पूर' लगैए।

''लेकिन एकटा बात हौ...'' बच्चा भाइ कहै छथिन, ''की नाम छै कुलबोरना के?''... ''हौ सूर्यनारायणक बेटा के?...''

''मनोहर...''

''हँ... हँ... वएह... अहाँ सब सुरुए सँ देख रहल छी ओकर चालि बानि... हमरा त' ओ फुटली आँखि ने सोहाइत अछि...'' आ जे बात बच्चा भाइ के नापसीन से हुनकर कुकुर सब के कोना पसिन पड़तै... ?... ओइ मे



सँ एकटा बाजल, ''देखै त' छियैक जे भरि दिन ओइ जुल्फीबला संगे बहेड़ भेल रहै छै... के छै ओ जुल्फीबलाबच्चा भाई?''

''रे मरदे! कतबो वी. ए. पढ़ि लेत... फारसी पास क' लेत... मुदा अपन बौआ सभक परतर करतै... कहियो? केहन राम-लछुमन सन जोड़ी छैन बौआ सभक?''

बच्चा भाइ अपना बौआ सभक चर्चा सँ प्रसन्न त' भेलथि, मुदा खुशीके भीतरे मे नुकबैत कहलखिन- ''वएह त' जड़ि अछि... ओही जुल्फीबला बलें' त' मनोहरबा कुदै-ए खुट्टे जोड़ पर मे पर्रु चुकड़ै छै? नै त' हेमनि तक साँझक-साँझ उपास-फलहार होइत छलै।''

खड़ामक एँड़ सँ बच्चा भाइ घूर के कोरि देलखिन- ''हमरा की लेना-देना? मुदा टोल-पड़ोस मे सबके बेटी-पुतौह छै... आ सब अपन सहेजने सेहो अछि... लेकिन मनोहरबा जे सिनेमा चालू करौने अछि आ जुल्फीवला छै ओकर... किदन?... आइ जँ हम किछु बाजब त' तोंही सब कहै जेबह जे बच्चा भाइ ओकरा उजाड़ि देलखिन... ''

''बच्चा भाइ! अहूँ जँ चुप्प भ' जेबै त' गामे गुम्म भ' जेतै! लेकिन... खाली... देखै छी जे बिन बच्चा भाइके हुकुम सँ त' टोल के कहलक, गाम मे एकटा खरो ने खर-खराइए...''

''तोरो सबके बुझल छ'...'' बच्चा भाइ कहलखिन ''सबके बुझल छै जे बरहियाबाली के -मनोहरक घरैनिके धिया-पुता नै भ' रहल छलैक... होइत छलैक?... झार-फूक देवता-पितर... कबुला-पाती सब झूठ भ' गेल... तोरा सबके याद हेत'... सूर्यनारायणक आगू सँ जुल्फीवला के अइ गाम आ ओकरा घर मे अबरजात छैक... आ आब त' देखिते छहक... कोना बच्चा सब साँप जकाँ सह-सह करैत फिरैत छै?...अयँ...''

बच्चा भाइ के अपन पोखरिया-पाटन हबेली के आगू मे मनोहरक टुटली मड़ैया सब दिन सँ पिताम्बरी मे टाँका जकाँ बुझाइत रहलैन। हुनकर बस चलितैन त' कहिया ने ओ मड़ैया फुकि क' तापि नेने रहितथि। हुनका सुरुए सँ एकटा भितरिया दर्द कुही करैत रहलैन अछि जे मनोहरक परिवार हुनका अइठाम कहियो ऋण-पैंच लेब' किएक ने धरनियाँ देलक?... किएक ने जी हजूरी आ पेटकुनियाँ देलक? गाममे जखन सब हुनका सँ सब तरहक विचार लैत अछि, लैत आबि रहल अछि त' सूर्यनारायणे किएक पाँज सँ बाहर रहि

गेल... ? ई बात सब हुनका आओर खौंझाह बना देने छल... आ से छलैहो हुनकर स्वाभिमान के बरखिलाफ बात। आब त' सूर्यनारायण नहि रहलाह से खीज... दोसर मनोहर के सरकारी नौकरी भेट गेल छलैक तकर कछमछी। हुनकर पसारल जाल के कटैत मनोहर टकुआ-तान अछिए। मुदा बच्चा भाइ के विश्वास छन्हि जे ओहन सुदिन जरुर अतै जहिया मनोहरबा हुनका पैर त'र दबा जायत... रोब मे आबि जायत... एक दिन जरुर ओ अपना पैर त'र दाबि क' ओकरा किकिया देथिन। कतेक दिन छिटकत ओ? बच्चा भाइ के मोने छैन ओ दिन... जहिया ओ सुनलनि जे इएह जुल्फीबला मनोहर के नौकरी दिया देलकैए... ओइ दिन सँ हुनकर करेजक फोंका सब आर बेसी कनकना रहल छैन। मनोहर साधनहीन रहितो उजिया गेल... आ अपन बेटा सब महिंषमोर भ' गेल छलैन। जखन हुनकर जेठ बेटा साँची बला धोती पहिर महिंष पर चढैत अछि ओ तखन आर बेसी छिलमिला उठैत छथि।... जखन-जखन साँचीक खूँट चिबबैत... महिष के हेयो... हेयो कहैत मुस्काइत अपन राम-लछुमन के देखै छथि त' होइत छैन जे दिन-देखारे मनोहरबा के तोप सँ उड़ा दी... आ ओहि दिन ओ लगक पेना उठाक महिंषक थुथुन पर एक पेना लगोलनि आ संकल्प लेलनि... जे मनोहरवा के त' पाछू... पहिने अइ जुल्फीबला के सींघ तोड़ब... केहन बन-हुल्लुक जकाँ लगैए नहि? एक-एक हाथक झवड़ल केश... छीट बला कुर्ता... सलवार छै कि फुलपैंट से हुनका बुझ'मे नै अबैन... लाल-लाल आँखि... हरदम निशा मे बुत्त जकाँ डाकू सँ एको पाइ कम नै... बच्चा भाइ मोनक बन-झांखुरमे लट-पटा रहल छलाह।

चन्द्रकान्त इनार सँ आगु बढल त' कुकुर बड़ी जोर सँ भुकलै। बच्चा भाइ मूड़ी नमरोलनि- ''हे वएह जुल्फीबला हौ... देखैत रहियहक आब दू घंटा सँ पहिने अँगना सँ नहि बहरयतै।''

''सार के मुँह नेदेखु... सुआइत कुकुर चेहा गेल...''

''लेकिन एते-एते काल धरि की सब करैत रहै छैक आँगन मे?''

''ओह! बच्चा भाइ कोना क' अहाँ चित्त बुझा दै छियै?''

''हम त' कहैत छियै, मनोहरबा जे एना अबरपनी क' करा' रहल अछि से कि आर सब नपुंसक अछि टोल मे?''

''बच्चा भाइ! अहाँ खाली इशारा क' दिऔ... आ फेर देखियौ ने एके लाठी मे डँरबासा तोड़ि देबै सार के!...'' घूर त'र अहिना कार्यक्रम बनैत रहलै...



चन्द्रकान्त आ मनोहरक परिचय जनकपुर मे भेल छलै। जखन दुनू पढ़िते छल। परिचय बढ़िक' आत्मीयता मे बदलि गेलै... आ आत्मीयता प्रगाढ़ सँ प्रगाढ़तर होइत पकिया दोस्ती बनलै। ओही क्रममे मनोहर के ज्ञात भेलै जे चन्द्रकान्तक मात्रिक ओकरे गाममे छैक। मुदा चन्द्रकान्तके मात्रिक मे मात्र एकटा विधवा मामी छलखिन। चन्द्रकान्त के वएह मामी कहने छलखिन जे बच्चा भाइ आ मनोहरक परिवार मे शुरुए सँ अनबन रहै छैन।

चन्द्रकान्त के देखिते महिमा बिहुँसि देलकि। ओकर मन-मयूर नाचि उठलै आ ओ आबि क' चन्द्रकान्तके पैर छूबि लेलक। चन्द्रकान्त ओकर पीठ सोहरबैत रहल... सोहरबैत रहल जाधरि मनोहरक घरौतिन नहि आबि गेलखिन... तखने मनोहर के बजाबैले बच्चा भाइके आदमी आयल त' महिमा चन्द्रकान्तके हाथ पकड़ने छली...

जखन मनोहर के बच्चा भाइ के ओइठाम सँ आबए मे देरी भेलै त' चन्द्रकान्त हाथक राखी सरियबैत ओम्हरे विदा भेल। चन्द्रकान्त सड़के पर सँ सुनलक... मनोहर कहि रहल छलैक, ''बच्चा भाइ! जे किछु अबंच कथा कहबाक हो, हमरा कहु, मुदा हमरा संगी आ कुमारि बहिन पर कलंक थोपनाइ अहाँ सन कहबैका के शोभा नै द' रहल अछि...''

''कलंक नै लगाउ? दुध सँ धोअल छौ बहिन तोहर? अँय रौ खच्चर! बहिन जखन जुल्फीबला के हाथ पकड़ने हिड़ला झुलैत छौक... रासलीला करैत छौक त' ओ सिनेमा नीक लगै छौ... आ तकरा हम निर्दोष कहू? नहि?''

ताबत चन्द्रकान्त दरबज्जा पर जुमि गेल, ''हम द' रहल छी निर्दोषक प्रमाण...'' चन्द्रकान्तक मुँह सँ एतबे बहरयलै कि बच्चा भाइएक एकटा पोसुआ लपकि क' ओकर चुरकी पकड़ि लेलक, ''इएह सार किने बच्चा भाई?'' ताबत दोसर-तेसर सेहो लुधकि गेलै आ लात... मुक्का... खड़ाम सँ धुनि देलकै ओकरा... टोल परोसक बेटी-पुतौह सब अपना-अपना कोनटा-फरकी सँ तमाशा देख रहल छल। बच्चा भाइ मनोहरक गट्टा ध' लेलनि, ''मार सार के... नीक जाका मुँह थकुचि दे... आन गाम मे आबि क' आबारागर्दी करैए... लुच्चा नहि तन...''

चन्द्रकान्त हक्का-बक्का भेल छल। बच्चा भाइ आ मनोहरक परिवार के भूगोल-इतिहास सब ओकरा कंठस्थ छलै। किन्तु जखन ओ सब महिमाप्रतिये ओकरा लांछना लगौलनि त' ओकर दिमाग घिरनी जकाँ घुमि गेलै... राखि

टुटि क' छिरिया गेल छलै, ''महिमाप्रतिए एहन अशोभनीय बजैत अहाँ सभक जी नै काँपल?''

''... बजै छौ... लगा एक तबहाक फेरो।''

बच्चा भाइ खड़ाम हाथ मे लेलनि, ''बात चिबबै छ खचरहबे?'' खड़ाम हाथ मे लैत एक बेर सबके फेर जोश उठलै। ओ सब फेर ओहिना ओकरा धुम-धुमा देलकै... मनोहर के बुझयलै जे ई समाजक मुँह-पुरुष सब चन्द्रकान्तक प्राण लेबा पर उतारु अछि। ओ लपकि क' चन्द्रकान्तके पँजिया लेलक। मनोहरके पँजियबिते ओ बेसम्हार भ' गेल आ दुनू गोटे ओंघरा गेल। ओ सब तरा-तर बरिस रहल छलै-पूर्ववत्। चन्द्रकान्तक कपार सँ शोणित भुभुआ रहल छलै... बच्चा भाइ के खड़ाम टुटिगेल छलैन आ मरनाहरक हाथ ठमकि गेल छल। शोणितक पलार देखिते ओइठाम सँ एक-एक क' सब ससरि रहल छल। बच्चा भाइ दोसर खड़ाम पहिरके लाथे हवेली मे ढुकि गेल छलाह आ एकटा कुत्ता शोणितक पलार के चाटि रहल छल।

दुनू संगी पोखरिक घाट पर बैसल बड़ी काल सँ स्थिर आ शान्त जल मे चानी जकाँ चमकैत मुदा बौक आ कलंकित चन्द्रमाक छवि देखैत रहल। पानिए पर चन्द्रमा छहलि रहल छल... इएह पानि चन्द्रमाक रुप छलै... रस छलै... प्राण छलै। महिमा सेहो चन्द्रमे जकाँ बौक अछि... जन्मजात आ मनोहर एकटा कंकर उठा क' पानि मे फेकलक उभ-चुभ होइत चन्द्रमा सहस्त्रो बेर काँपि-काँपि उठल—खण्डी-खण्डी भ' गेल जेना मनोहर कंकर नै तरुआरि भँजने हो। चन्द्रकान्त मनोहरक क्रिया देख रहल छल, ''देखलही ओ कँपैत चन्द्रमा... महिमा सेहो अहिना काँपि गेल हएत मने... नहि?''

**( जनकपुरसँ प्रकाशित संकेत मे, जनवरी, 1991 )**



# छाहरि तर'क काँट

जे होइके छलैक से भ' गेलै। एकटा पूर्णविराम। आब की? दर्पण एक बेर दरकि जाइत छैक त' दरकले रहि जाइत छैक...मोन एक बेर फाटि जाइत छैक त' ओ खट्टे रहि जाइत छैक। एक-दू-तीन के कहलक 40-45 बरखक प्रेम एके झटका मे कचकुह माँटिक वर्तन जकाँ चूर भ' गेल। ठीक छैक। ओ रहि लेत...रहल भ' जेतै ओकरा त' हमहुँ पाथर बनि जायब...आ शशि बाबू सोर पारलनि, ''रे पिंकू...रे पिंकू'...पिंकुआ...'...''...''

''की' मुँहथरि लग थकमकाइत ठाढ़...डरे, पिंकू चुकरल।''

''की? एके घरमेचा मे हम...कका कहाँ छौ?''

''ताश-ताश खेलै छलखिन।''

''जो बजा लबही।''

''हमर पेनसिल...?''

''पहिने जो बजा ला।''

''नहि पहिने पेनसिल दिअ।''

''हम कहैत छियौ जो...'' शशि बाबु दरबज्जा दिस आंगूर देखबैत चिकरलैन, ''जो भाग'

छौंड़ा सुटकल। मुदा फेर ओ तनल, ''नहि पहिने...''

''पहिने के सार...'' शशि बाबू थापड़ उठौलनि, ''पहिने हमर बात करै...हम बाप छियौ।'' हुनका मुस्किया गेलनि।

''हम बेटा छी से?'' आ ओ आँखि मिड़ैत बाहर भ' गेल।

शशि बाबू बिछान पर पड़ि रहलाह। पड़ि रहलाह आ सोचैत रहलाह—मुदा ई सब भेलैक कोना? एक दिनुका परिणाम नहि भ' सकैत अछि ई? जरुरे दुनू प्राणीमोने-मोन अपन खिचड़ी फराके टभकाबैत रहल अछि।

शुनियोजित...नियमबद्ध...क्रमानुसार। सब किछु बिचारल।

बाहर पुबरिया बरण्डा पर हेमकान्तक घरबाली श्यामा आ दक्षिणबरिया बरण्डा पर शाशिकान्तक घरबाली सुमित्रा बैसल उकटा-पैंच क' रहल छलीह। एहन-एहन उकटा-पैंच आइ छौ महिना सँ भ' रहल अछि से सुमित्रा शशिबाबूकेँ कान मे देने गेल छलखिन मुदा शशिकान्त तकर विश्वास कहियो नहि केलखिन। परंच आइ ओ दुनू कान स्पष्ट सब सुनि रहल छलाह...

''आँय ए प्रीत! एहन-एहन कलंक जोड़ैत काल कनियो विचार नहि भेल अहाँके? सत्ते हम सब किछु नै कयलहुँ?'' सुमित्राक आँखि छगुन्ता सँ फाटले रहि जाइत छैन, '' एतेक आगि कथिले ढारै छी...सोझे...''

''हँ सोझ बात छैक...बड़ केलनि।'' श्यामा उपर ताकि क' बामा आँखि जतलनि, ''भगवान जनैत छथि सबटा। खाय मे दुख...पहिर मे झिकझिक...अपना घरवालाले'...अपना बच्चा ले' दुध-दही उठौना...आ हमर कमौआ नहि? बापरे...''

''अनेरे कनखी-मटकी नै मारु हमरा? हम की अहाँके खेलौनिया छी।'' श्यामाक झूठ आ आँखि जाँतब सँ सुमित्राक जी झरकि गेलनि, ''आइ घरवालाके सात सौ भेटैए...तकरे खौंत फुकने अछि...भगवान के की कहैत छियैन?''

कनखी-मटकी बला बात श्यामा केँ औंट देलकनि। ओ अपने मुक्का छाती मारलनि, ''ककरो नीक चीज ई देख' चाहलनि कहियो? अपना जेना आँखिए ने होइन। अनके आँखि गरैत छैन...छुछुनराही के। गहना-गुरिया त' सहजे...हमरा गामसँ जे ओतेक समान...ओहन-ओहन लोटा...डिजेनगर-डिजेनगर थारी...स्टीलक कटोरी...गिलास सब गारि रखलक करेजमें...आँखिए लागल अछि सबटा।''

टोल-परोस मे सबकेँ बुझल छलैक जे बात करैत काल श्यामाक बामा आँखि रहि-रहि जता जाइत छैन। श्यामाक ई बानि कुमारिए सँ छलैन। मुदा सुमित्राक आगू श्यामा आइ धरि कहियो भारि मुँह नीक जकाँ बजने नहि छलीह। आ तेँ सुमित्राकेँ ई बात बुझल नहि छलैन।

''हे-ए प्रीत...श्यामाक बात सँ सुमित्राकेँ लगलैन जे सर्द मे डूबि गेल होइ, '' हमरा घरवालाकेँ जुनि सरापू। बाजू जे एक रंगक साड़ी...एक रंगक ब्लाउज...एक रंगक खेनाइ कहिया ने भेल...आ सेहो त' पिंकू बाप अहीक घरवलाक हाथ मे रुपया दैत छलखिन। तखन त' 'भैया अहीं आनि



दियौ'...आज्ञाकारी बनैत छलाह...आब अहुँ सब खूब घी-मलीदा खाई...आ हमरो कमौआ के भगवान जिनगी देथुन।''

''हिनकर पयर जाँतू...हिनकर कहिनी मे रहू...तखन हम बहीन...मुँह झरका एहन बहीन के। पनिया-पनिया क' केहन बाजत। प्रीत...ए...प्रीत...हुँह...आ श्यामा मुँह चमकौलनि।''

''हम त' कहियो ने कहलौं पयर जाँतले' सुमित्रा कहलखिन, ''मोन मे एतेक घुरछी-फिरछी छल त' बेकारे जँतलहुँ किने...हिनके लोक प्रीत कहतैन...मार सतबढ़ना।''

सतबढ़ना के नाम सुनि क' श्यामा के आर किछु नै फुरलैन त' अपन चूडी भरल दुनू हाथ पाया पर बजारि लेलनि चूड़ी फुटि क' छिरिया गेलै। तखने हेमकान्त आँगन आयल। चूड़ी पर नजरि पड़िते ओकरा लेस देलकै।

''आब बुझलौं जे...'' सुमित्रा कहैत घर दिस विदा भेलीह, ''आइ धरि हम साँपे पोसलहुँ।''

शशिबाबू सब सुनि रहल छलाह। हुनका मगज मे किछु नहि आबि रहल छलैन...कि त' श्यामा बहिन बताहि भ' गेलीह अछि...ने त' ओ आब अपने पागल भ' जेताह। कोनो तरहे ओ अपना जनैत दू रंग दू भाव ककरो ले' नै केलखिन...पिंकू हुनक आत्मांश छल त' हेमकान्तो सहोदरे रहथिन-जकरा ओ कहियो अपने हाथे खुऔने छलाह...धरिया पहिरबैत छलाह। बच्चा मे कतेक बेर हेमुआ शशिबाबूक कपड़ा गन्दा केने छल होयत...माय कहै 'बच्चा आ फूल दूरे सँ देखै मे नीक लगै छै'...आ तखन शशिबाबू कहथिन-'बताहि,इ त' हमर बौआ छी...' सुमित्रा घरवाली छलखिन मुदा ओ श्यामाकेँ घरक स्वामिनी सँ कम कहियो नहि बुझलैन। कोनो बात मे श्यामा बहिनक विचार नहि सुनिक' हुनका सन्तोख नहि होइत छलैन। ककरा करितथिन ओ दू भाव? ककरा? मुदा ओ सब त' आब पिंकू तक के कोरा-काँख लेनाई छोड़ि देलक। तकर अर्थ? ठीक छैक! घाव सडैंत तइ सँ बढ़ियाँ बहि त' गेल। शशिबाबू भरि पाँज क' गेरुआ पजिया लेलनि...जेना वएहटा सहारा बाँचि गेल होइन। ककरा आँखि मे नोर रहै छैक,जकरा-जकरा ले' लोक आइधरि कानल अछि? सुमित्रा पाँजर लग आबि क' बैस गेल छलखिन।

''अहाँ कथिले' जबाब दैत छियैक? बाज' दिऔन हुनके?'' शशिबाबू कहलखिन।

''चुपू अहाँ...अहाँ...बेसी सधुवा लोक गोबर होइत अछि। आब त' जतेक जल्दी बाँट-बखरा भ' जाय ततेक नीक।''

घरक प्रत्येक बस्तु-जात आँगन मे ढनमना गेल। कखनो लोटा पर थारी खसैत छल...कतौ सूप पर चकला...कतौ नूआँ-बस्त्रक मोटा पर झप्पा। पेटीक टन-टन...खटर-पटर...झपाक-झपाक...अनेको तरहक आवाज सँ आँगन दलमलित भ' गेल। नौकर सब समान निकालि क' ढेरिया देने छल। टोल-परोसक लोक करमान लागल जाइत छल। श्यामा हेमकान्त सँ किछु कहि रहल छलीह। सुमित्रा ओसारा पर आबिक' बैसल छलीह।

''भौजी इम्हर आउ...'' हेमकान्त बाजल-'टोल-परोसक लोक अछिए। जकरा जे हो बाँटि-चुटि लिअ'...''

सुमित्राक भीतर किछु हुकड़ि रहल छल। मने ओइ धडीक स्नेह तोड़ मारने छल होयतैन। हुनकर मुँह कारी-झाँमर छल। श्यामाक मुँह पर सन्तोखक भाव दुतियाक चान जकाँ बिहुँसैत छल।

'भौजी'-शशिबाबू सोचलनि,हेमकान्त आब भैया कहब छोड़लक? कहाँ कहलक त'? 'भौजी इम्हर आउ!' कतेक वे-लसि स्वर छैक? विचार सब अबैत गेल आ भाफ जकाँ उड़ैत गेल। 'हेमकान्त जाहि मे खुश रहैथ' ई विचार अवितहिं ओ जी पाथर क' आगु बढ़लाह। हुनकर मुँह कागत सन उज्जर भेल छल। मुँह सँ एतबै बहरयलनि, ''बाउ! की ई सब जरुरिए छलैक?''

''हँ...''

''एना करु! हमरा किछु नहि चाही। कथिक बँटबारा क' रहल छी? स्नेहक बँटबारा कहियो भेलैकए?''

हेमकान्तक एकेटा जबाव छल। राइ-रत्ती आधा-आधा क' फाँटि लिअ। आ धीरे-धीरे सब किछु बँटा गेल। रहि गेल पिताजी बला अन्तिम एकटा उनी कोट। शशिबाबू कहलखिन जे ''एकरा नै फाँटू...कोना फाँटब? अहीं ल' क' जाउ कि हमरे दिअ'...''

''से नहि सब किछु आधा-आधा आ हेमकान्त कोटक दुनू कात दुनू हाथे पकड़लक। खुट...खुट...खुट...सियन कने उघरलै। शशिबाबूकेँ चीजक मोह छिलमिला देलकिन, संगहि ओ हाथ बढ़ोलनि, ''नहि...नहि...एकरा कथिले'...'' मुदा हेमकान्त हाथ पसारैत गेल। कोट फटैत गेलै। शशिबाबू दृढ़ता सँ कोट पकड़य चाहलनि। हेमकान्तकेँ आरो तामस लहरलै। एक हाथे कोट



पकड़नहि, दोसर हाथे थापड़ उसाहलक, लोक जाबत हाँ...हाँ...करै ताधरि हेमकान्तक थापड़ शशिबाबूक गाल पर पाँचो आँगूर निछरि देलक...सद्य: पाँचो आँगूर।

शशिबाबूक पैंतालिस बरखक भातृत्वक रीढ़ तरतरा उठलनि आँखिक आगू कएटा तरेगन छिरिया गेलैन। ओ अकबका गेलाह...सुमित्रा दौड़लीह आ पिंकू चिचिया उठल। श्यामाक मोन उमकि उठलनि आ हेमकान्त चिकरि उठल, ''लाउ कोट...कोट लाउ नहि त' खून भ' जायत...''

शशिबाबू बक् द' कोट छोड़ि देलखिन। एकाएक हुनका मोन पड़लनि ओ समय जखन माय जीबिते छलि आ हेमुक छाबा रुपन साहुक घूर मे झरकि गेल रहैक आ शशि मुर्गी जकाँ छटपटा उठल छल, ''माय बौआ के की भ' गेलै?'' आ शशि तीन-चारि दिन भरि नै मोन सँ खेलक ने बाजल...ने कोइ भरि मुँह हँसैत देखलकै ओकरा त' माय गोहँछि क' कहने रहै, ''रे त' तोरे एकटा भाय छौ? पयर झरकलै ओकर आ टीस तोरे मारैत छौ?'' आइ ओइ टीस आ ई थापड़क लहरि मे कोनो ताल-मेल जरुर छै...हुनका आँखि मे नोर छल-छला अयलैन। अनायास हुनक नजरि चहरदीवारी कात रोपल खीरा गाछक लत्ती पर जाइत छैन। दूटा खीरा बाँसक सहारा पर बढ़ैत-बढ़ैत छीप धरि पहुँचि गेल छल। एके बिया...एके माटि...एके बाँसक सहारा। लत्ती फुनगी पर जा क' मिल ने त' गेल छैक? मुदा नजरि उपर नहि उठा सकलाह। टहटहौआ रौद नजरि मे सुआ बनि क' गरि रहल छल। गाछ रहितहुँ छाहरि नहि छल...छाहरि रहितहुँ...हँ छाहरि रहितहुँ काँट...नहि...नहि मिल सकैत अछि फुनगी पर ओ लत्ती...कहियो नहि...कहियो नहि। हुनका आँखि मे नोर ढबढबा अयलनि आ ओ पाछू घुमि क' रुमाल सँ आँखि पोछि लैत छथि।

# संधि

ई बोर्डर एरिया छै। जतबे गहमागहमी ओतबे अशान्त प्रत्येक पल जीवन आ मृत्यु के चकाचौंध सँ अलोकित आ प्रताड़ित। बावन ठामक लोक...बावन तरहक बात-बिचार। सभ्य आ असभ्य दुनू प्रकारक वातावरण। पटोर आ मारकिनक अद्भुत समावेश। एक दिस दारु, माउस, सुकठी... कोकाकोला, फेन्टा आ काकटेलक चुस्की मे डूबल भूखण्ड... दोसर दिस गोबर, गंगाजल आ तुलसीक सुगंध सँ सुवासित अंगना-घर। अही वातावरणमे सब तरहक लोक अपन-अपन घुरछी पिलौअलि खेल रहल अछि। बाप-दादा के डीह...नाम प्रतिष्ठा के जोगबैत-बचबैत रोजी-रोटी वास्ते फिफिआइत लोकक हुजुम सँ भरल अछि हमर टोल आ गाम। असभ्य बापक अनसोंहात गारि सँ आतंकित बेटाक निसास हवा के आर बेसी दमघोटू बनबैत। भोर-साँझक कंठ दबवैत...दोसर कात सभ्य पैजामा मे बन्हायल सभ्य लोक अपन वाजिब टेंशन मे औनाइत-टौआइत। जीबैत मुदा छटपटाइत...

आ आइ तँ आर बेसी उमस पसरि गेलै-ए। कोना लोक खेपत? हम कुर्सी पर बैसल एहने अनेको अंट-संट बात दिमाग मे रखने सोचि रहल छी। की हेतै? किछु हेतै कि नहि?...आ कहिया हेतै? मनुक्ख सँ मनुक्ख कहिया मिलत? एहन कोनो 'मेल्टिंग-प्वाईंट' छै? एना अपने खोह मे आदमी टुअर भेल केतक दिन धरि खेपत? बाहर निकलल कि टकड़ाहटि...यौगिक सम्मिश्रण बनबैत-बनबैत रहि जाइए लोक...आइ दुनू बेकती, दुनू मित्र, दू टा देश—दू टा लोक मे कथीक अरारि छै? दुनूक बीच 'कोन चीज' अड़कल छै? किएक ने ओ दुनू 'एकठाम'... एकटा खास बात पर एकाकार भ' रहल छै?...फेर हम सोचै छी? किएक ने ओ दुनू लड़ैए? त' लड़ौ। हमरा तइसँ की? ओकर सभक ई पूरान खेढ़ा अछि। ई रासलीला कोनो अझुके होइ से नै। ई सब देखैत-सुनैत हमरा बुझाइए जे आब हम बुढ़ भेल जा रहल होइ। खीझ, पीड़ा, दर्द आ अपनत्व-हीनताक बोध सँ अचेत...अशक्त।



आइ अफिस नै गेल छलौं। आ अफिस जाइए क' की करब? फैक्ट्री, कार्यालय, दोकान-संस्थान, बजार सब हुकुर-हुकुर क' रहल अछि। कनियो-ककरो मे दम नै बुझाइ छै ... श्री-सुरखी उसठ्ठ-उदास कार्यालय, बजार मे लगैए हम...हमर स्टाफ...हमर लोक जेना बिजुली गुम भेलाक बाद बीच 'लिफ्ट' मे फँसि गेल होइ...एहने गुनधुन मे औनाइत-बौआइत रही त' मोहित दूध ल' क' जुमल। मोहित-श्रमक जीवन्त मूर्ति-दुब्बर पातर-छरहर लोक। पहिरत ओ फुल-पैंट...मुदा पोन पर चारि-पाँचटा चिप्पी साटल...कोनो बात ठाँइ-पठाँइ कहबाक लेल सदैव तत्पर...एकटा आँखि खतम...मुदा छौंड़ी-मौगीक गप्प-सप्प मे अत्यधिक रुचि। लेकिन आइ मुँह गोंहछल छलै।

''की हौ मोहित? की हाल-चाल?...''

'मुँह मारु हाल-चाल के'...दूधक लोटा रखैत ओ पोन भरे असोराक कँगनी पर बैस गेल, ''दूध अजबारु...हम भागब।''

''भागब?...कत?... आइ ड्यूटी पर नै गेलहक...'' हम पुछलियै।

''औ बाबू! आब ड्यूटी मे कोनो लसि है? ...फेर दू टा माल-जाल...ई माल-जाल... ई माल-जाल त' एकलेखे हमरा गरा के घेघे भ' गेल बुझू। तइ पर सँ ई मौगी हमरा तिगरी-तान नचबै ले' तैयार अछिए।''

हम बुझि गेलौं जे आइ फेर एकरा दुनू बेकती मे अठ्ठाबज्जर खसलैए। से जँ नहि रहितै तँ ई रसिया आदमी एना लोहछल-उखटल कबीर दासके बोली नै बाजैत। हम ओकरा आरो कोरियबैत पुछलियै, ''आइ की बात छै हौ... ?''...

की बात रहतै...वैह गाओल गीत...आइ बीस-बाइस दिन से ई मौगी अठ्ठाबज्जर खसौने हइ। हम डयूटी सँ आयब...भनसा-भात करब...की माल-जाल ले सानी-पानी जोगार करब...बारह सँ दू...दू घंटा मे की सब करु?...मौगी ने भनसा-भात करै है ने माल-जाल ले घासे लबै है...

''ओ की कहै छ?...'' हम पुछलियै।

''ओकर कहबी है जे हमहुँ तँ कमाइते छी...अही घर-दुआरी ले हमहुँ देह धुनैत रहैत छी...हमरा किए कोइ धाक देखाओत...आ कथीके केकरो ठेसी मे रहबै...आब त बेटा समरथ भेल...हमरा कोन बातक तकलीफ हैत?'' मुदा हमहुँ आब एकटा 'निरलय' पर पहुँच गेल छी।

'निरलय' पर पहुँच गेल ई। कोन निर्णय पर? से सुनबाक उत्सकता हमरा भेल मुदा ई दुनू प्राणी के 'निरलय' छलै। पुछियौ कि नै? हम घर सँ पानक डाली अनलौं।

ओ खूब नीक जकाँ 'पी-कप' पकड़ि नेने छल... ''अहाँ सँ कोनो बात

हमर छिपल है...ई मौगी अपन बेटा पर भरोस रखने हइ...आ ई सार...एहन है जे हप्ता मे दू गो सिनेमा चाहबे करी...सब दिन सब निक-नुकुत खेनाइ...कनियो माछ-माउस चाहबे करी...से पुत हिनका कमाक' खुओतैन? परोर आ करैला नै घोटाइए सार के। तैँ ओहि दिन हम कहि देने रहियै जे रहै तोहुँ कमौआ पूत लक' कात...हमहुँ काते रहब... माल-जाल के बेच दै छियै...अपन ड्यूटी करब आ होटल जिन्दाबाद! लेकिन आब हम अइ मौगी के मिनती-खुशामद किन्नहुँ नै करबै।''

ओकर बात हम बुझि गेलियै... लेकिन ई नहि बुझलियै जे एहन सरगर लोक बिना बहु के कोना रहत? आ ओकरो चिन्ता तकर नै छै। किए होइते तकर चिन्ता? अइ परोपट्टा मे एक सय वाला 'माल' सहजे उपलब्ध भ' जाइछ...से बात कहियो इएह मोहित हमरा कहने छल।

दूधक लोटा हथियबैत ओ बाजल, ''देखू ने इम्हर घर मे ई ओरहा-डाही...ओम्हर बाहर मे से केहन-केहन बात सब देखै-सुनै छियै...''

''की देखै-सुनै छहक?'' हम पुछलियै।

''अहाँ के जेना कुछ बुझले न है?...अयँ! अहाँ नहि देखै छियै जे जहिया सँ नेपाल-भारत समझौता मे गड़बड़ भेलैए बलू तहिये सँ डीजल-पेट्रोल आ मटिया तेल आ अइ परोपट्टा के लोक सब मिझरा गेल हइ...बताह भ' गेल हइ लोक सब मटिया तेलक पाछु''...एकरे बिलेक मे लोक देखै छी जे कमा क' बुच्च भेल जाइए। आब त लोक सब इहो कहै है जे बलू सियाराम आ जेहूर अही मे मारल गेल।

अचानक हमरा आगू सियारामक चेहरा नाचि उठल...जहूर ठाढ़ भ' गेल ओ दुनू गोटे अपने गामक लोक हाथे अही डीजल-मटियातेलक ब्लैक-मारकेट मे मारल गेल छल। हम निसास छोड़लौं...पाइ वास्ते मनुक्ख एतेक नीचा भ' नीच कर्म करत से ठोस बात हमरा ठोंठ सँ नीचा नै उतरि रहल अछि।

आकाश साफ आ निस्तब्ध मुदा गुमकी लधने रहै। लागल जेना अन्हर-बिहाड़ि अयबाक पूर्व नेयार-भास मे होइ... से हमरा लोकनि कइए की सकैत छलौं...मात्र अपना मोन के परबोधनाइ छल जे किछु नै हेतै... किछु भइयो सकैत छलै।

लेकिन एकटा बात छै रामनारायण बाबू! ओ लगीच सहटि आयल। जेना हवा मे एकर बात कतौ उड़ि ने जाइ...ओ धीरे सँ बाजल, ''जहिया सँ ई घोल-फचक्का शुरु भेल ग' बलू तइ के किछु दिनक बादे कत्ते लोक एम्हर सँ ओम्हर भ' गेल...कि सत्तम बात कही त' पराहि लागि गेल लोकक... आ सुनै त' इहो छियै जे तेना ने ई घेराबंदी करतै जे उम्हरका लोक अपने धीरे-धीरे सहटि जेतै...ने भीसा के झंझटि ने ...पासपोटक खच-खच...''

''हँ सुनै त हमहुँ छियै जे बड़का-बड़का पाइ बला सब ओइ पार के बैंक मे धकाधक रुपैया-जेवर जमा करा रहल छै।''

''लेकिन गरीब-गुरबा कत' जेतै यौ... ?''

''कत' जेतै? हौ बुरि कतौ नै जेतै। झगड़ा कहक की रगड़ा से त' दुनू देश मे छै...सरकार-सरकार मे छै...सिद्धान्त आ प्रतिष्ठा मे छै...हमरा तोरा की' कतौ जेब' देह धुनहे पड़त' आ किनै?''

ओकर मन जेना आश्वस्त नै भेलै। ओ हमरा कनडेरिये तकैत रहल—

''बेश, देखियौ आब काल्हि कि होइछै?''

''की हेतै काल्हि?''

''काल्हि मटिया तेलक वितरण भ' रहल छै...पाँच लिटर प्रत्येक परिवारके देतै। सुनै छियै जे कोन-दन देश सँ मारते-रास तेल एलै-ए...'' आ ओ उत्तरक उपेक्षा करैत लोटा ल' क' अँगना सँ बहरा गेल।

आ सही मे दोसर दिन बड़ा हो-हल्ला भेलै। तेल वितरण मे लागल सी.डी.ओ. अंचलाधीश आ ऑयल-निगम तीनूक प्रतिनिधि छल। सहायता वास्ते पुलिस-कर्मचारी सेहो रहै। तथापि गड़बड़ भेलै। कते के तेल नै भेटलै...ककरो कार्ड सही नै रहै...कोइ लाइन मे नै छलै...कोनो परिवार मे चारि-चारिटा कार्ड 'इस्यू' रहै...अही सब ल' क' वार्ड अध्यक्ष आ एकटा प्रोफेसर मे जबरदस्त कहा-सुनी... गाली-गलौज आ नौवत मारि-पीट धरि पहुँचि गेलै। बात तखन टुंगो लागल जखन सी.डी.ओ. आ एस.पी. साहेब आबि क' थोर-थाम्ह करोलनि।

ई सब देख-क' मोन अकछा गेल छल। हम 'मुड' फ्रेश करबाक लालसा सँ 'देउराली' मे पैसैत रही तखने दक्षिण सँ झोड़ा मे माँछ टँगने मोहित के देखलियै। हमर पैर कनी ठमकल। ओम्हर तकलौं त' ओकरा ठोर पर एकटा छोट मुदा स्निग्ध हँसी छिटकल बुझायल।

''कि हौ मोहित, आइ माँछ बनतै?''

''हँ...'' ओ कनी सकुचायल मुदा एकटा स्वच्छ आ हल्लुक हँसी छिटलक, ''एकटा बात बुझलियै रामनारायण बाबू! नेपाल आ भारतक संधि टुटना आइ उनतीसम दिन भ' गेलै...धुर! कुच्छो होउ एकरा आउर के...हमरा आउर के त' सत्ताइस दिन के बाद रातिए 'संधि' के 'रेनु' भ' गेलै बलु...'' आ एकटा ललितगर मुस्की छोड़ैत ओ बढ़ि गेल।

# स्वप्न-भंग

साओन मासमे पूर्णिमाक चन्द्रमा देख क' मोनमे केहन कल्पना जगैए'— इएह छलैक ओइ दिनक गोष्ठीमे परिचर्चाक विषय। आ श्रीकान्त अझुका गोष्ठीमे अपन कविता सुना रहल छथि—

*''प्रिय प्राण हमर कोमल-कोमल*
*रहू हमरे कमल-नयन भरि-ए*
*छी पूर्णिमा के चान अहाँ*
*छिटकल अछि किरण भुवन भरि-ए*
*मद-मातल महिना साओन सन*
*सनकाह मनुक्ख रहत अहिना*
*नहि नुका सकब मनांगन मे*
*चवक छथि आइ अहींक पहुना*
*नहि निन्न हेतै चुचुकारि दिऔ*
*भरि अंक घुमू उपवन भरि ए*
*छी पूर्णिमा के...''*

मखमली भाव... कामिनी फूलक माधुर्य... धानक लाबा जकाँ निखरल ओज... एकाएक एकटा खैंक सन करेज मे गरैत गेलै... आ पदमा थपड़ी बजा देलखिन। आइ श्रीकान्तक साहित्यकार आ ओइ प्रतिभा सँ ओ प्रभावित भ' गेल छलीह...

चानी सन चमकैत मुख-मण्डल... जेना आरतीक थार... आ आरतीक थार मे सजाओल अँचारक फारा सनक नयन... नयनक कोशामे काजर सँ घीचल कारी रेखा... जेना अनमन आरतीक थार मे घी सँ भरल दूटा दीप जरि रहल हो... सुगबा नाक... पान सन पातर आ तिलकोरक फर सन लाल टुह-टुह ठोर... ठोर पर नचैत गुलाबी मुस्की... आ ठोर सँ हटि क' बामा कात गालपर एकटा करिया तिल... वस वएह करिया तिल श्रीकान्तके बौरा देने छलनि।

जाहि मोहल्ला मे पद्माक घर अछि ठीक ओइ घर सँ किछु हटि क' श्रीकान्त एकटा रुम ल' क' रहैत छलाह आ श्रीकान्तक माइ डियर (सुरेश) होस्टल मे। तीनू गोटा स्नातकोत्तर मे अलग-अलग विषय राखि एके महा-विद्यालयमे अध्ययन-रत छलाह।

श्रीकान्तक मोन ओइ दिन गोष्ठीक पश्चाते सँ बिसबिसा रहल छनि। की भ' गेल? दू सालसँ ओ पद्माकेँ देखैत आबि रहल छथि... कहाँ कहियो 'इ सब' भेल छलैन? मुदा अझुका हालते वेहालति अछि... आइ ने पढ़ै मे मोन लगैत छैन... ने ओ उठि क' स्नान क' रहल छलाह... आ ने कतेक राति सँ बढ़िया जकाँ निन्ने भ' रहल छलनि... चारुकात औना अबैत अछि आ बिल नहि भेटैत छैक तखन जे दशा साँपक होइत अछि... बस वएह हाल हिनको छलनि।

टेबुल परक किताब सब ओज-गोज अछि। कोनो उनटा... कोनो पूब मुँहे... पेन आ एना नीचा मे धरासायी... एक पयरक जूता चौकी तर आ एक पयरक बाहर मे उनटल... घड़ी मे चाभी देने छथि कि नहि... से नहि कहि... टुथब्रश लालटेमक ओइकात... जिबिया आ पेस्ट जुत्ताबला डिब्बा मे रखलक? कैंची आ ब्लेड बिछान तर आ सेफ्टीरेजरक डिब्बा मे जुत्ताक पालिश, साबून केशमे राखल साबून के मूस दुनू कातसँ खखोरि क' खा नेने अछि... कोट झारै बला ब्रश नीचा मे फेकल आ जुत्ताक ब्रश किताब पर राखल... बड़ा लस्त-पस्त हाल छैक कोठरी के... आ श्रीकान्त चौकी पर चित्त भेल पड़ल छथि इएह अवस्था।''

# कोनो एक दिन

''के जाइ छै?''

''कपार जाइ छै...''

''खाली अनटोटले बात रहैए?''

''अहीं कोन फूल बरसा रहल छी?''

''बेश! चुप...''

''अहुँ चुप रहु...''

संध्या पसरि गेल छलै...ओ घर सँ तरकारीक पथिया झिकलैन...पथिया मे हाँसू सेहो छलै...आओ तरकारी काट' बैसली...हाथ संगे मुँह चालू भ' गेलिन...

''कोना झरका क' मारि देलकै से नहि जानि?''

''रहल हेतै मुँह-जोरगर।''

''हम त' ओकरा बच्चे सँ जनै छलियै...ओहन त' नहि रहै?''

''कहाँदन सासु-ससुर आ घरबाला पकड़ि क' झरकौने छलै...ममता त' फोन पर सएह कहैत रहै।''

''दुनू बच्चा आब भगवान भरोसे...''

''सासु-ससुर भागल छै आ घरबाला के पुलिस पकड़ि क' ल' गेलै...आब करैत रहथु इन्जीनीयरिंग...''

''अइ लकडाउन मे लोक कोना कतौ जायत?''

''...''

''कहिया खुलतै ई लकडाउन...आ ई बोडर से नहि जानि?''

''चाय बनाउ?''



''बड़ छौंक लागल अछि त' बनाउ...''

''अहाँ हरदम फजूले बात किए करैत छी?...''

छौंक बाला बात हुनका लेस देने रहैन।

''हँ त' कोन सुखे भेटल अहाँ सँ?''

''अएँ? कोन सुख नहि? आ तीनटा बेटा-पुतोहु...एकटा बेटी-जमाय ककरा छै? अहीं के ने? सुख त' लोकके आत्मामे होइत छै...कतौ बाहर नै भेटै छै।''

''पुतोहु सब त' बड़ सुरेबगर ताकि क' अनने छी...तेँ...''

''से नहि बाजू? सुख त' भेटल...मुदा कते भेटल से दोसर बात छै...''

''लेकिन एकटा बात हम कहू?...बड़की आ मझिली त' एक करमक मुदा तेसरकी? कोनो करमक नहि? सुगरक गुं ने...''

''से त' अहाँ ठीके कहैत छी...हरामजादी अहीं के कहलक...कोरा सँ पोताके हमरे उतारलक...आ ओइ दिन त' कहबे केलकै जे दादा-दादी खराब लोक छै...ओकरा लग नहि जो...एकदम...जँ हम देख लेलियौ त' टाँग तोड़ि देबौ...''

''त' ओकरा बापके हक कहियौ?''

''माये बात त' बिगाड़ने छै...दिनभरि फोन लगले रहै छै...''

''आब की? चारिम पहर आबि गेल। जाधरि सकै छी। नाव चलबे करतै जहिया नहि सकब...''

बात कटलनि ओ... ''ओही दिन ले समाजक कहबैका सब होइ छै ने? कहबै ओकरो...''

''अएँ, ए...ओ की कहैत छल?''

''की कहतै? अहाँ बुझि क' की करबै? सब बात बुझले चाही? नहि?''

''हमरा मोन मे खोद-बेध लागल अछि...जाबत कहबै नहि हम पछोर धेने रहब...''

''की बुझबै अहाँ?...मोचना के जुआन बेटी ककरो संगे भागि गेलैए...सब बात बुझले चाही...मौगी जकाँ नहि ...''

''हँ ए! आ ओइ राति जे हम अहाँ रति-कामदेव बनि गेलियै से?''

''कत' अच्छा-अच्छा...हमरा ओ दिन स्मरण अबिते आइयो अंग-अंग अवश भ' जाइए...केहन मारुक दिन रहै ओ...''

''आइयो त' मौसम कटाहे लगैए हमरा...''

''अहाँ के आर किछु फुराइए की नहि ... ओइ राति त' फुलवारी मे गुलाब खिलखिला रहल छलैक। जुही आ चमेली गम-गम करैत छल...वातावरण गर्मी सँ बेहाल छल...आ हम-अहाँ रभसैत-बिहुँसैत चन्द्रमा देखैत छलौं...पूर्णिमा छलै ओइ दिन...''

''नहि... किछु नहि बाजू...हमर मोन उनटा-पुनटा भ' रहल छै...''

**( 3 अक्टूबर, 2020 )**

•••